# नेहरू :
# सोवियत दृष्टि में

# नेहरू :

## सोवियत दृष्टि में

सम्पादक :

लियोनिद मित्रोखिन

एवं

निकोलाई फेदिन

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली • पटना

**मूल्य : रु० १२.००**



**प्रथम संस्करण : १९७५**

**प्रकाशक :** राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०
नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली ११०००६

**मुद्रक :** शान प्रिंटर्स, द्वारा
ग्रन्थ भारती, दिल्ली-११००३२

# अनुक्रम

नेहरू :
सोवियत दृष्टि में

दिल्ली १९६१ : जवाहरलाल नेहरू और लिओनिद ब्रेज़नेव
एक कृषि प्रदर्शनी देखते हुए
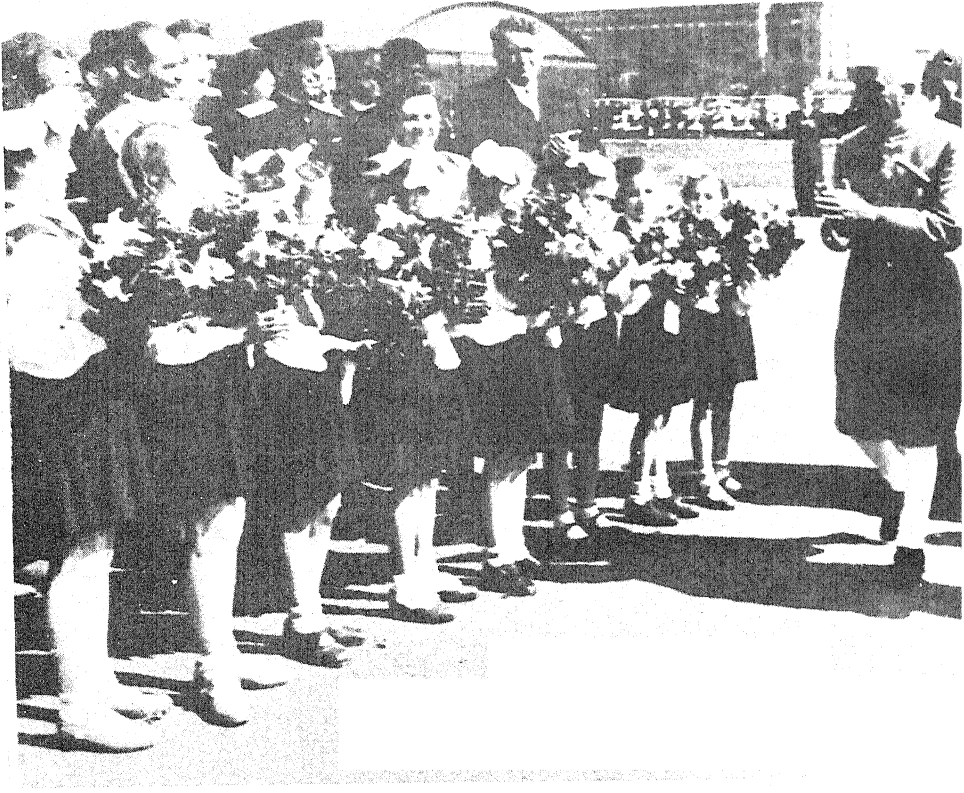
मास्को, जून १९५५ : बच्चे सम्मानित भारतीय अतिथि का फूलों और मुस्कान से स्वागत करते हुए

मास्को क्रेमलिन में दर्शनीय स्थान देखते हुए

जून १९५५ : जवाहरलाल नेहरू
और इंदिरा गांधी क्रेमलिन
के फेसेट्स् पैलेस में
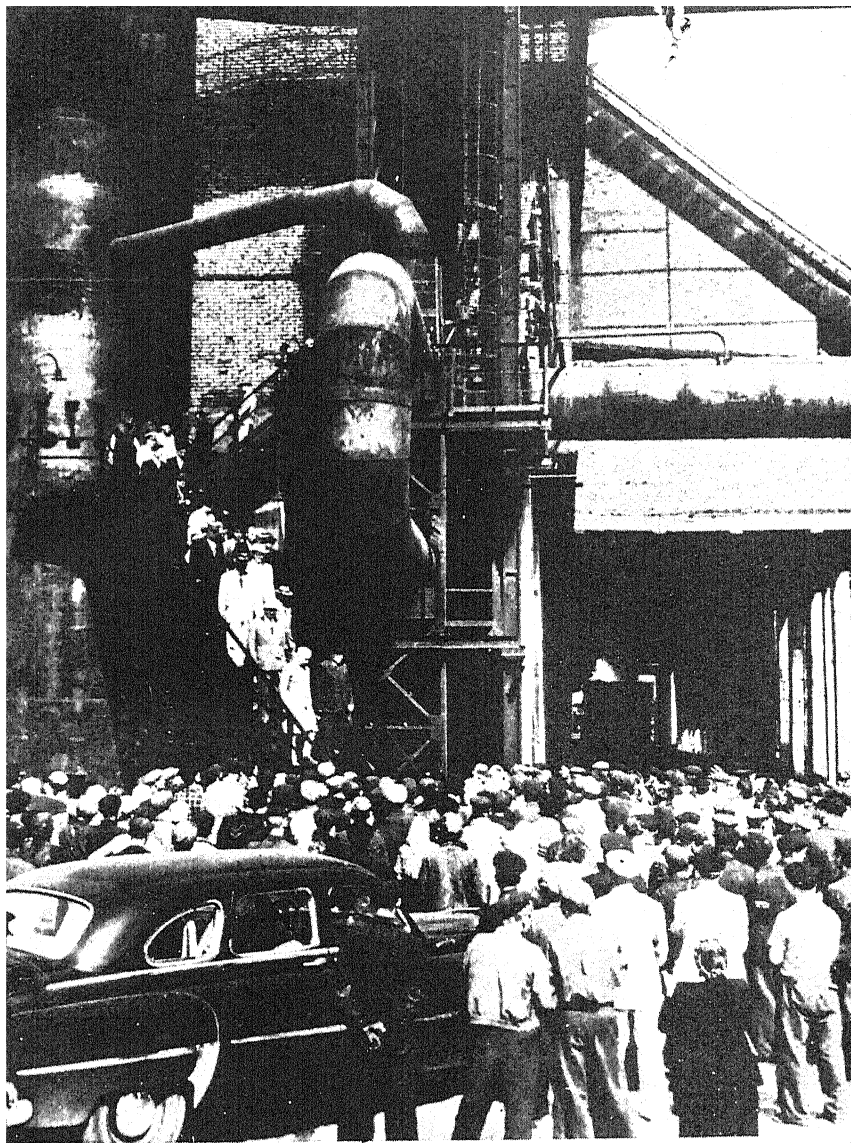
रुस्तावी, जॉर्जियन एस एस आर के एक इस्पात कारखाने में भारतीय मेहमान
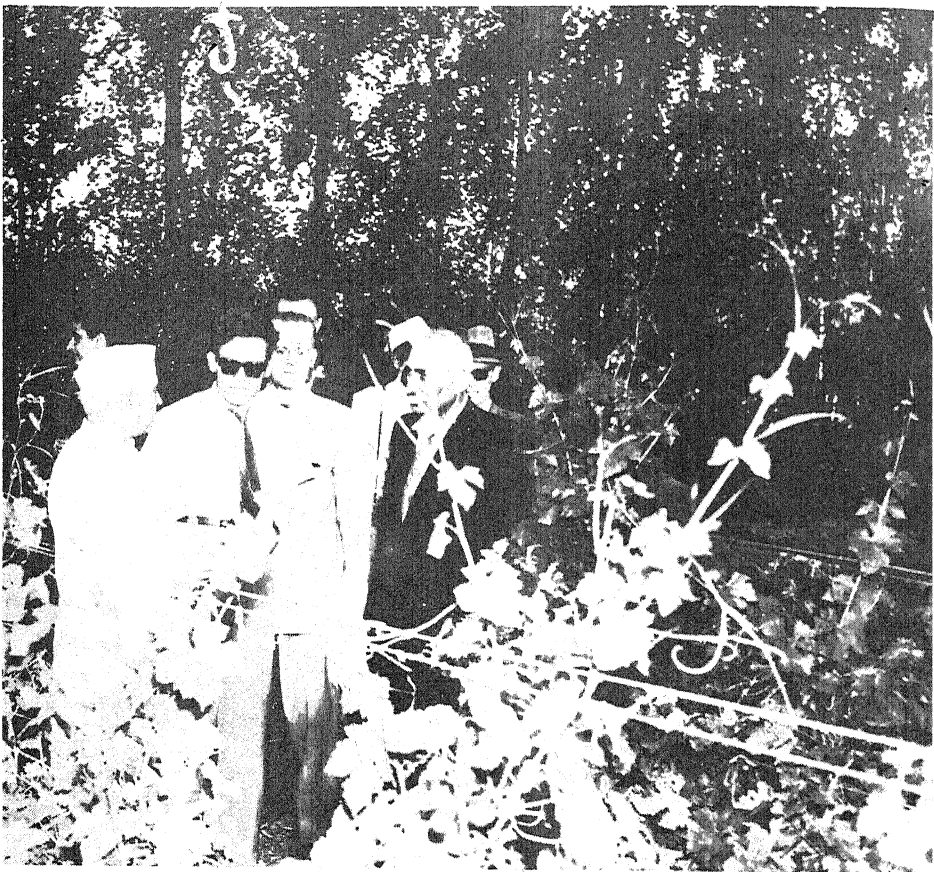
जॉर्जिया की राजधानी त्बिलिसि के एक अंगूर-बागीचे में
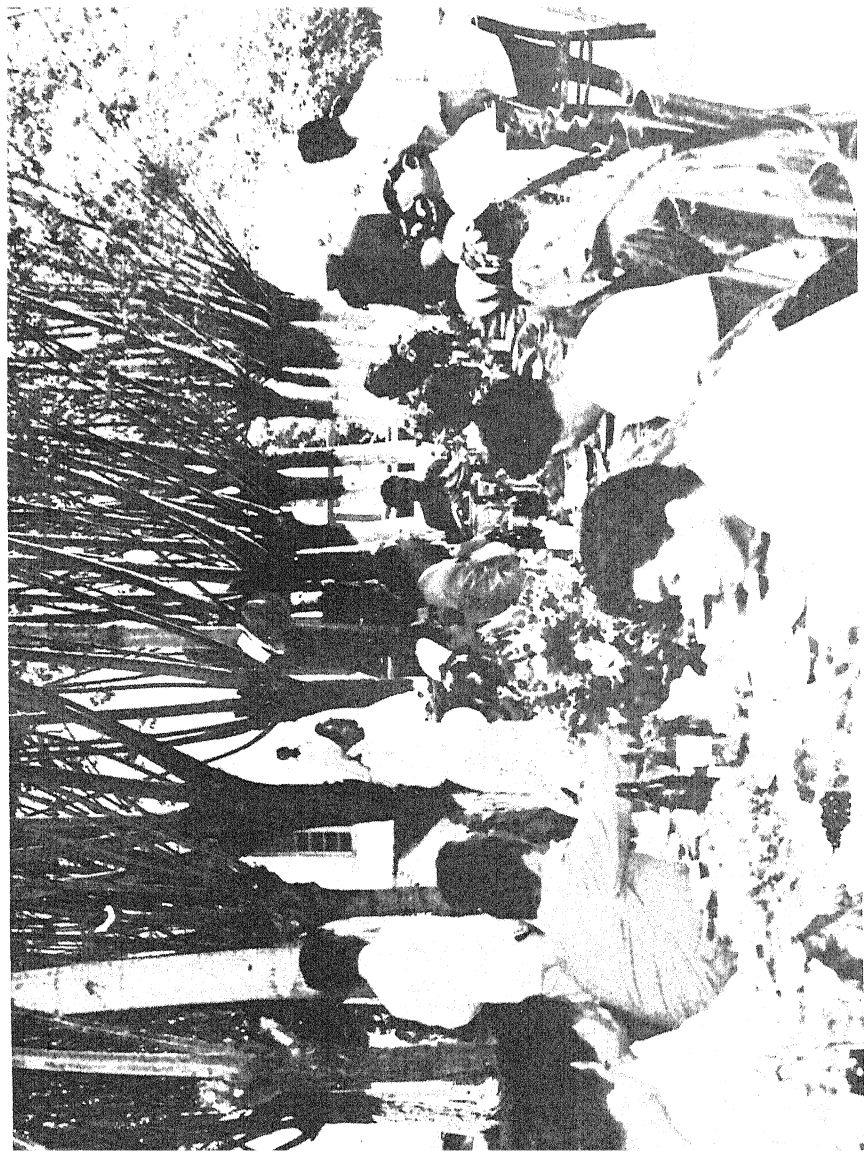
उज़्बेक कलेक्टिव फार्म में स्वागत

जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गाँधी पुराने समरकंद में, जो अपनी शिल्प कला के खजाने के कारण प्रसिद्ध है

साबोहत आज़िम्जातोवा, निदेशिका ओरियंटोलॉजी इंस्टीट्यूट ऑफ उज़्बेकिस्तान एकेडेमी ऑफ साइंस के साथ इस संस्था द्वारा प्रकाशित ग्रंथ देखते हुए

माग्नितोगोर्स्क स्टील प्लांट के मजदूरों से मिलते हुए

जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी : सोवियत राज्य के संस्थापक व्लादीमिर इल्यिच लेनिन की समाधि पर माल्यार्पण
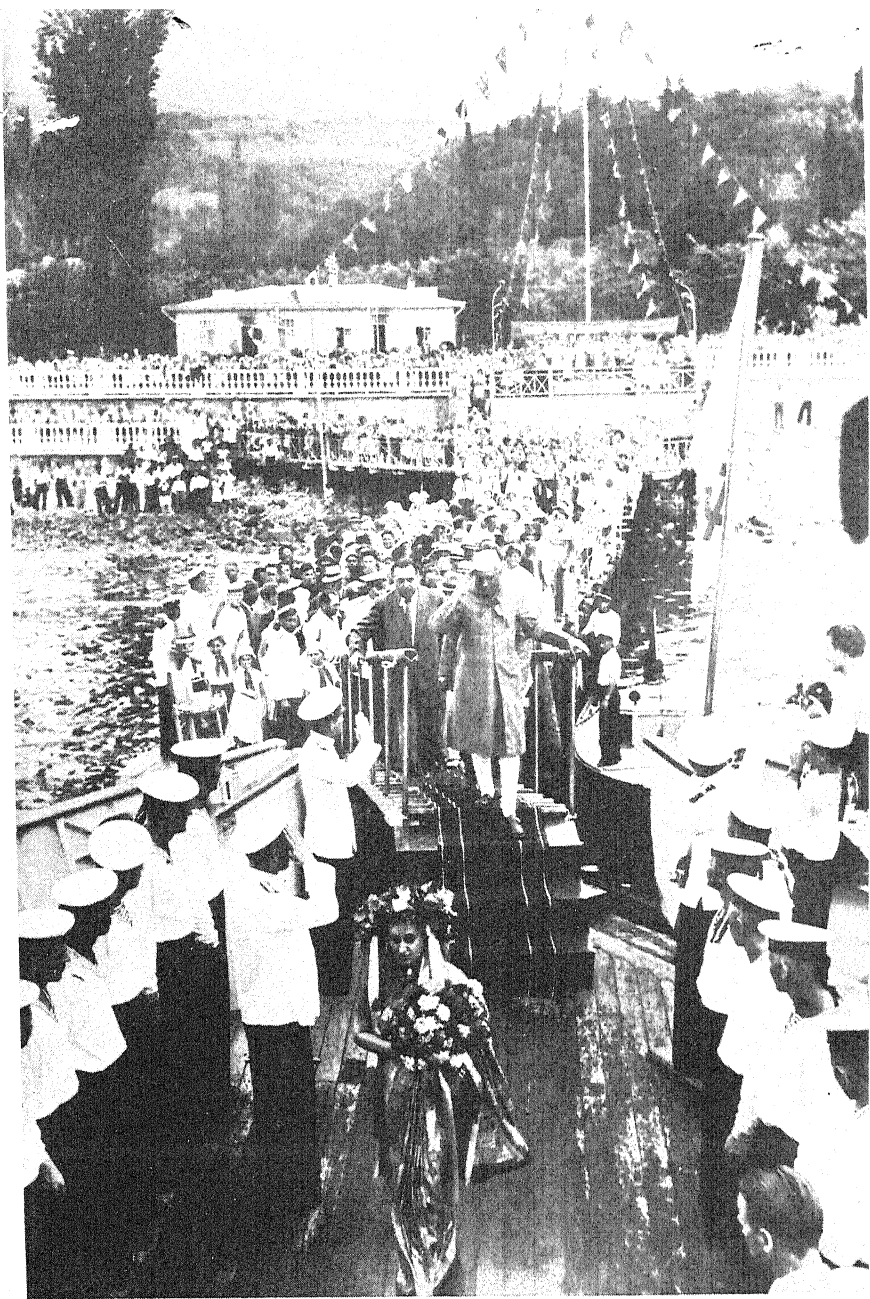
आर्तेक से विदाई

उज़्बेक किसानों से मुलाकात
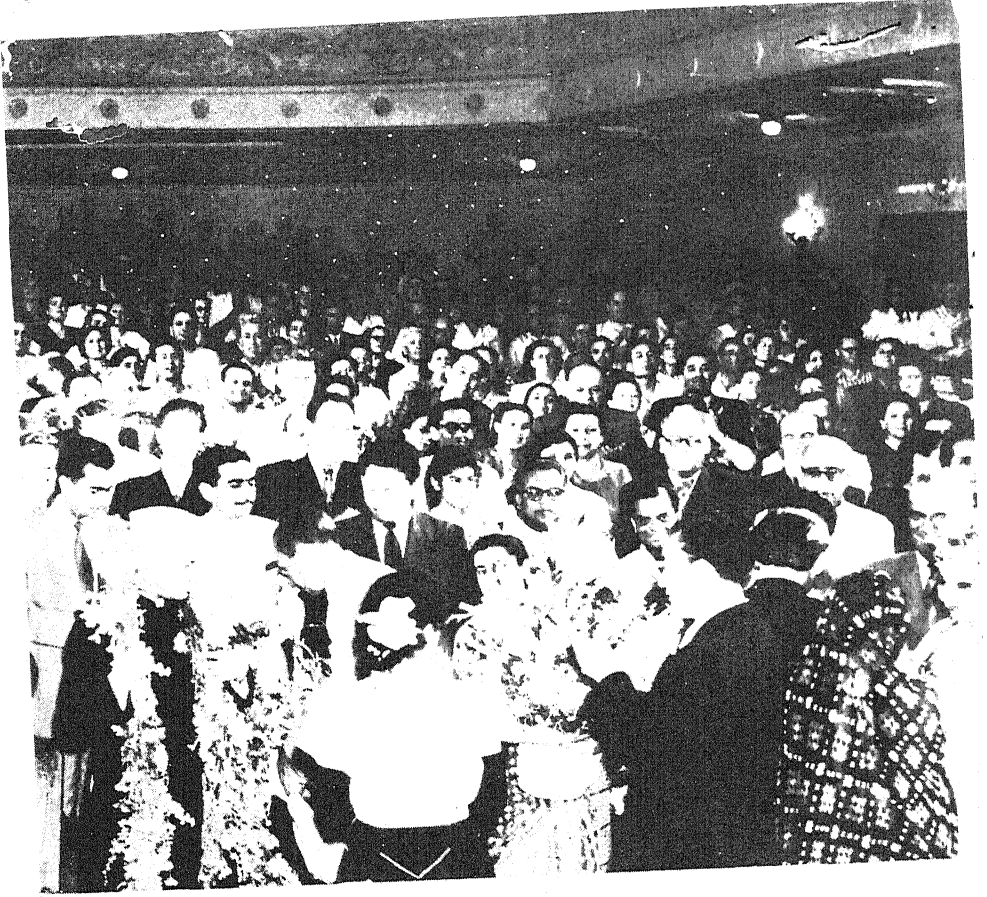
ताशकन्द ऑपेरा एण्ड बैले थियेटर में

सितम्बर १९६१ : जवाहरलाल नेहरू मास्को के सेंट्रल चिल्ड्रन थियेटर के कलाकारों के साथ रामायण के मंचन के बाद

मास्को में राष्ट्रीय आर्थिक उपलब्धि-प्रदर्शनी के पंडाल में
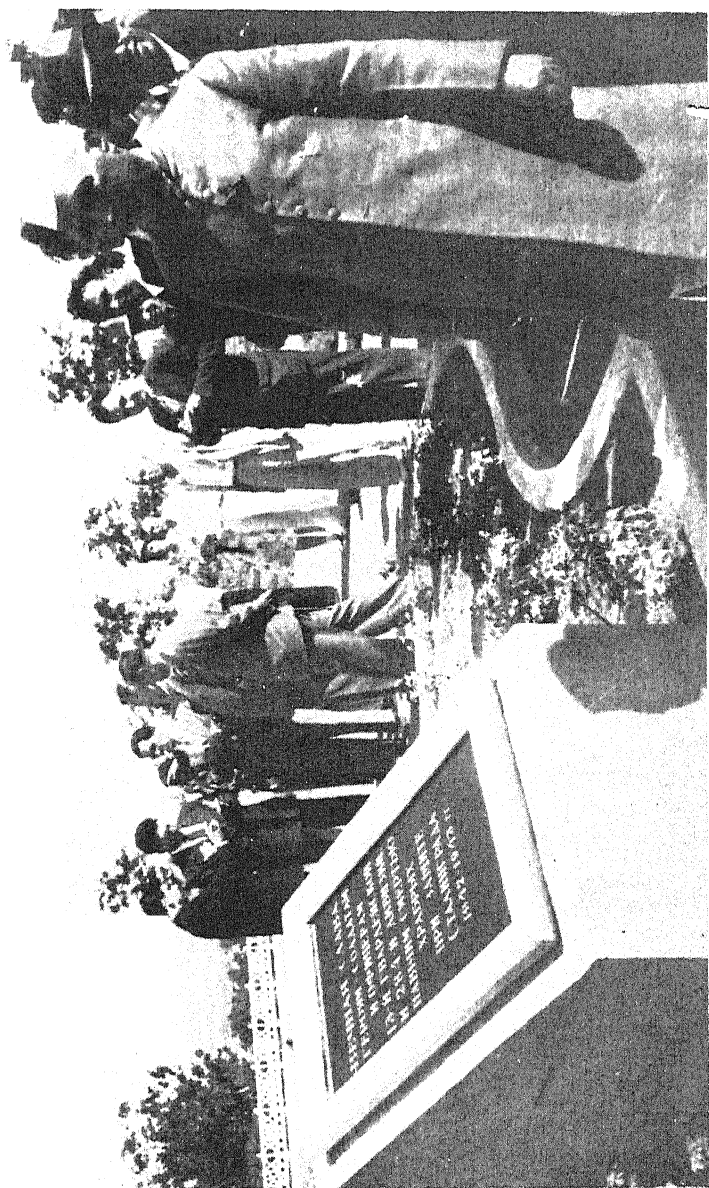
वोल्गोग्राद में मामायेव हिल पर उन रूसी सैनिकों के स्मारक पर
जो १९४२ में नाज़ी आक्रामकों से लड़े
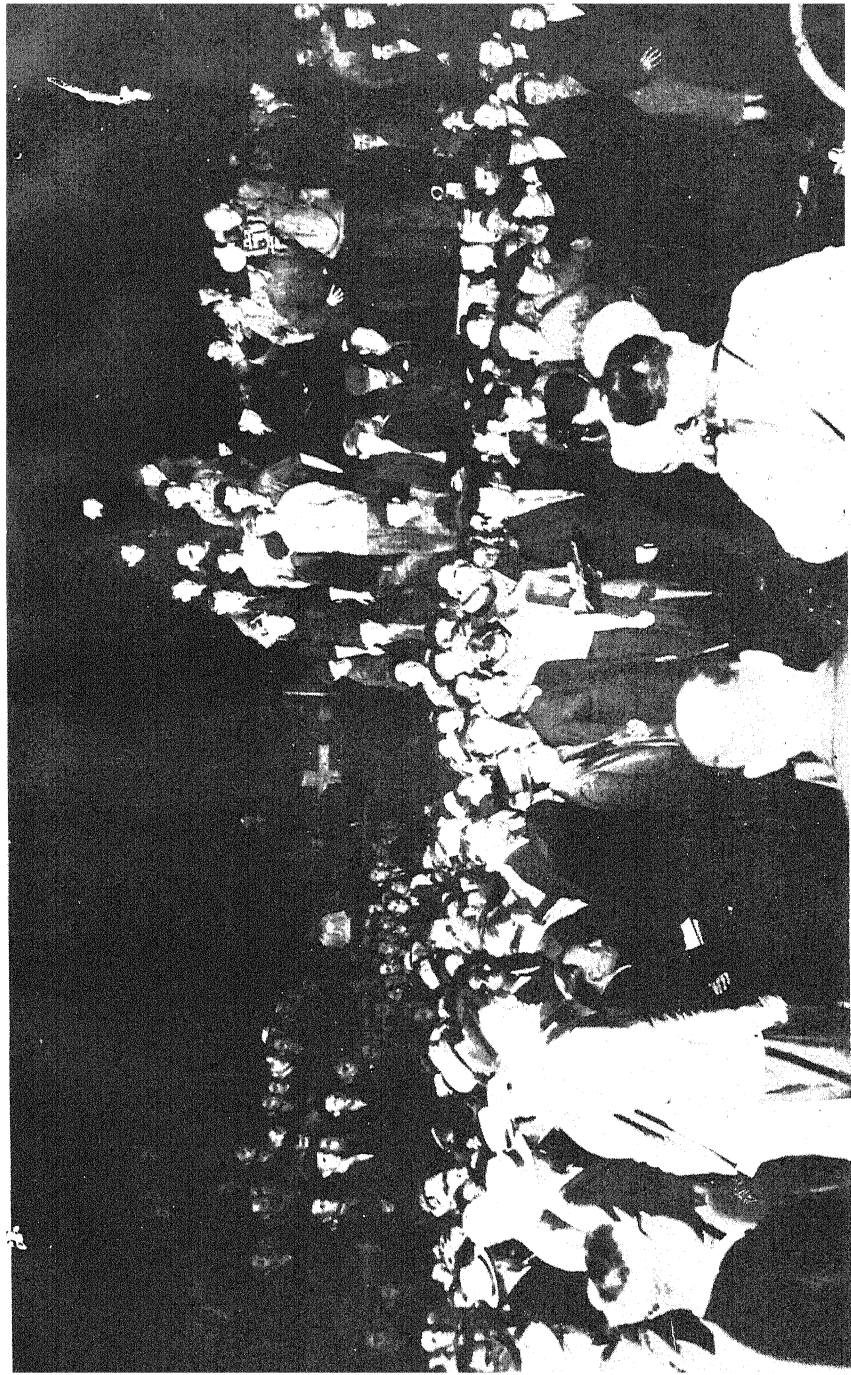
लेनिनग्राद टर्बाइन प्लांट में
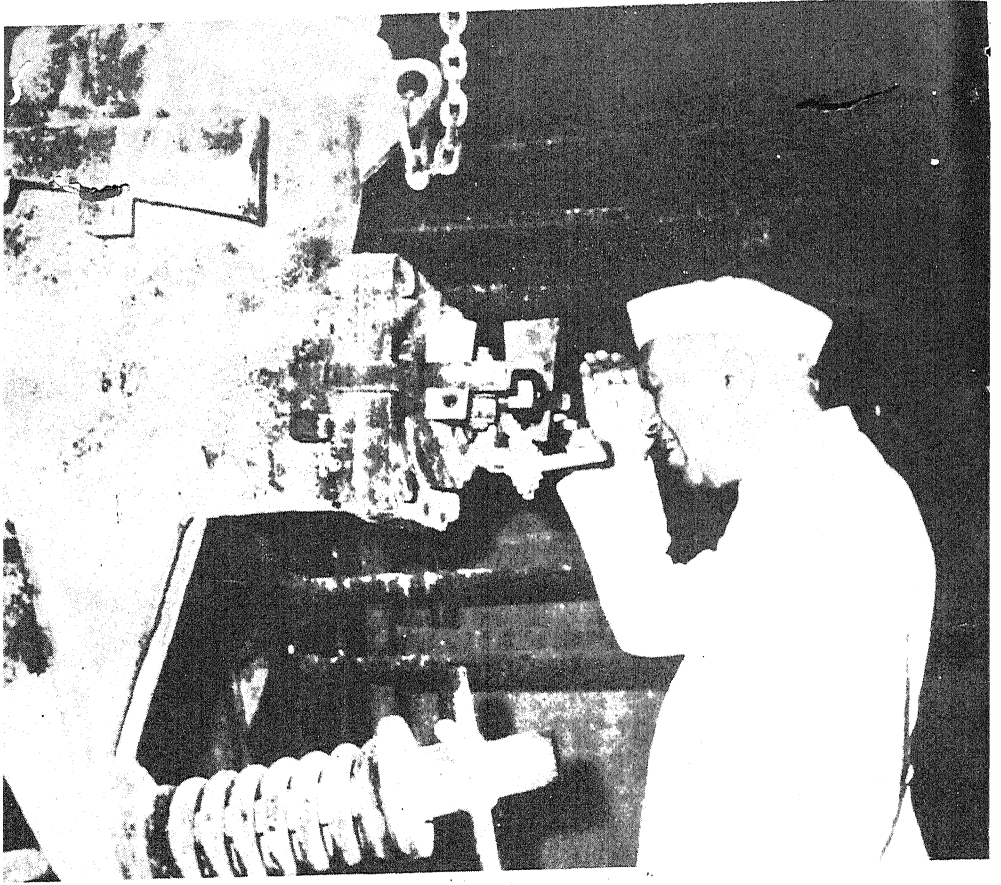
भिलाई इस्पात कारखाने में धमन भट्ठी में पिघला हुआ इस्पात देखते हुए

कलकत्ता, फरवरी १९६० : इण्डो-सोवियत मैत्री की एक मीटिंग में
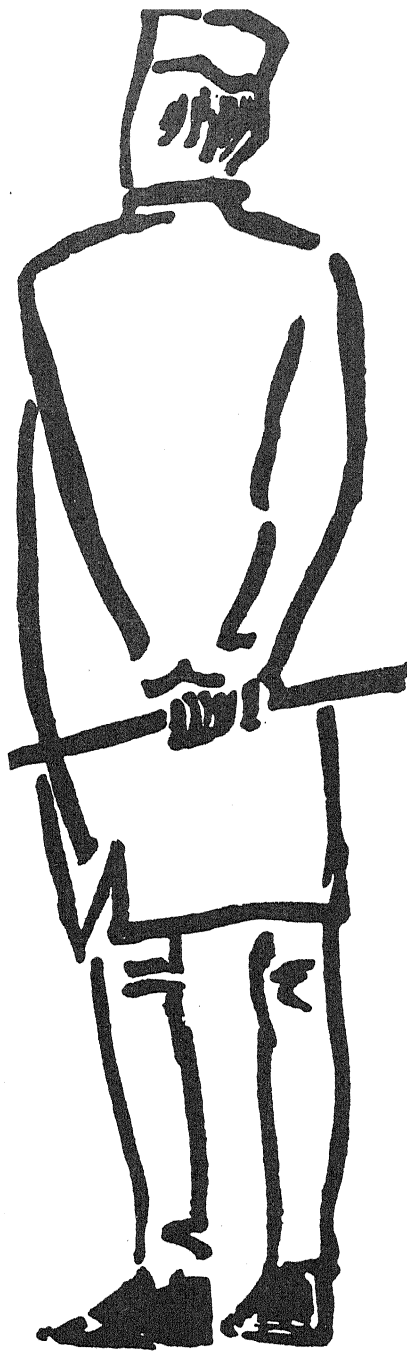
जवाहरलाल नेहरू : सोवियत इण्डोलॉजिस्ट एस० पोताबेंको द्वारा अंकित एक रेखाचित्र। रेखाचित्रकार ने इसका शीर्षक दिया था : 'राजपथ'

# जवाहरलाल नेहरू और सोवियत संघ

२०वीं शताब्दी के भारत के राजनीतिक इतिहास में जवाहरलाल नेहरू एक अद्वितीय स्थान के अधिकारी है। "इतिहास और उनके समकालीन उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप मे स्मरण करते है जिसमे गहन दार्शनिक प्रज्ञा, प्रगाढ़ मानवतावादी दृष्टि, सामाजिक अन्याय के प्रति उत्कट विरोध-भावना थी, जो साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद का प्रबल शत्रु, शान्ति और प्रजातंत्र का समर्पित योद्धा तथा सोवियत संघ का मित्र था।"[1]

सिद्धान्तकार और राजनीतिवेत्ता के रूप में नेहरू के जीवन को, उस जीवन को जो संघर्ष और जिज्ञासा से भरा हुआ था, सापेक्ष रूप में ही देखा जा सकता है और उसका मूल्यांकन उन क्रांतिकारी परिवर्तनों की रोशनी में ही किया जा सकता है जो हमारे युग की विशिष्टता रहे हैं, उस युग की जिसकी शुरुआत रूस में १६१७ की सफल सामाजिक क्रांति के साथ होती है।

नेहरू अपने पूरे जीवन-काल में सचेत मन से भारत को उपनिवेशवादी बन्धनों से मुक्त कराने, उसे एक महान् प्रभुसत्ता-सम्पन्न राज्य की स्थिति तक पहुँचाने के लिए अथक प्रयत्न करते रहे। भारत के सामाजिक और आर्थिक पुनर्जीवन को, विश्व-शान्ति और विभिन्न सामाजिक प्रणालियों वाले देशों के बीच सहयोग स्थापित करने के लिए संघर्ष को नेहरू के अपरिसीम योगदान का समुचित मूल्यांकन विद्वानो तथा राजनीतिक पत्रकारों के सम्मिलित प्रयास से

१. प्रोफेसर आर० उल्यानोव्स्की, नेहरू : बिल्डर ऑफ दें न्यू इण्डिया, इन्टरनेशनल अफेअर्स, नं० ६, १९७४, पृष्ठ १०६।

किया जा सकता है ।

प्रस्तुत पुस्तक का विषय सीमित होते हुए भी काफी विस्तृत है । इसमे नेहरू और सोवियत संघ विषय पर या यों कहें कि इसके एक पक्ष पर विचार किया गया है, और वह पक्ष है विभिन्न सोवियत विद्वानों, वैज्ञानिकों और सरकारी अधिकारियो द्वारा भारत और सोवियत संघ के पुर्नमिलन को सम्वर्धित करने में नेहरू की भूमिका, और साथ ही भारत की आन्तरिक तथा विदेश-नीति के निर्माण और भारत एवं सोवियत संघ के बीच विश्व-शान्ति तथा सामाजिक प्रगति के लिए इन दोनो देशों के सम्मिलित कार्य में सर्वतोमुखी सहयोग की भूमि तैयार करने में नेहरू के योगदान का मूल्यांकन ।

भारत और सोवियत संघ की जनता के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो को विकसित और सुदृढ करने मे जवाहरलाल नेहरू के कार्य की जितनी प्रशंसा की जाय, कम है । नेहरू उन लोगों में से थे जिन्होंने इन सम्बन्धों की आधारशिला रखने तथा सोवियत-भारत मैत्री की स्थापना करने मे प्रत्यक्ष योगदान किया है । यह मैत्री आज विश्वास, समानता और पारस्परिक लाभमूलक सहयोग की सुदृढ़ आधारशिला पर स्थित है ।

उपलब्ध अभिलेखों का सावधानी के साथ अध्ययन करने से हम सोवियत संघ के प्रति नेहरू का रुझान किस प्रकार विकसित हुआ इसके विषय में कुछ नये तथ्यों से परिचित होते हैं और कुछ पहले से परिचित तथ्य काफी स्पष्ट होकर हमारे सामने आते है । एक समय यह धारणा प्रचलित थी कि नेहरू ने सोवियत संघ की 'खोज' १९२७ में पहली बार यूरोप जाते हुए की थी जब वे कुछ समय के लिए मास्को में रुके थे और उसी समय वे पहली बार समाजवादी विचारो से आकर्षित हुए थे । वस्तुतः बहुत पहले १९१९ में लिखे गये अपने लेख 'भारत की स्वाधीनता' में नेहरू ने अपने-आपको समाजवाद का समर्थक बताया था और भारत के भविष्य के लिए रूस की समाजवादी क्राति की महत्ता तथा प्रासंगिकता पर विचार किया था । उसी लेख मे उन्होंने कहा था कि अक्तूबर क्रान्ति को जिन विचारों ने सम्भव बनाया था उनका पूर्वाग्रह-मुक्त एवं आलोचनात्मक अनुसंधान उस समय भारत के समक्ष प्रस्तुत समस्याओं के समाधान के लिए महत्त्वपूर्ण होगा ।

जवाहरलाल नेहरू महान् अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के १०वें वार्षिक समारोह के लिए नवम्बर १९२७ के प्रारम्भ में मास्को पहुँचे थे । उस अवसर पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख नेता उनके पिता मोतीलाल नेहरू, उनकी पत्नी कमला और उनकी छोटी बहन कृष्णा उनके साथ थी । वह यात्रा एक

ऐसे समय में की गयी थी जब ब्रिटिश उपनिवेशवादी भारत और सोवियत संघ की जनता के बीच अभेद्य दीवार खड़ी करने की भरसक चेष्टा कर रहे थे, सोवियत-भारत सम्बन्धों के इतिहास मे एक उल्लेखनीय घटना थी ।

भारतीय राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के प्रमुख नेताओं द्वारा सोवियत संघ की यात्रा का श्रेय अन्य बातो के अलावा इस तथ्य को था कि १९२०वें दशक के उत्तरार्द्ध मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर अपना रुख प्रतिक्रियावादी ताकतो के विरुद्ध सोवियत संघ के नेतृत्व में साम्राज्यवाद-विरोधी ताकतों के संघर्ष की रोशनी मे तय कर रही थी । यह यात्रा उस समय सोवियत देश में होने वाले समाजवादी कायाकल्प मे उन नेताओं की रुचि से भी समान रूप से प्रेरित थी । जवाहरलाल नेहरू, जो उस समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वामपथी दल के नेता थे, अपनी पार्टी की विदेश नीति के भावी निर्माताओं में से एक थे और बाद मे प्रधानमंत्री के रूप मे उन्होने भारतीय गणतंत्र की विदेश नीति का भी निर्माण किया ।

फरवरी १९२७ में जवाहरलाल नेहरू ने उपनिवेशवादी दमन और साम्राज्य-वादी दमन के विरुद्ध ब्रसेल्स में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के आधिकारिक प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया था । बेल्जियम की राजधानी मे वे एक मान्यताप्राप्त नेता के रूप में पहुँचे थे । नेहरू उन कुछ तरुण कांग्रेस सदस्यों में से एक थे जो रूस की सफल अक्तूबर क्रान्ति से बहुत अधिक प्रभावित हुए थे । अपने राजनीतिक जीवन के इस काल का स्मरण करते हुए नेहरू ने पत्रकार टिबोर मेन्डे को १९५६ मे बताया था कि "बोल-शेविक क्रान्ति सचमुच बड़ी उत्साहवर्द्धक घटना थी । उस समय हमें इसके बारे में ज्यादा जानकारी नही मिली···लेनिन और दूसरे नेताओं के साथ हमारी बहुत ज्यादा सहानुभूति थी···"[१]

मास्को पहुँचने से कुछ सप्ताह पूर्व भारत के समाचार-पत्र 'फारवर्ड' में नेहरू का लेख 'भारत की विदेश नीति' छपा था, जिसमें उन्होने व्यापक भारत-सोवियत सम्बन्धों का समर्थन किया था । उन्होंने लिखा था, "कोई कारण नहीं है कि भारत रूस के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित न करे ।"[२] नव सोवियत राज्य ने अपने देश की शिक्षा, कृषि तथा औद्योगीकरण के विकास के लिए जो रचनात्मक पद्धतियाँ अपनायी थीं, नेहरू ने उनके सतर्क अध्ययन की आवश्यकता का प्रतिपालन किया था ।

१. जे० नेहरू, द फर्स्ट सिक्स्टी ईयर्स, न्यू यॉर्क, १९६५, खण्ड १, पृष्ठ ५७ ।
२. फॉरवर्ड, २६ अक्तूबर, १९२७, पृष्ठ ७१ ।

उसी लेख में नेहरू ने ब्रिटिश उपनिवेशवादी प्रशासन की उन चेष्टाओं का फर्दाफाश किया था जो सोवियत संघ को भारत का शत्रु प्रमाणित करने के लिए की जा रही थी। नेहरू ने लिखा था, "रूस के अलावा शायद ही कोई दूसरा देश शान्ति की इतनी आवश्यकता महसूस करता है, और केवल भय अथवा उसके नियंत्रण से बाहर परिस्थितियाँ ही उसे युद्ध की ओर धकेल सकती है···भारत का रूस के साथ कोई झगड़ा नही है, वह उसके साथ पर्याप्त सहानुभूति रखता है और रूस में ऐसा बहुत कुछ है जिसकी भारत प्रशंसा करता है।"[1] नेहरू ने अपने साथी देशवासियो को एक और खतरे से आगाह किया था, एक बहुत वास्तविक खतरे से कि भारत को कहीं ब्रिटिश साम्राज्यवाद के हित के लिए रूस के विरुद्ध लड़ाई मे न धकेल दिया जाय।

नेहरू परिवार ८ नवम्बर, १९२७ को मास्को पहुँचा था। बाद में नेहरू ने अपनी आत्मकथा मे लिखा, "हमें खुशी थी कि हम थोड़े समय के लिए ही सही, वहाँ गये लेकिन वह थोडी-सी झलक भी हमारे लिए मूल्यवान थी। नये रूस के बारे में इससे हमे ज्यादा जानकारी नही मिली और न मिल ही सकती थी, लेकिन इससे हमें अपने अध्ययन के लिए एक पृष्ठभूमि मिल गयी।"[2]

मास्को में नेहरू का प्रवास अल्पकालीन किन्तु वहाँ उनका कार्यक्रम व्यस्त था। उन्होंने सोवियत जीवन के हर पहलू में जीवन्त दिलचस्पी ली। नेहरू परिवार लेनिन की समाधि पर गया, उसने क्रान्ति संग्रहालय देखा, क्रैमलिन और कला प्रदर्शनी देखी, बोलशेयी थियेटर देखा, एक अस्पताल और केन्द्रीय कृषि भवन का निरीक्षण किया।

जवाहरलाल नेहरू और उनके पिता वरिष्ठ सोवियत अधिकारियों से मिले, जिसमें सोवियत संघ की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष, मिखाइल कालिनिन और विदेश मंत्री जी० चिचेरिन भी शामिल थे। स्वदेश लौटने से पहले नेहरू परिवार सोवियत सरकार द्वारा अक्तूबर क्रान्ति के १०वें वार्षिक समारोह मे सम्मिलित होने के लिए आये हुए विदेशी अतिथियों के सम्मान में आयोजित एक स्वागत समारोह में सम्मिलित हुआ।

अपनी मास्को यात्रा पर नेहरू ने अपने विचार सबसे पहले सोवियत संघ में निवास के तीसरे दिन १० नवम्बर को व्यक्त किये थे। अपनी बड़ी बहन विजयलक्ष्मी पंडित को एक पत्र में लिखा था, "···सच्चे अर्थो में पत्र लिखने

१. फारवर्ड, २६ अक्तूबर, १९२७, पृ० ७१।

२. जे० नेहरू, ऐन ऑटोबायोग्राफी, लन्दन, १९५३, पृ० १६४।

का समय मेरे पास नहीं है, लेकिन फिर भी मास्को से कुछ पंक्तियाँ लिख भेजना चाहता हूँ···। हमें यहाँ आये केवल ३६ घंटे हुए है और इस थोडे से समय में ही हमारे ऊपर जो प्रभाव पड़े है और जो अनुभव हमे हुए है उनका विवरण देने में दिन का एक बहुत बडा हिस्सा और कई पन्ने खर्च हो जायेंगे। हम एक अद्भुत देश मे है। यहाँ आदमी के सारे पुराने मूल्य उलट-पुलट जाते है और जीवन एक विचित्र पहलू मे ढल जाता है।"[1] नेहरू ने आगे लिखा था, "यहाँ हर आदमी 'तोवारिस' (कॉमरेड—सम्पादक) है। बैरे या द्वारपाल या कुली को भी हमे 'तोवारिस' कहकर बुलाना पडता है, और सोवियत जनगण के सभापति को भी गरीब से गरीब किसान को पुकारते समय इसी शब्द का इस्तेमाल करना पडता है। सिद्धान्त में यह बात बिल्कुल सही लगती है, लेकिन व्यवहार मे इसका अभ्यस्त होने के लिए कुछ समय चाहिए···। समानता की भावना यहाँ प्रबल है। हम यहाँ एक दिन विलम्ब से भी आये और महान् समारोह से वंचित रहे। लेनिन की समाधि के सामने सेना का विशाल प्रदर्शन हुआ था और पन्द्रह लाख लोग जुलूस मे निकले थे। यह एक दर्शनीय नजारा रहा होगा।"[2]

सोवियत संघ में रहते हुए नेहरू ने एक और पत्र लिखा था जो हमें लाहौर के समाचार पत्र 'ट्रिब्यून' के सौजन्य से प्राप्त हुआ है। पत्र १३ दिसम्बर, १९२७ का है। एक और पत्र दिल्ली के उर्दू समाचार पत्र 'हमदर्द' में १४ दिसम्बर, १९२७ को प्रकाशित हुआ था। भारत लौटने पर नेहरू ने अपनी सोवियत संघ की यात्रा का वर्णन करते हुए अनेक लेख लिखे, जो हिन्दू, यंग इंडिया और दूसरे पत्रो मे प्रकाशित हुए थे।[3] १९२९ मे यह लेख 'सोवियत रूस' शीर्षक से पुस्तकाकार प्रकाशित हुए। बाद मे स्वाधीन भारत के भावी प्रधानमत्री ने अपनी पुस्तकों के सम्पूर्ण हिस्से सोवियत रूस के बारे में लिखे। इन पुस्तकों में विश्व इतिहास की झलक, आत्म-कथा और सुप्रसिद्ध भारत की खोज शामिल हैं। पर ऐसा प्रतीत होता है कि मास्को से लिखे गये नेहरू के पत्र और कहीं प्रकाशित नही हुए।

विजयलक्ष्मी पंडित को लिखे गये अपने १२ नवम्बर, १९२७ के पत्र मे

१. लिंक, १९६७, न० १३, पृ० ४०।
२. वही।
३. सोवियत रूस पर नेहरू के लेख दूसरे पत्रों में भी प्रकाशित हुए थे। उदाहरणार्थ, 'हमदर्द' ने ९ अक्तूबर तथा २२ अक्तूबर, १९२८ को सोवियत रूस की शिक्षा प्रणाली पर लेख प्रकाशित किये थे।

इस बात के लिए खेद प्रकट किया है कि वे मास्को में कम से कम एक दिन और नही रुक सके। अपने पत्र को समाप्त करते हुए उन्होंने लिखा है, "देश का विद्युतीकरण बड़ी तेजी से हो रहा है और अब तक यहां दर्जनों बिजली-घर बन चुके है जो बहुत बडे है और सारे देश में फैले हुए है। किसानों के मुकाबले औद्योगिक कर्मचारी ज्यादा बेहतर ढंग से संगठित है। सब कही उनके अपने ट्रेड यूनियन भवन है जहां प्राय: भाषणों का आयोजन किया जाता है, सुन्दर वाचनालय है, और इनमे से अधिकांश पुराने सामन्तों के महल हैं जो अब कर्मचारी क्लबों या किसान भवनों में परिवर्तित कर दिये गये है। इसमें कोई संदेह नही किया जा सकता कि आम गरीबी और कम मजदूरियों के बावजूद रूस में किसानो और कर्मचारियो की हालत दूसरे देशो के मुकाबले कहीं अच्छी है। इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उनका नैतिक स्तर उन्नत हुआ है और भविष्य के प्रति उनके मन में आस्था है और विश्वास है।"[1]

ये सोवियत रूस की अपनी यात्रा के दौरान जवाहरलाल नेहरू के मन पर पड़े हुए कुछ बुनियादी प्रभाव थे।

भारत लौटने पर अपने अनेक सार्वजनिक भाषणों और वार्ताओ मे नेहरू ने सोवियत संघ मे होनेवाले सामाजिक परिवर्तनों तथा सोवियत सरकार की शान्ति-मूलक विदेश-नीति का आख्यान किया। नेहरू, जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के दूरदर्शी राजनीतिज्ञ थे, एक ऐसी पद्धति की तलाश कर रहे थे जिसके द्वारा सोवियत संघ के रचनात्मक अनुभवों का स्वाधीन भारत के निर्माण में उपयोग किया जा सके। सोवियत संघ में नेहरू ने जो कुछ देखा था उसके प्रति अपने पूर्वाग्रह-मुक्त उदार दृष्टिकोण के कारण ही वे सोवियत विकास की अनिवार्य तटस्थ झाँकी प्रस्तुत कर सके थे हालाँकि सोवियत जीवन के कुछ पहलुओं और कुछ सामाजिक प्रक्रियाओं को पूरी तरह समझने मे वे असमर्थ रहे थे।

कलकत्ता में २२ सितम्बर, १९२८ को अखिल भारतीय विद्यार्थी सम्मेलन को संबोधित करते हुए नेहरू ने कहा था कि वे साम्यवाद को आदर्श समाज के रूप मे देखते है। उन्होंने आगे कहा था कि पूर्व मे रूस एक विजेता के रूप में या अपनी श्रेष्ठता का प्रदर्शन करने वाले देश के रूप मे नहीं आ रहा है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि यहाँ रूस का स्वागत किया जाये। एक दूसरे अवसर पर १९२८ में उत्तर प्रदेश स्थित झाँसी मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एक सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए नेहरू ने बार-बार इस बात पर बल दिया था कि उनकी

१. लिंक, १९४७, न० १३, पृ० ४१।

राय में भारत को उसकी सारी बुराइयों से मुक्ति दिलाने की एकमात्र वास्तविक आशा समाजवाद में ही निहित है और यही कारण है कि समाजवाद हमारा सर्वोच्च राष्ट्रीय लक्ष्य होना चाहिए ।

उसी साल अमृतसर मे एक भाषण में नेहरू ने पुराने विचारो को तोड़ने का आह्वान किया था जिससे कि उन विचारों को अपनाया जा सके जो वास्तविकताओं पर आधारित हों । एक बार फिर नेहरू ने यह कहते हुए रूस का उदाहरण दिया कि उत्पादन और वितरण के साधनों पर सार्वजनिक स्वामित्व तथा मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण के उन्मूलन को जोड़ने वाला समाजवाद ही एकमात्र ऐसा रास्ता है जिस पर चलकर भारत स्वाधीनता प्राप्त कर सकता है ।

भारत मे जो लोग 'साम्यवाद' के नाममात्र से आतंकित रहते थे उनकी आलोचना करते हुए नेहरू ने कहा था कि रूस साम्राज्यवाद का बहुत बड़ा शत्रु है । उन्होंने अपने देशवासियों को समझाया था कि अन्तर्राष्ट्रीयता एवं समाजवाद के आदर्श ही भारत के नवयुवकों के लिए एकमात्र विकल्प हैं । कुछ वर्षो बाद अपने राजनीतिक जीवन के इस काल का स्मरण करते हुए नेहरू ने अपनी आत्मकथा मे लिखा, "हर कहीं मैं राजनीतिक स्वाधीनता और सामाजिक स्वतंत्रता का समर्थन करता रहा हूँ···। मै चाहता हूँ कि समाजवाद का आदर्श प्रचारित हो, विशेष रूप से कांग्रेसकर्मियों और बुद्धिजीवियों के बीच, क्योंकि ये लोग जो आन्दोलन की रीढ़ हैं, ज्यादातर अत्यन्त संकुचित राष्ट्रीयतावाद के रूप मे सोचते है ।"[1]

नेहरू ने अपने लेखो और अपनी पुस्तकों में सोवियत संघ में विद्यमान स्थिति का मूलतः एक तटस्थ चित्र प्रस्तुत करके सोवियत विरोधी उस प्रचार पर बड़ा प्रहार किया जो भारत मे ब्रिटिश उपनिवेशवादी प्रशासन द्वारा किया जा रहा था । लाखों भारतीयों के लिए इन पुस्तकों और लेखो में जैसे कोई रहस्योद्घाटन किया गया था, वे इनके माध्यम से नये रूस की पहली बार 'खोज' कर रहे थे ।

नेहरू द्वारा सोवियत रूस की पहली यात्रा पर ब्रिटिश उपनिवेशवादी प्रशासन में आक्रोशमूलक प्रतिक्रिया व्यक्त की गयी थी, जिसका प्रमाण ब्रिटिश सरकार के दस्तावेजों मे मिलता है। १९३५ मे अफगानिस्तान स्थित सोवियत राजदूत की प्रस्तावित भारत यात्रा से सम्बन्धित जो पत्र-व्यवहार लंदन और दिल्ली के

१. जे० नेहरू, ऐन ऑटोबायोग्राफी, लन्दन, १९५३, पृ० १८२ ।

बीच हुआ था उसमे ब्रिटिश उपनिवेशवादी प्रशासन के एक अधिकारी की इस आशय की टिप्पणी सम्मिलित है कि भारत स्थित ब्रिटिश अधिकारियो ने भारतीय अधिकारियो के शिष्ट-मण्डल को रूस न जाने देने का निर्णय किया था क्योकि उनके वहाँ जाने से यह डर था कि उन पर अवांछित प्रभाव पड़ेगे।

भारत मे ब्रिटिश गुप्तचर सेवा के अध्यक्ष ने भारतीयो और सोवियत नागरिकों के बीच किसी भी प्रकार के सम्पर्क का स्पष्ट रूप से विरोध किया था।[1]

सोवियत जीवन का शायद ही कोई पक्ष ऐसा हो जिसका जवाहरलाल नेहरू अपने अनेक लेखो और भाषणों मे उल्लेख करने से चूके हो। सोवियत सघ मे समाजवादी विकास की जो प्रक्रिया चल रही थी उसके प्रत्येक स्तर मे नेहरू की जीवन्त रुचि थी। इस विकास के कुछ पक्ष ऐसे थे जो विशेष रूप मे सहानुभूति उत्पन्न करने वाले थे, खासकर वे जो नेहरू की राय मे राष्ट्रीय मुक्ति और पुनर्जीवन के लिए भारत के संघर्ष मे प्रासगिक थे। उदाहरण के लिए आर्थिक पिछड़ेपन का उन्मूलन औद्योगीकरण तथा आर्थिक नियोजन, विदेशी पूंजी के प्रति रवैया, सहकारी आधार पर खेती का पुर्ननिमाण, एक पृथक् बहुराष्ट्रीय राज्य के ढाँचे मे राष्ट्रीय सम्बन्ध तथा अन्य समस्याएँ।

सामान्य रूप से कहे तो समाजवाद के मूल तत्त्व पर और समाजवाद के अन्तर्गत सामाजिक सम्बन्धों की प्रकृति तथा समाजवादी आधार पर समाज का पुर्निर्माण करने के तरीकों पर विचार करते हुए नेहरू का ध्यान सोवियत संघ के अनुभवो पर गया था। साथ ही यह बात भी स्पष्ट रहनी चाहिए कि समय-समय पर नेहरू सोवियत जीवन के कुछ पक्षो की आलोचना करते थे। लेकिन हमेशा वे सावधानी के साथ अपनी आलोचनाओं को यह कहकर हल्का कर देते थे कि उन सारी कमियों के बावजूद, जो उन्हें सोवियत रूस में समाजवादी पुर्निर्माण की पद्धति में दिखायी देती है, उन्हें इस बात में कोई सन्देह नही है कि रूस सच्चे अर्थों में समाजवादी देश है जो किसी भी पूंजीवादी देश की तुलना में मूलत: भिन्न है। नेहरू इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे : "सोवियत क्रान्ति ने मानव समाज को अचानक बहुत आगे बढ़ा दिया था और एक ऐसी आलोक शिखा प्रज्वलित कर दी थी जिसे बुझाया नहीं जा सकता था और उस नवीन सभ्यता की आधारशिला स्थापित कर दी

१. नेशनल आर्काइव्ज़ ऑफ इण्डिया, फॉरेन एण्ड पॉलिटिकल डिपार्टमेन्ट, सीक्रेट फाइल नं० ७२-एफ (३५), १९३५, नोट्स, २।

थी जिसकी तरफ संसार आकर्षित हो सके।"[1]

नेहरू फासिज्म तथा साम्राज्यवाद के विरुद्ध लडाई मे सोवियत संघ को एक प्रमुख रक्षक के रूप में देखते थे। २५ दिसम्बर, १९४१ की भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति के 'गोपनीय' प्रारूप प्रस्ताव में नेहरू ने सोवियत संघ पर नाजी जर्मनी के विश्वासघाती आक्रमण की तीव्र निन्दा की थी। अपनी स्वतंत्रता और स्वाधीनता पर उन्हें पूरा विश्वास था कि अन्तिम विजय सोवियत जनता की होगी जो अपनी स्वतंत्रता और स्वाधीनता के लिए और साथ ही अन्य लोगों को नाजी बन्धन से मुक्ति दिलाने के लिए लड रही थी।

नेहरू ने सोवियत संघ की दूसरी यात्रा अपनी पहली यात्रा से लगभग तीन दसक बाद १९५५ मे की थी। इस बार वे प्रभुसत्ता-सम्पन्न भारत के प्रधान-मंत्री के रूप में सोवियत संघ पहुँचे थे। अब तक नेहरू के मन में यह धारणा स्थापित हो चुकी थी कि भारत और सोवियत संघ के बीच मैत्री तथा सहयोग विकसित करने की आवश्यकता है। अपनी यात्रा प्रारम्भ करने के पूर्व उन्होने घोषित किया कि भारत और सोवियत संघ दोनो पारस्परिक मैत्री तथा विश्वास से लाभान्वित होगे। उन्होने आगे कहा कि वे सोवियत जनता से मिलने के लिए उत्सुक हैं। वे सोवियत संघ जाकर प्रत्यक्ष देखना चाहते थे कि सोवियत लोगों ने क्या किया है और उससे वे कुछ सीखना चाहते थे।

१९५५ मे सोवियत सघ की यात्रा के दौरान नेहरू ने जो कुछ देखा उसका उनके मन पर गहरा प्रभाव पडा। नेहरू का कहना था कि उन्होने वहाँ ऐसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन देखे जिन्होने उस विशाल देश का कायाकल्प कर दिया था और इसका श्रेय सोवियत जनता के उस कठोर परिश्रम तथा आश्चर्यजनक महत्त्वाकाक्षाओं को है जो उसे अपने जीवन को उन्नत बनाने की प्रेरणा दे रही थी।

सोवियत सरकार के नेताओं के साथ नेहरू की मुलाकातें और वार्ताएँ बहुत महत्त्वपूर्ण थी। वार्ताओ के अन्त मे एक सम्मिलित वक्तव्य जारी किया गया था जिसमें अन्य बातो के साथ इस बात का भी उल्लेख था कि अनेक महत्त्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओ पर भारत और सोवियत संघ के दृष्टिकोण में समानता अथवा निकटता है और जिसमें दोनों महान् देशों के बीच सहयोग की भावना को सुदृढ़ और विस्तारित करने की आवश्यकता प्रतिपादित की गयी थी।

१. जे० नेहरू, द डिस्कवरी ऑफ इण्डिया, लन्दन, १९५१, पृ० १४।

नेहरू की यात्रा के लिए बहुत विस्तृत कार्यक्रम निर्धारित किया गया था। सोवियत संघ मे वे अपनी बेटी इन्दिरा गाधी के साथ पहुँचे। सोवियत जीवन के हर पक्ष से परिचित होने का उन्हे प्रत्येक अवसर प्रदान किया गया। मास्को मे रहते हुए नेहरू ने लिखा कोव मोटर वर्क्स, एक विमान कारखाने, राष्ट्रीय आर्थिक उपलब्धियों की प्रदर्शनी, मास्को विश्वविद्यालय तथा सेकेण्ड्री स्कूल न० ५४५ का अवलोकन किया। वे मास्को मैट्रो, 'भारतीय सस्कृति और कला' प्रदर्शनी, मास्को क्रेमलिन देखने के लिए भी गये और लेनिन की समाधि पर फूल माला चढ़ाई।

इसके बाद नेहरू और उनकी बेटी सोवियत संघ का भ्रमण करने के लिए मास्को से विदा हुए, और ओरुगोग्राद पहुँचे जहाँ उन्होने स्थानीय कारखाने तथा अन्य रोचक स्थानो को देखा। क्रीमियाँ मे उन्होंने आरोग्य भवनो तथा विश्रामगृहो और आर्टे यंग पायनियर कैम्प का अवलोकन किया। जोर्जिया में वे सुस्तागी नगर और दिगोमी स्टेट फार्म देखने के लिए गये। अश्खाबाद मे कुछ समय रुकने के बाद भारतीय प्रधानमंत्री ताशकंद गये। उन्होने प्राचीन नगर समरकंद का भ्रमण भी किया, वहाँ स्थानीय कपास उत्पादको से मिले तथा उज-बेक विज्ञान अकादमी के वैज्ञानिकों के एक दल से मिले। अल्टाटेरीटरी की ओर जाते हुए नेहरू अलमा-आता मे रुके। अल्टाई टेरीटरी मे उन्होने कुरयीन स्टेट फार्म का अवलोकन किया जिसका निर्माण १९५४ मे बजर भूमि कृषिकरण अभियान के समय किया गया था। इसके अनन्तर भारतीय प्रधानमंत्री मैग्नीटोगोर्स्क, स्वर्दलोव्स्क और लेनिनग्राद गये। औद्योगिक उद्यमों का अवलोकन करते समय नेहरू ने औद्योगिक प्रक्रियाओं, क्षमता तथा निष्पादन मे और औद्योगिक उप-करणो तथा मशीनी औजारों की विशेषताओं मे अत्यधिक रुचि ली। इसके साथ ही कामगरों की कार्यकारी तथा आवासिक अवस्थाओं और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं मे भी उन्होंने दिलचस्पी दिखायी।

मास्को मे नेहरू और इन्दिरा गांधी बोलसोई स्थित फाउन्टेन आफ बाख्ची सराय तथा स्वानलेक देखने के लिए गये। लेनिनग्राद मे उन्होने किरोवओपेरा तथा बैलेथियेटर में 'द स्लीपिंग ब्यूटी' देखा। त्बिलिसी में उन्होंने त्बिलिसी ओपरा तथा बैलेथियेटर मे 'गोदा' नामक बैले देखा। ताशकंद और स्वर्द-लोव्स्क में भारतीय अतिथियों के सम्मान में विशेष संगीत सभाओ का आयोजन किया गया था।

मास्को स्थित डायनमो स्टोट्स स्टेडियम में २१ जून, १९५५ को अस्सी हजार लोगों का जुलूस भारत और सोवियत संघ की जनता के बीच बढ़ती हुई

तथा मजबूत होती हुई मैत्री का प्रत्यक्ष प्रदर्शन था। उस अवसर पर जुलूस को सम्बोधित करते हुए नेहरू ने कहा कि उन्होंने सोवियत संघ में लगभग तेरह हजार किलोमीटर यात्रा की है, प्रमुख नगरों का अवलोकन किया है और उन बहुत सारी चीजों को देखा है जो उनके लिए बहुत अधिक दिलचस्प हैं। किन्तु; नेहरू के शब्दों में उनकी यात्रा का उल्लेखनीय तथ्य वह हार्दिक स्वागत था जो उन्हें हर कहीं प्राप्त हुआ, और मैत्री की वह भावना थी जो सोवियत जनता के साथ मुलाकातों के दौरान इतनी मुखर होकर सामने आयी थी। नेहरू ने कहा कि वे सोवियत जनता द्वारा किये गये हार्दिक स्वागत और उसकी मैत्री के लिए उसके आभारी है और उन्होंने स्वीकार किया कि सोवियत जनता के प्रति अपना आभार प्रकट करने के लिए उनके पास उपयुक्त शब्द नहीं है।

स्वदेश के लिए विदा होने से पहले नेहरू ने कहा, "सोवियत संघ मे अपनी १६ दिन की यात्रा के दौरान मेरे मन पर जो प्रभाव पड़े है उनका वर्णन करना मुझे कठिन लग रहा है। यह एक बहुत लम्बी कहानी है। केवल मै ही नही बल्कि भारत की जनता भी इसे सदैव याद रखेगी। मुझे जो हार्दिक मैत्री और आतिथ्य यहाँ मिला है वह मेरे लिए महत्त्वपूर्ण है। मेरी सबसे सुखद स्मृति उन मैत्रीपूर्ण मुलाकातों की होगी जिनसे पता लगता है कि हमारे सम्बन्धों में कितनी हार्दिकता आ गयी है!"[१]

नेहरू ने १९६१ में सोवियत संघ की अपनी तीसरी और अंतिम यात्रा की। सोवियत जनता ने एक बार फिर अपने मित्र राष्ट्र भारत के प्रधानमंत्री का उत्साहपूर्ण स्वागत किया। इस अवसर पर अपनी राजकीय यात्रा के दौरान नेहरू ने सोवियत नेताओ से तात्कालिक महत्त्व की बहुत-सी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर बातचीत की और भारत-सोवियत सहयोग की सम्भावनाओं पर विचार-विमर्श किया। उनकी बातचीत की समाप्ति पर जो संयुक्त विज्ञप्ति जारी की गयी उसमें कहा गया था कि शान्ति कायम रखना दोनो देशो का सम्मिलित लक्ष्य है और भारतीय तथा सोवियत जनता के आपसी हितों को दृष्टि में रखते हुए दोनों देशो की मैत्री प्रगाढ़ होती जा रही है। यात्रा के दौरान अपने एक भाषण में नेहरू ने कहा, "मैं यहाँ पिछली मरतबा छह साल पहले आया था। हम सब जानते है···कि इन छह बरसों में हमारे दोनो देशों के बीच मैत्री-सम्बन्ध तेजी से विकसित हुए है और इस बीच हमारे आर्थिक तथा सांस्कृतिक

१. फोटो-एलबम, जवाहरलाल नेहरू इन द सोवियत यूनियन मास्को, १९५५।

सम्बन्ध भी बढे है···

इस दौरान हमें आपकी ओर से बहुत-सी चीजें मिली है, लेकिन उन सबमे सबसे ज्यादा कीमती चीज आपकी दोस्ती ही है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह दोस्ती आगे बढेगी और भविष्य मे और भी मजबूत होगी।"[1]

लगभग ३७ वर्षो तक जवाहरलाल नेहरू सोवियत सघ के साथ—यानि संयुक्त सोवियत सघ की विभिन्न प्रजातियों के प्रतिनिधियो के साथ भिन्न-भिन्न प्रकार के सम्बन्ध सूत्रो मे बँधे रहे हैं। नेहरू ने लाखों सोवियत लोगो के दिलो पर गहरी छाप छोडी है। २९ मई १९६४ को सोवियत प्रधानमत्री एलेक्सी कोसिगिन ने दिल्ली मे बोलते हुए कहा था, "जवाहरलाल नेहरू का नाम क्योंकि एक ऐसे राष्ट्र के साथ जुड़ा है, जो कि उपनिवेशवाद को उसके हर सम्भव रूप मे समाप्त करने के लिए कटिबद्ध है और जो तमाम विवादग्रस्त अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का हल बातचीत के द्वारा शान्तिपूर्ण तरीकों से निकालने मे विश्वास रखता है, यही कारण है कि सोवियत जनता को यह नाम बहुत प्रिय है। वह शान्ति के प्रचंड प्रहरी और विभिन्न राष्ट्रो मे शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के प्रबल समर्थक थे। वह गुटनिरपेक्षता की नीति के निर्माता थे। भारत सरकार आज भी इसी नीति पर आचरण कर रही है। इस सूझ-बूझ वाली नीति के कारण भारत की प्रतिष्ठा बढी है और अब उसे अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपेक्षित स्थान मिला है तो इसके पीछे भी यह नीति ही है।

"१९५५ और १९६१ मे जब जवाहरलाल नेहरू सोवियत संघ मे थे, उन दिनों की याद सोवियत जनता के दिलों में हमेशा ताजा रहेगी। उन दिनो हमारे देश के लोगों को एक ऐसे देश के नेता का स्वागत करने का मौका मिला, जिसने कि अपने को साम्राज्यवाद से अलग कर लिया है और अब अपने स्वतंत्र विकास मे लगा हुआ है।"[2]

सोवियत जनता नेहरू की बहुत प्रशंसा करती थी और उन्हें बहुत प्यार करती थी। बहुत से सोवियत नागरिको ने उन्हें बधाई-पत्र लिखे है और उनके प्रति अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रकट की है।

यहाँ बहुत से उदाहरणो मे से केवल एक प्रस्तुत है। प्रसिद्ध भारतीय पत्रकार और अब भारतीय संसद् के सदस्य हर्षदेव मालवीय १९६३ में सोवियत जार्जिया की यात्रा पर गये थे। उन्होने कारवेटिया के गुर्दजानी जिले के संयुक्त

१. सोवियत लैंड, १९६४, संख्या १२।
२. सोवियत लैंड, १९६४, सख्या १२।

लेनिन फार्म को देखने के बाद लिखा, "भारत की जनता और उसके महान् नेता श्री नेहरू के प्रति उन लोगों के मन में गहरी सद्भावना थी।" द्मित्री मामिशवली ने कहा, "हम भारत को एक महान् राष्ट्र और उसके निवासियों को एक महान् जनता के रूप मे जानते है। हम जानते है कि भारतीय जनता को कितना लम्बा संघर्ष करना पड़ा और किस हद तक साम्राज्यवादियों के शोषण का शिकार बनना पड़ा।

लेकिन अब भारत ने अपनी स्वाधीनता प्राप्त कर ली है और उसके पास नेहरू जैसा महान् नेता है। नेहरू दो बार जार्जिया आ चुके है। एक बार तो अपनी बेटी के साथ आये थे। हमने उन्हें देखा है। वे हमारे मित्र है। वे विश्व शाति के लिए जो संघर्ष कर रहे है, हम उसके बारे में भी जानते है। उनके प्रति हम सबके दिलों मे बहुत आदर है। वे अपने देश की आजादी को मजबूत बनाने और आर्थिक प्रगति करने के लिए अपनी जनता का नेतृत्व कर रहे है।"[1]

सोवियत सघ के सैकड़ों, बल्कि हजारो नागरिक भारत के उस महान् सपूत, असाधारण राजनीतिज्ञ शाति के प्रहरी और भारतीय तथा सोवियत जनता की मैत्री एवं सहयोग के प्रबल समर्थक जवाहरलाल नेहरू से व्यक्तिगत रूप से मिलने और बातचीत करने का सुअवसर पा चुके है। सोवियत जनता नेहरू को सदा याद करती रहेगी।

१. सोवियत लैंड, १९६३, संख्या १९।

# अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में नेहरू की भूमिका

भारत के प्रधानमंत्री और साथ-ही-साथ विदेश मंत्री होने के नाते जवाहरलाल नेहरू देश की विदेश नीति के निर्माता और प्रयोक्ता थे।

भारत के स्वाधीन होने से काफी पहले १९२७ में ही नेहरू ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक संघर्षों का विश्लेषण करके कहा था कि भारत और सोवियत संघ के बीच मतभेद की कोई गुजाइश नही है। उस समय साम्राज्यवाद कमजोर पड़ रहा था और संसार के पहले समाजवादी राष्ट्र को कुचल डालना चाहता था। नेहरू ने कहा था कि जहाँ तक उनका सम्बन्ध है, वे इस बात को पूरी तरह साफ कर देना चाहते है कि ब्रिटेन के हित में जो साम्राज्यवादी खेल खेला जा रहा है, उसमें ब्रिटेन किसी भी कीमत पर उन्हें मोहरों की तरह इस्तेमाल नहीं कर सकेगा। १९२७ के अन्त मे राष्ट्रीय काग्रेस ने जो प्रस्ताव पास किया उसकी मुख्य धारणा यह थी कि भारत को किसी साम्राज्यवादी लड़ाई में न घसीटा जाये और यह माँग भी की गयी थी कि भारत को किसी भी लड़ाई में हिस्सा लेने के लिए मजबूर न किया जाये। वह प्रस्ताव भारतीय कांग्रेस की विदेश नीति के सिद्धांतों का निर्माण करने वाला पहला दस्तावेज था। बाद के वर्षों में कांग्रेस ने बार-बार उस प्रस्ताव के मूल बिन्दुओं को ही उभारा और द्वितीय विश्व युद्ध तक यह प्रस्ताव ही कांग्रेस की विदेश नीति का निर्णायक आलेख बना रहा।

हिटलर के सत्ता में आने, फासिस्ट इटली द्वारा अबीसीनिया की जनता के विरुद्ध आक्रमण करने और स्पेन में गृह युद्ध होने के दौरान फासिस्टवाद और नाज़ीवाद का प्रबल विरोध करना नेहरू की विदेश नीति के प्रमुख अंग थे।

नेहरू फासिस्टवाद को साम्राज्यवाद और नस्लवाद का सबसे विकृत रूप समझते थे। और भारत इन्हीं शक्तियो के विरुद्ध तो लड़ रहा था।

२२ फरवरी १९४० को अबुल कलाम आजाद के नाम एक पत्र में नेहरू ने लिखा कि अंग्रेजी साम्राज्यवाद की नीति "रूस को कमजोर करने की कोशिश" की रही है। नेहरू ने आगे लिखा, "इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि हम रूस के बारे में ब्रिटेन की वर्तमान नीति के सम्बन्ध मे अपने तई स्पष्ट रहें और घोषणा कर दें कि हम इस नीति के विरुद्ध हैं। यदि ब्रिटेन रूस के विरुद्ध कार्रवाई करता है तो हम न तो उसे उचित समझेंगे और न ही उसका समर्थन करेंगे।"[1]

दूसरे विश्वयुद्ध के चरित्र का विश्लेषण करने के बाद नेहरू ने युद्ध में भाग न लेने सम्बन्धी अपने पहले विचारों को बदल दिया और इस नतीजे पर पहुँचे कि भारत ब्रिटेन और फासिस्टविरोधी मोर्चे के दूसरे देशो के साथ युद्ध में भाग ले सकता है, बशर्ते कि उसकी राजनैतिक आजादी को बाकायदा मंजूर कर लिया जाये।

दूसरे महायुद्ध में नाजी जर्मनी और सैन्यवादी जापान की पराजय के परिणामस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रतिक्रियावादी शक्तियो का ह्रास शुरू हो गया और अन्य शक्तियों का रुख उनके पक्ष में बदल गया जो कि स्वाधीनता और प्रजातंत्र के लिए लड़ रहे थे। भारत की जनता अपने देश को आजाद कराने के संघर्ष में कूद पड़ी।

७ सितम्बर, १९४६ को अंतरिम सरकार के सर्वोच्च पदाधिकारी के रूप में अपने पहले रेडियो भाषण में जवाहरलाल नेहरू ने भारत की राष्ट्रीय सरकार की विदेश नीति के मूल सिद्धातो का निरूपण किया। नेहरू द्वारा निरूपित शाति-प्रिय विदेश नीति, जो कि 'नेहरू कोर्स' के नाम से प्रख्यात है, नये उपनिवेशवाद से अलग रहते हुए और उसका विरोध करते हुए भारत का स्वतंत्र राष्ट्रीय विकास करने की नीति थी। नेहरू की विदेश नीति का मूल बिन्दु किसी भी प्रकार सैनिक गुटों में सम्मिलित न होना था। स्मरणीय है कि जब विंस्टन चर्चिल ने संयुक्त राज्य अमेरिका के फुलटन नामक स्थान पर अपना वह शरारत से भरा भाषण दिया, जिससे शीतयुद्ध का आरम्भ हुआ, उसके छह महीने बाद नेहरू ने विदेश नीति सम्बन्धी अपनी मान्यताओं की घोषणा की।

इन परिस्थितियों में नेहरू द्वारा निरूपित विदेश नीति के महत्त्व को आँकने

१. जवाहरलाल नेहरू, ए बंच ऑफ ओल्ड लैटर्स, बम्बई १९५८, पृष्ठ ४१९।

में अतिरेक होने की सम्भावना ही नहीं है। यही नही, भारत दुनिया में ऐसा पहला बडा देश था जिसने कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के इतिहास मे एक नये दौर का सूत्रपात किया। यह नया दौर गुटनिरपेक्षता की नीति के नाम से जाना जाता है।

सोवियत सरकार ने नेहरू की मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने की इच्छा की बहुत सराहना की और शीघ्र ही भारत तथा सोवियत संघ मे प्रारम्भिक कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित होने शुरू हो गये।

भारत तथा सोवियत संघ के बीच कूटनीतिक सम्बन्ध सोवियत सरकार तथा भारत की अंतरिम सरकार के बीच पत्र-व्यवहार होने के पश्चात् अप्रैल १९४७ में अर्थात् भारत की स्वाधीनता की विधिवत् घोषणा के चार मास पहले स्थापित हुए। इस प्रकार जब भारत की जनता अपनी स्वाधीनता और राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के लिए संघर्ष कर रही थी, तब सोवियत संघ ने भारत की अंतरिम सरकार के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित करके उस संघर्ष को समर्थन दिया और भविष्य के स्वतन्त्र भारत को अन्तर्राष्ट्रीय कानून में स्वीकृति दी।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक फलक पर हुई बाद की घटनाओं से यह साफ जाहिर हो गया कि नेहरू द्वारा प्रतिपादित गुटो मे शरीक न होने की नीति, उनके विरोध मे गयी जो कि इस तरह के गुट बनाये बैठे थे। इस प्रकार नेहरू की नीति स्पष्ट रूप से साम्राज्यविरोधी साबित हुई।

साम्राज्यवादी ताकतो की आक्रामक गुट—जैसे कि सिएटो—बनाने की नीति ने भारत के सामने युद्ध का खतरा उपस्थित कर दिया और नेहरू को यह मानने के लिए मजबूर कर दिया कि भारत को शान्ति बनाये रखने के लिए गुटों में शरीक न होना ही काफी नहीं है। यदि भारत अपने उपनिवेशवादी भूत के दाय से मुक्ति पाना चाहता है और आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करना चाहता है तो यह शान्ति परम आवश्यक है। इस सचाई से आगाह होने पर नेहरू के नेतृत्व में भारत सरकार ने सकारात्मक तटस्थता की नीति पर चलने का निश्चय किया। इस नीति में जहाँ गुटों में शामिल होने का विरोध था, वहाँ सार्वभौम निःशस्त्रीकरण के लिए तथा उपनिवेशवाद की समाप्ति के लिए साम्राज्यवादी संगठनों के विरुद्ध काम करना भी सम्मिलित था। इस नीति के निर्माण के लिए और विशेष रूप से राष्ट्रों की शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के पाँच सिद्धान्तों के निर्माण के लिए नेहरू का योगदान सर्वविदित है। शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के ये पाँच सिद्धान्त बाद मे अफ्रीका और एशिया के विभिन्न देशों के बीच सम्बन्धों का आधार बने।

जो देश उपनिवेशवादी गुलामी का जुआ उतार फेकने और स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहे थे, उनमे से अधिक से अधिक ने भारत की सकारात्मक तटस्थता की नीति का अनुसरण किया। खास बात यह हुई कि जो भी देश उपनिवेशवादी परतन्त्रता से अपने को मुक्त करते गये, उन सभी ने सकारात्मक तटस्थता की नीति को अपनी विदेशी नीति घोषित किया।

नेहरू बाडुग कान्फ्रेन्स के प्रस्तावकों और आयोजकों मे से एक थे। इस कान्फ्रेन्स ने एशिया और अफ्रीका के नवोदित राष्ट्रो के लिए एक स्वतन्त्र विदेश नीति का निर्माण किया।

सोवियत जनता नेहरू को एक असाधारण राजनीतिज्ञ, परम विद्वान्, मानवतावादी और दार्शनिक के रूप में ही नहीं, बल्कि गुटनिरपेक्षता की नीति के निर्माता से रूप मे और सोवियत संघ के एक सच्चे मित्र के रूप मे भी याद करती है।

सोवियत संघ और दूसरे समाजवादी राष्ट्रो के साथ मित्रता स्थापित करना भारत की विदेश नीति का एक आधारभूत सिद्धान्त है। इस नीति का निर्धारण और पालन जवाहरलाल नेहरू और उनके अनुगामियों द्वारा होता रहा है। इसका एक अच्छा उदाहरण ९ अगस्त, १९७१ को सोवियत समाजवादी गणतन्त्र संघ और भारत गणतन्त्र के बीच शान्ति, मित्रता और सहयोग की सन्धि पर हस्ताक्षर होना है। इस सन्धि ने दोनो देशों के सम्बन्धों को विकसित करने तथा आपसी सहयोग को बढ़ाने और साथ ही एशिया तथा पूरी दुनिया मे शान्ति कायम रखने के लिए सम्भावनाओं के नये द्वार खोल दिये है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के जनरल सेक्रेटरी लियोनिड ब्रेझनेव ने अपनी भारत यात्रा के दौरान नवम्बर १९७३ मे एक भाषण में कहा, "सोवियत संघ और भारत के प्रतिनिधि जो कि कई वर्षो से दोनों देशो के सम्बन्धों के रूप और प्रकार की पहचान मे लगे है, उनका कहना है कि हमारे इन दोनों देशों के सम्बन्ध शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के आदर्श सम्बन्ध है, यह कथन एकदम सही है। यह दो भिन्न प्रकार के सामाजिक ढाँचे के पड़ौसी देशों के बीच शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व है। यह निश्छल तथा उदार सहअस्तित्व शान्तिप्रियता मे से जन्मा है और दोनों देशों के लिए उपयोगी है।"[1]

१. एल. आई. ब्रेझनेव, अवर कोर्स : पीस एड सोशलिज्म, पार्ट-४, नोवस्ती प्रेस एजेन्सी पब्लिशिग हाउस, मास्को १९७४, पृष्ठ १२१।

## भारत का राष्ट्रीय नेता

इवान मायस्की
अकादीमीशियन, ब्रिटेन मे सोवियत सघ के भूतपूर्व राजदूत (१६३३-१९४३)

भारत के राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त करने के समय तक नेहरू और सोवियत नेताओ के आपसी सम्पर्को के बारे में सामग्री की खोज करते हुए हमने दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्मारक संग्रहालय को लिखा तो संग्रहालय के डिप्टी डायरेक्टर वी. एस. जोशी ने तुरन्त उत्तर दिया और ब्रिटेन मे सोवियत संघ के भूतपूर्व राजदूत इवान मायस्की को १० अक्तूबर, १९३८ को पत्र की फोटो प्रति भेज दी। पत्र इस प्रकार है :

"प्रिय नेहरू,

मुझे यह जानकर कि इस समय आप सोवियत संघ की यात्रा पर नही जा सकते, बहुत खेद हुआ; क्योंकि मुझे इस बात का पूरा-पूरा एहसास है कि इस यात्रा के लिए आप कितने उत्सुक थे। बहरहाल, मै आशा करता हूँ कि इस समय कारणवश जिस यात्रा को स्थगित करना पड़ा है, भविष्य में आप उसके लिए अवसर निकाल सकेंगे।

जनेवा में आपसे मिलकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई थी। उस भेंट की याद मेरे दिल मे हमेशा ताज़ा बनी रहेगी।

मै आशा करता हूँ कि अब तक आपकी बेटी और बहन यदि पूरी तरह स्वस्थ नहीं हुई होंगी तो काफी हद तक सँभल अवश्य गयी होंगी।

आपका

आई. मायस्की"[1]

अब प्रश्न उपस्थित होता है कि किन परिस्थितियों में जनेवा में भेंट हुई? इस बारे मे स्वयं नेहरू ने कुछ भी उल्लेख नही किया है। अपनी आत्मकथा में उन्होने रूस की यात्रा करने के अपने इरादे का कोई जिक्र नहीं किया, न ही इस बारे में इवान मायस्की से हुई भेंट का कोई उल्लेख किया। ऐसी स्थिति में हमारे पास इवान मायस्की के पास जाने और उनसे स्पष्टीकरण माँगने के अलावा कोई उपाय न रहा।

१. ए बन्च ऑफ ओल्ड लैटर्स, बम्बई १९५८, पृष्ठ २९१।

हम अकादीमिशियन मायस्की से उनके मास्को स्थित फ्लैट में मिले। उन्होने जो कुछ बताया, वह इस प्रकार है।

मैं याद करने की कोशिश करूँगा कि स्विट्जरलैंड में नेहरू से मेरी भेंट कैसे हुई। उस समय मै ब्रिटेन मे सोवियत राजदूत था। मेरे और नेहरू के बीच सम्पर्क अधिकारी नेहरू के प्रिय मित्र और उनके अनुगामी वी. के. कृष्णा मेनन थे। मै कृष्णा मेनन से विभिन्न समस्याओं पर विचार-विमर्श करने के लिए कई बार मिल चुका था। उन समस्याओ मे भारत और सोवियत संघ के जन-नेताओं और राज-नेताओं के आपसी सम्पर्क का प्रश्न भी था। नेहरू के साथ मेरे पत्र-व्यवहार को भी कृष्णा मेनन ही सँभालते थे। अब, लगभग चालीस साल बाद उस पत्र-व्यवहार की कथा को पूरी तरह याद कर पाना आसान नही है। मुझे याद है कि नेहरू ने सोवियत संघ की यात्रा करने की इच्छा प्रकट की थी और मैंने उनकी प्रस्तावित यात्रा के लिए समुचित प्रबन्ध करा दिये थे। लेकिन परिस्थितिवश और कुछ ऐसी कठिनाइयों के कारण जिन पर कि हमारा वश नहीं था, नेहरू अपनी उस यात्रा पर नही जा सके। जिस पत्र की प्रतिलिपि आपके पास है, उस यात्रा के रद्द हो जाने के सम्बन्ध मे लिखा गया था। ब्रिटेन में सोवियत राजदूत रहने के दौरान मै कई बार जनेवा गया। वही नेहरू से मेरी कई मुलाकातें हुई। इन मुलाकातों ने मुझे बहुत प्रभावित किया। उन दिनों नेहरू सोवियत संघ के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने और दोनों देशों के सम्बन्धो को विकसित करने के लिए कठोर परिश्रम कर रहे थे। आप आसानी से अनुमान लगा सकते है कि उन दिनो यह काम आसान नही था, जबकि भारत और सोवियत संघ के बीच किसी प्रकार के शासकीय सम्बन्ध नही थे और अंग्रेज अधिकारी भारत और सोवियत संघ के बीच सम्पर्क स्थापित न होने देने के लिए पूरी चेष्टा कर रहे थे।

मुझे एक घटना की याद आती है। भारत के एक संस्थान ने सोवियत विदेश व्यापार प्रतिनिधि के द्वारा रूस मे बनी टैक्सटाइल मशीनरी खरीदी थी। मशीन को लगाने के काम की देखभाल के लिए एक सोवियत इंजीनियर को भारत भेजा गया। लेकिन आश्चर्य कि वह इंजीनियर भारत में पहुँच नहीं सका। हमने ब्रिटिश अधिकारियो को लिखा और भारतीय संस्थान ने भी अनुरोध किया लेकिन अंग्रेज़ अधिकारियों ने कोई सन्तोषजनक जवाब नही दिया और इंजीनियर को भारत में प्रवेश करने का विसा देने से साफ इन्कार कर दिया। मुझे इसमें कतई शक नही है कि अंग्रेज़ी उपनिवेशवादी प्रशासन नेहरू को सोवियत देश आने से रोकता रहा। लेकिन नेहरू किसी भी किस्म के खतरे

की परवाह् किये बिना यूरोप में वामपन्थी ताकतों से सम्पर्क बनाये रहे और यहाँ तक कि सोवियत प्रतिनिधियो के सीधे सम्पर्क मे भी आये।

मै अपने को भाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे उस अद्भुत व्यक्ति जवाहरलाल नेहरू से मिलने के अवसर मिले। वह एक असाधारण राजनीतिज्ञ और सही मायनो मे भारत के राष्ट्रीय नेता थे। उन्हे यूरोप तथा एशिया की विभिन्न राजनैतिक शक्तियो के आपसी तालमेल और उनके बीच होने वाले संघर्षो की गहरी समझ थी। उन्होने उस समय अपने देश मे व्याप्त कठोर परिस्थितियो का अच्छी तरह जायजा लिया और सोवियत जनता से मैत्री सम्बन्ध स्थापित करने चाहे। हमारी आपसी बातचीत मे नेहरू ने बार-बार कहा कि एक बार फिर रूस जाने और १९२७ की उनकी पहली यात्रा के बाद वहाँ जो परिवर्तन हुए है, उन्हें देखने की उनकी हार्दिक इच्छा है। नेहरू समझते थे कि रूस की और भारत की जनता मे बहुत-सी बाते समान है और इन दोनों देशों की महान् जनता को एक-दूसरे के साथ शान्ति तथा मित्रता का व्यवहार रखना चाहिए।

## मैत्री का शिलान्यास

पावेल येरज़िन
भारत में सोवियत राजनयिक प्रतिनिधि (१९४७)

१९४७ में १४-१५ अगस्त के बीच की रात भारत के इतिहास मे एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना हुई। उस रात भारत स्वतन्त्र हो गया।

नवोदित भारत राष्ट्र को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में उसका समुचित स्थान दिलाने के लिए सोवियत संघ और दूसरे समाजवादी देशों के साथ भारत की मित्रता और आपसी सहयोग अपरिहार्य आवश्यकता बन गयी।

जैसे ही अंग्रेजी साम्राज्यवाद द्वारा उत्पन्न औपचारिक बाधाएँ समाप्त हुई; दोनों देशों के सम्मिलित प्रयत्नों से भारत और रूस के बीच दौत्य सम्बन्ध स्थापित हो गये।

नेहरू की बहन विजयलक्ष्मी पंडित सोवियत संघ में भारत की प्रथम राजदूत नियुक्त की गयीं। भारत में सोवियत संघ के प्रथम राजदूत एक प्रमुख राज-

नयिक के. वी. नोविकोव थे। उन्होंने नवम्बर १९४७ में अपना कार्यभार सँभाला।

मुझे भारत में सोवियत दूतावास के औपचारिक उद्घाटन में सम्मिलित होने और फिर लगातार पाँच वर्षों तक भारत के नेताओं तथा जनता के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों से मिलने के सुअवसर मिले।

मैं सोवियत राजदूत के आने से एक महीने पहले भारत आ गया था। मेरा काम तमाम आवश्यक प्रबन्ध करना और दूतावास के लिए तथा उसके कर्मचारियों के लिए उपयुक्त भवन की तलाश करना था। इस सम्बन्ध में भारत सरकार के अधिकारियों ने मेरी बहुत सहायता की। दिल्ली आने के अगले ही दिन मैं जवाहरलाल नेहरू से मिला। उन्होंने मुझे बताया कि भारत सरकार ने सोवियत दूतावास के लिए एक उपयुक्त भवन खोज लिया है और जल्दी ही बाकी स्थान की व्यवस्था भी कर दी जायेगी। राजदूत नोविकोव भारत आये तो वह यह देखकर बहुत खुश हुए कि दूतावास को भूतपूर्व त्रावणकोर नरेश के प्रतिनिधि का निवास-स्थान दिया गया था। यह भवन दिल्ली के सबसे सुन्दर भवनों में से एक है।

भारत की स्वाधीनता के प्रारम्भिक वर्षों में दिल्ली में राजनयिक शिष्टाचार उतना औपचारिक नहीं था। प्रधानमन्त्री विभिन्न विदेशी राजनयिक संगठनों अथवा राष्ट्रीय संगठनों द्वारा दी गयी प्रायः सभी दावतों मे सम्मिलित होते थे। इसके अलावा प्रायः रोज ही किसी न किसी वैज्ञानिक शोध संस्थान अथवा शैक्षणिक संस्थान का शिलान्यास होता रहता था। नेहरू ऐसे समारोहों में अवश्य सम्मिलित होते थे और उन अवसरों पर संक्षिप्त भाषण भी देते थे। हमें अक्सर उनसे अनौपचारिक रूप से मिलने का अवसर मिल जाता था। मुझे ऐसा कोई अवसर याद नहीं आता जब कि नेहरू ने सोवियत राजनयिकों से मिलकर यह न पूछा हो कि सोवियत दूतावास का कार्य कैसे चल रहा है और उनके सामने कोई कठिनाई तो नहीं है। वह सोवियत दूतावास द्वारा आयोजित किये जाने वाले हर समारोह में और हर दावत में अवश्य ही शरीक होते थे और जो भी सोवियत प्रतिनिधि मंडल भारत आते, स्वयं उनका स्वागत करते थे।

सोवियत दूतावास के कार्यकर्त्ता जब से भारत आये, तभी से उन्हें इस बात का पूरा-पूरा एहसास था कि भारतीय जनता सोवियत संघ के बारे में कितनी दिलचस्पी रखती है। जैसे ही समाचार पत्रों मे सोवियत राजनयिकों के भारत आने के समाचार प्रकाशित होने शुरू हुए, सोवियत दूतावास मे भारत के कोने-कोने से पत्र आने शुरू हो गये। हमारे भारतीय मित्रों ने अपने पत्रों में दोनों देशों

के बीच दौत्य सम्बन्ध स्थापित होने का स्वागत किया था और सोवियत जनता को समाजवादी निर्माण मे सफलता के लिए शुभकामनाएँ प्रकट की गयी थी। बहुत से पत्र सोवियत संघ के जन-जीवन के बारे मे जानकारी देने वाली फिल्म, फोटो और पैम्फलेट्स आदि भेजने के आवेदन के साथ समाप्त होते थे।

धीरे-धीरे सोवियत संघ और भारत के बीच आर्थिक सम्बन्ध विकसित हो रहे थे। आरम्भ में अधिकांशत. आदान-प्रदान के समझौते हुए। सोवियत सघ ने रासायनिक खाद, अखबारी कागज और कुछ औद्योगिक मशीनें भेजी। इनके बदले भारत ने अपनी परम्परागत निर्यात की वस्तुएँ चाय, रुई और जूट सोवियत संघ को दी।

१९५५ की गर्मियो मे जवाहरलाल नेहरू सोवियत संघ आये तो दोनो देशो के आपसी सम्बन्धो को एक व्यापक आधार और दृढता मिली। उसके बाद दोनों देशों की सरकारो के प्रतिनिधि नियमित रूप से एक-दूसरे के देशों में जाते रहे है।

## नेहरू से चन्द मुलाकातें

मिखाइल मेनाशीकोव
भारत में सोवियत राजदूत (१९५३-५७)

मैने १९५३ मे भारत में सोवियत राजदूत का कार्यभार सँभाला। दिल्ली जाने वाला मेरा वायुयान कुछ देर के लिए बम्बई रुका तो वहाँ सबसे पहले मेरी भेंट 'भारत-सोवियत सास्कृतिक समिति' के कार्यकर्त्ताओं से हुई। वे बधाइयाँ और शुभकामनाएँ, लोगों का हाथ मिलाना और उनकी फूलमालाएँ मुझे आज भी याद हैं।

भारत के बाढ़-पीडितों की सहायता के लिए सोवियत संघ की रेड क्रास तथा रेड क्रीसेंट सोसायटियो की कार्यकारिणी समिति की ओर से मुझे २५०,००० रूबल का एक चेक नेहरू को भेंट करने का निर्देश दिया गया था। चेक स्वीकार करने के पश्चात् नेहरू ने धन्यवाद दिया और बताया कि प्रायः हर साल देश का काफी बडा हिस्सा सूखे और बाढ़ से और कभी-कभी भयानक तूफानों तथा भूकम्पों से कुप्रभावित होता है, इस कारण देश की आर्थिक दशा और भी

बिगड़ गयी है। सरकार इस समस्या की विकरालता के प्रति पूरी तरह सावधान है लेकिन प्राकृतिक विपदाओं का सामना करने के लिए हमारे पास साधनों की कमी है।

नेहरू ने मुझे परामर्श दिया कि मैं देश की यात्रा करूँ। भारत के बारे में बहुत से लोगो ने लिखा है और उन लोगों में एक मै भी हूँ, नेहरू ने मुस्कराते हुए कहा, लेकिन बेहतर यह है कि स्वयं देश को देखा जाये और सीधे उसके लोगों से मिला जाये।

मै नेहरू के परामर्श के अनुसार चला और उनके प्रति आभार स्वीकार किया। मैने 'अपने' भारत की खोज की—ऐसे भारत की खोज जो अपने सौन्दर्य मे अनुपम है और जिसके लोग बहुत मेहनती और मिलनसार है।

यह ऐसा समय था जब कि उपनिवेशवादियों ने एक तरफ तो स्वतन्त्र भारत की सत्ता को स्वीकारने से इनकार कर दिया था और दूसरी तरफ उसकी आर्थिक कठिनाइयों का शोषण करके अपना प्रभाव कायम रखने की कोशिश कर रहे थे। नेहरू ने अपने देश की स्वतन्त्र विदेश नीति में सोवियत संघ के साथ मैत्री को एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया।

हमारे दोनों देशो के मैत्री सम्बन्ध हर साल विकसित हो रहे थे। नेहरू से मेरी पहली भेंट के लगभग एक मास पश्चात् दिसम्बर १९५३ मे सोवियत संघ और भारत के बीच पहला पंचवर्षीय व्यापारिक समझौता हुआ। उसके बाद कई समझौते हुए। इन समझौतो में भिलाई में भारत के प्रथम इस्पात कारखाने का निर्माण, इंजीनियरिंग के भारी सामान बनाने के कारखाने का निर्माण, खदानो के संयंत्र बनाने के कारखाने का निर्माण, चश्मों के शीशे बनाने के कारखाने के निर्माण और कोरबा के कोयला क्षेत्र में कोयला खनन की सुविधाएँ प्रस्तुत करने के समझौते सम्मिलित हैं। सूरतगढ़ के सरकारी कृषि फार्म को सोवियत सहायता से विकसित करने के लिए समझौता हुआ और एक समझौता नवेली में ताप विद्युत केन्द्र बनाने के लिए हुआ। सोवियत विशेषज्ञों ने भूगर्भ सर्वेक्षण करने और देश का तेल उत्पादन बढ़ाने मे अपने भारतीय मित्रों की सहायता की। भारत और सोवियत संघ के बीच नियमित वायु सेवा तथा समुद्री यात्री सेवा आरम्भ की गयी।

इन तमाम विकास कार्यो में नेहरू व्यक्तिगत रुचि लेते थे, नियमित रूप से आवश्यक विचार-विमर्श करते रहते थे और जहाँ कहीं कठिनाई पैदा होती, उसे दूर करने की पूरी कोशिश करते थे।

इन वर्षों में हमारे दोनों देशों के बीच वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक आदान-

प्रदान भी हुआ। दर्जनों सोवियत प्रतिनिधि मंडल भारत आये और समाजवादी निर्माण में सोवियत संघ की उपलब्धियों को चित्रित करने वाली तरह-तरह की प्रदर्शनियो के आयोजन किये गये। ठीक ऐसा ही भारत ने भी किया। नेहरू ने इस आदान-प्रदान की बहुत सराहना की और इसे प्रोत्साहित किया। इसका सबसे अच्छा प्रमाण यह है कि वे भारत आने वाले प्रायः सभी सोवियत प्रतिनिधियो से मिलते रहे।

सोवियत संघ के साथ मित्रता की अपनी नीति के कारण नेहरू को कभी-कभी विरोध का सामना भी करना पड़ा। वास्तविकता यह थी कि दोनों देशों के व्यापक हितो पर आधारित एकता के पीछे जो सूझ थी, भारत में कुछ लोग उसे शक की नजर से देखते थे। कभी-कभी तो उनका विरोध बहुत खुले रूप में सामने आता। हालाँकि नेहरू नियमपूर्वक सरकार के अपने सहयोगियों के तर्कों को बहुत गौर से सुनते थे और आधारभूत महत्त्व के मामलों में प्रायः उनके रचनात्मक सुझावो और समीक्षा को स्वीकार भी कर लेते थे। भारत-सोवियत सम्बन्ध भी निश्चित रूप से एक ऐसा ही मामला था। नेहरू अटल और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति थे। वह अपनी देख-रेख में भारत-सोवियत सम्बन्धों को निकटता लाने के उपायों पर अमल कराते रहे और प्रायः भारत-सोवियत मैत्री के विरोधियों के अतिरिक्त उत्साह को भी ठंडा करते रहे।

मुझे याद है कि भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अनेक बार कहा था कि जवाहरलाल नेहरू भारत के विकास के लिए समाजवादी रास्ते को स्वीकार कर सोवियत संघ के साथ मैत्री सम्बन्ध घनिष्ठ बनाने के लिए कटिबद्ध है।

नेहरू बच्चों को बहुत प्यार करते थे। इसी प्रकार बच्चे भी उन्हें प्यार करते थे। भारत के बच्चों के लिए उनका जन्म दिन १४ नवम्बर एक पावन त्यौहार बन गया। बहुत से अवसरों पर नेहरू ने मुझे अन्तर्राष्ट्रीय बाल चित्र-कला प्रदर्शनी के विजेता रूसी बालको के लिए उपहार दिये।

नेहरू सौन्दर्य के प्रशंसक और प्रकृति-प्रेमी थे। उनकी सांस्कृतिक अभिरुचि कई दिशाओं में फैली थी। विशेष रूप से वह राष्ट्रीय नृत्यों और शास्त्रीय संगीत में रुचि रखते थे। यदि समय इजाजत देता तो वह भारत आने वाली रूसी बैले कम्पनियों के प्रदर्शनों को अवश्य ही देखते।

भारत में मेरे कार्यकाल के चार वर्षों में मुझे अपने देश के राजनयिक प्रतिनिधि के रूप मे नेहरू के व्यक्तिगत मैत्रीपूर्ण सद्व्यवहार को पाने का सौभाग्य मिला। जब कभी कोई तात्कालिक महत्त्व की समस्या सामने हुई तो

नेहरू ने दिन अथवा रात की चिन्ता किये बिना मुझे तुरन्त समय दिया। नेहरू कोई रिपोर्ट सुनने अथवा कोई आवश्यक पत्र पढ़ने के बाद तुरन्त अपना उत्तर दे देते थे या फिर विचाराधीन विषय के बारे में उनकी जो राय बनती थी उसे स्पष्ट बता देते थे।

नेहरू मे १७-१८ घंटे प्रतिदिन काम करने की असाधारण क्षमता थी। वह कभी छुट्टियाँ नहीं लेते थे। एक दिन मैंने उनसे पूछा, "प्रधानमन्त्री महोदय, अपने स्वास्थ्य के प्रति इस हद तक क्रूर होना कहाँ तक उचित है ?" नेहरू ने मजाक के अन्दाज में जवाब दिया कि अगर काम दिलचस्प हो जैसा कि मेरा काम प्रायः होता है, तो वह खुद ही आराम देने वाला बन जाता है। नेहरू अपने सिद्धान्तों के प्रति आखिर तक वफादार रहे और अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक लगातार काम करते रहे।

## भारत का महान् सपूत

इवान बेनेदिक्तोव

भारत में सोवियत संघ के राजदूत (१९५८-६७), सोवियत-भारत सांस्कृतिक सम्बन्ध समिति के उपाध्यक्ष

भारत गणतन्त्र में सोवियत राजदूत के मेरे कार्यकाल के दौरान मुझे नेहरू से महत्त्वपूर्ण राजनैतिक प्रश्नों पर विचार-विमर्श करने के लिए औपचारिक रूप से और उनके निवास-स्थान पर अनौपचारिक रूप से मिलने के बहुत से अवसर मिले।

ऐसे हर अवसर पर मै इस असाधारण राजनीतिज्ञ की गहरी राजनैतिक सूझबूझ और साथ ही दुर्लभ विनम्रता को देखकर चमत्कृत हुए बिना न रह सका। नेहरू में चीजों को परखने वाली तीक्ष्ण बुद्धि और साथ ही हल्की विनोदप्रियता भी थी। वह बच्चो को बहुत प्यार करते थे। वह अपने बटन-होल में नियमपूर्वक जो लाल गुलाब लगाते थे, वह उनके प्रकृति-प्रेम का सूचक था।

नेहरू के मन में अपने देश और उसके निवासियों के प्रति गहरा और अटूट

प्रेम था। उन्होंने अपना पूरा जीवन उपनिवेशवादी आतंक से मुक्ति पाने के भारतीय जनता के संघर्ष में और फिर युवा भारतीय गणतन्त्र की राजनैतिक तथा आर्थिक स्वतन्त्रता को मजबूत करने में लगा दिया।

अपने देशवासियो के प्रति नेहरू का प्रेम उन यात्राओ में खुलकर प्रकट होता था जो कि विभिन्न औद्योगिक परियोजनाओं और बाँधों, स्कूलों और प्रयोगशालाओं का शिलान्यास करने के लिए या फिर वैज्ञानिक अनुसन्धान केन्द्रों अथवा सिंचाई परियोजनाओं के उद्‌घाटन के सिलसिले में होती थी। इन यात्राओं के दौरान नेहरू अपने देश के हजारों लोगों से मिलते और उनके साथ खुलकर बातचीत करते। वे लोग नेहरू को हार्दिक मान और प्यार देते थे।

महान् प्रतिभा, गहरी सूझ-बूझ और काम करने की असाधारण क्षमता के बल पर नेहरू उस उलझी हुई प्रक्रिया को ठीक प्रकार समझ सके जो कि भारतीय समाज में काम कर रही थी। वह रूस की महान् अक्तूबर क्रान्ति की उपलब्धियो की बहुत सराहना करते थे। सोवियत जनता समाजवादी समाज के निर्माण के लिए जो साहसिक प्रयत्न कर रही थी, नेहरू ने बहुत तल्लीनता और सहृदयता के साथ उनका अनुसरण किया। उन्होने लिखा है कि यदि भविष्य आशाएँ जगाता है तो इसके लिए सबसे पहले रूस को धन्यवाद देना होगा। धन्यवाद—उस सबके लिए जो कि उसने दुनिया के लिए किया है।

भारत और रूस की मित्रता को प्रगाढ बनाने के लिए नेहरू के मन में वहुत उत्साह था। वह अच्छी तरह जानते थे कि भारत सरकारी क्षेत्र में भारी उद्योग तथा शक्ति उत्पादन केन्द्र स्थापित करके ही वास्तविक आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकता है, इसीलिए उन्होंने इस्पात और भारी इंजीनियरिंग के कारखाने लगाने, कोयले और तेल की खोज के प्रतिष्ठान बनाने और विद्युत् उत्पादन केन्द्र स्थापित करने में सोवियत संघ के सहयोग को वहुत महत्त्व दिया।

सोवियत जनता नेहरू को एक ऐसे दूरदर्शी राजनीतिज्ञ के रूप में याद करती है, जिसने कि राष्ट्रों में आपसी विश्वास कायम करने और शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व तथा गुटनिरपेक्षता की नीति को अमल मे लाने के लिए बराबर प्रयत्न किया। उन्होंने बार-बार कहा कि भारत इस बात का ख्याल किये बिना कि किस देश में कैसी सामाजिक व्यवस्था है, सभी देशों के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाकर ही अपनी स्वतन्त्रता को कायम रख सकता है। नेहरू द्वारा प्रतिपादित गुटनिरपेक्षता की नीति को सोवियत संघ द्वारा स्वीकृति और समर्थन प्राप्त हुआ।

सैनिक-बन्दियों की समस्या, एशिया में सामूहिक सुरक्षा, सम्पूर्ण निःशस्त्री-

करण, उपनिवेशवाद और नस्लवाद के दुष्प्रभावों को समाप्त करना आदि हमारे समय की महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर नेहरू द्वारा निर्देशित भारत के जो विचार थे, वे सोवियत संघ के विचारों के समानान्तर या फिर उनके काफी नजदीक रहे। इसलिए हमें पूरा विश्वास है कि नेहरू द्वारा स्थापित भारत-सोवियत मैत्री और उनके बीच हर प्रकार का सहयोग समय के साथ-साथ और अधिक विस्तृत तथा दृढ होता चला जायेगा। साथ ही नेहरू का नाम उन लोगों के दिलों में हमेशा बना रहेगा, जो कि शान्ति, सामाजिक न्याय और प्रगति मे विश्वास रखते हैं।

# नेहरू और सोवियत-भारत आर्थिक सहयोग

"इसमें कोई शक नही कि सोवियत संघ के साथ हमारी मित्रता और सहयोग से हमे काफी मदद मिली है। और यह मदद केवल हमारे आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र में ही नहीं है। इस मित्रता और सहयोग से हमारे सोच-विचार का क्षितिज और अधिक विस्तृत हो गया है। दुनिया मे जो कुछ हो रहा है, अब हम उसे बेहतर ढंग से समझने में समर्थ हो गये है। खास तौर से हम वैज्ञानिक और आर्थिक सहायता का स्वागत करते हैं···सोवियत जनता की भारत के प्रति सद्भावनाओं की हम बहुत कद्र करते हैं।"

'प्रावदा' के एक सम्वाददाता को जनवरी १९६३ में भारत के गणतन्त्र दिवस के अवसर पर दिये गये एक इंटरव्यू से (सोवियत लैंड, १९६४, संख्या-२२)

भारत की राष्ट्रीय स्वाधीनता के आन्दोलन के नेताओं मे सबसे पहले जवाहरलाल नेहरू ने महसूस किया था कि आज की दुनिया में किसी भी देश की और विशेष रूप से भारत की आर्थिक तथा सामाजिक प्रगति तब तक सम्भव नहीं है, जब तक जनहित को ध्यान में रखते हुए शासन स्वयं उस प्रगति का संयोजन तथा निर्देशन अपने हाथ में न ले ले।

भारत की अर्थनीति में सरकारी क्षेत्र का उदय नेहरू की इस मान्यता के कारण सम्भव हुआ कि सरकार को स्वयं उद्योगों का संयोजन करना चाहिए,

आर्थिक विकास के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साधनों पर सीधे सरकार का कब्जा होना चाहिए, देश की विशाल जनता के लिए वस्तुओ तथा सेवाओं के वितरण मे तथा उसे आर्थिक एवं सामाजिक न्याय दिलाने मे सरकार को निर्णायक भूमिका अदा करनी चाहिए।

नेहरू द्वारा १६३०-३४ के बीच जेल की कोठरी से अपनी बेटी इन्दिरा के नाम लिखे गये पत्र, जो कि वास्तव मे भारत की जनता के नाम लिखे गये थे, उनसे प्रकट है कि नेहरू पहले भारतीय थे, जिन्होने कि देश के आर्थिक नियोजन की सम्भावना और व्यावहारिकता का पक्ष-पोषण किया।

६ जुलाई, १६३३ के पत्र मे नेहरू ने लिखा, "पंचवर्षीय योजना ने रूस का नक्शा पूरी तरह बदल दिया है। वह एक सामन्तवादी देश से अचानक एक विकसित औद्योगिक देश मे बदल गया है। वहाँ एक चमत्कारिक सांस्कृतिक प्रगति हुई है। वहाँ की नागरिक सेवाएँ, सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ और दुर्घटनाओ के बीच की व्यवस्था पूरी दुनिया मे अपना सानी नही रखती। यह ठीक है कि कुछ चीजो का अभाव अभी भी वहाँ है लेकिन बेरोजगारी और भुखमरी का भयावह खतरा, जो कि अन्य देशो के मजदूरों के सिर पर अभी भी लटक रहा है, वहाँ पूरी तरह समाप्त हो गया है।"[1] नेहरू आगे लिखते है, "पंचवर्षीय योजना की सफलता के बारे मे सन्देह करना व्यर्थ है। इसका सही उत्तर सोवियत संघ की मौजूदा स्थितियाँ है। और एक दूसरा उत्तर यह सत्य है कि इस योजना ने पूरी दुनिया की कल्पनाओं को प्रभावित किया है। आज हर कोई 'योजनाओ' के बारे में—पंचवर्षीय, दसवर्षीय, त्रिवर्षीय योजनाओं के बारे मे बात कर रहा है। सोवियत लोगो ने दुनिया में जादू भर दिया है।"[2] इन शब्दों मे नेहरू सोवियत संघ की पहली पचवर्षीय योजना के अपने विश्लेषण का समापन करते हैं।

भारत के राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के काफी पहले ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपनी आर्थिक नियोजन समिति बना दी थी।

इसीलिए भारत के स्वाधीनता प्राप्त करने के कुछ ही समय बाद १६५० में राष्ट्रीय नियोजन आयोग संगठित किया गया तो यह कोई आश्चर्य की बात नही थी। नेहरू की निजी देख-रेख में आयोग ने देश के आर्थिक विकास की पहली पंचवर्षीय योजना का प्रारूप तैयार किया। उन दिनों के अपने भाषणों में नेहरू ने आर्थिक नियोजन को एक नयी शुरुआत माना। उनके अनुसार

१. ग्लिपसिज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री, लन्दन, १६४६, पृष्ठ ८५६-८५७।

२. वही, पृष्ठ ८५७।

आधारभूत उद्योगों का संयोजित एवं सम्यक् विकास आर्थिक नियोजन की पहली शर्त थी। यह विकास नये भारत की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति के हित मे यहाँ सहज-सुलभ पदार्थो तथा मानव शक्ति के साधनों को ध्यान में रखते हुए दृढ वैज्ञानिक आधार पर स्वयं सरकार द्वारा एक राष्ट्रीय कार्यक्रम के अधीन किया जाना चाहिए।

बहुत से देशों के आर्थिक विकास का सूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् नेहरू इस नतीजे पर पहुँचे कि यदि भारत को कठोर संघर्ष के बाद प्राप्त की गयी अपनी आजादी को बनाये रखना है और अपने आर्थिक तथा सामाजिक विकास की मजबूत आधारशिला रखनी है तो उसे एक आधुनिक राष्ट्रीय उद्योग के विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए। जब नेहरू राष्ट्रीय उद्योग का जिक्र करते थे तो जाहिर है कि उनका मतलब भारी उद्योग से होता था। इस सम्बन्ध में दूसरी पंचवर्षीय योजना का प्रारूप तैयार करने वाली काउंसिल ऑफ नेशनल डेवलपमेंट के अधिवेशनों मे दिये गये उनके भाषण उल्लेखनीय हैं। नेहरू ने कहा, "अगर हम भारत का औद्योगीकरण और उसका विकास चाहते है—और ऐसा हम सचमुच चाहते है—तो हमे भारत का सही मायनों में औद्योगीकरण करना चाहिए। हमें एक ऐसी मजबूत नीव रखनी चाहिए जिस पर कि औद्योगिक भारत का ढाँचा खड़ा किया जा सके। तात्पर्य यह कि हमें भारी उद्योगों के विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए।"[1]

नेहरू द्वारा बनायी गयी और अमल में लायी गयी नियोजित अर्थ नीति में देश के आर्थिक विकास के आधार के रूप में राष्ट्रीय भारी उद्योग का विकास करना मूलभूत सिद्धान्त था। नेहरू का विश्वास था कि औद्योगीकरण शक्ति-साधनों के मजबूत आधार पर खड़ा होना चाहिए इसीलिए विद्युत् शक्ति का उत्पादन बढ़ाने के कार्यक्रम को प्राथमिकता दी गयी।

आर्थिक क्षमता की दृष्टि से आज भारत दुनिया के पहले दस देशों मे से एक है। अब भारत के पास जल विद्युत् तथा ताप विद्युत् उत्पादन के आधुनिकतम केन्द्र, लोहे और इस्पात के विशाल कारखाने, भारी इंजीनियरिंग उद्योग के कारखाने, अणुशक्ति उत्पादन संस्थान और इलेक्ट्रोनिक उद्योग हैं। भारत यह प्रगति कर सका इसका प्रारम्भिक श्रेय समाजवादी देशो और विशेष रूप से सोवियत संघ के आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग को जाता है। इस सहयोग का साक्षात प्रमाण ७० से ऊपर औद्योगिक कारखानों का निर्माण है,

१. कॉमर्स, बम्बई, जनवरी २८, १९५६, पृष्ठ १५८।

जिनमें से ५० से ऊपर कारखाने सोवियत सहयोग से लगाये गये हैं।

अभी भी भारत के उद्योग और कृषि के सामने कुछ ऐसी समस्याएँ है, जिन्हे कि हल किया जाना है। फिर भी किसी भी तटस्थ पर्यवेक्षक के लिए यह बात साफ हो गयी है कि भारत ने आजादी के बाद के वर्षो मे जितनी प्रगति की है, उतनी प्रगति पिछली पूरी दो शताब्दियों मे भी नही की थी।

भारत और सोवियत सघ के बीच आर्थिक सहयोग का सूत्रपात २ फरवरी, १९५५ को दिल्ली मे दोनो देशो की सरकारो के प्रतिनिधियों के बीच हुए एक समझौते पर हस्ताक्षर होने से हुआ। समझौते के अनुसार भिलाई मे १,०००,००० टन वार्षिक उत्पादन की क्षमता का एक इस्पात कारखाना लगाया जाना था। नेहरू की दृढ़ इच्छा और औद्योगिक रूप से विकसित तथा समृद्ध भारत के भविष्य में विश्वास और साथ ही सोवियत संघ की अपने पड़ौसी मित्र की सहायता करने की ललक ने मिलकर भिलाई कारखाने के निर्माण के निर्णय को सम्भव बनाया।

नेहरू की यह धारणा पूरी तरह सही थी कि किसी देश के औद्योगिक विकास के लिए इस्पात और शक्ति आधारशिला का काम करते है। वह बार-बार कहते थे कि अगर भारत को अपनी राजनैतिक आज़ादी और एक राष्ट्र के रूप मे अपनी सत्ता को कायम रखना है तो उसे आर्थिक निर्भरता प्राप्त करने के लिए पूरी-पूरी चेष्टा करनी पड़ेगी।

नेहरू समय-समय पर भिलाई नगर जाकर भिलाई परियोजना की प्रगति को निकट से देखते रहे। उन्होंने दिसम्बर १९५७ मे सबसे पहले भिलाई का दौरा किया। उस समय कारखाने का निर्माण-कार्य आरम्भ ही हुआ था।

दो वर्ष बाद एक बिलेट मिल के कार्य आरम्भ करने के अवसर पर नेहरू ने शुभकामना-सन्देश भेजा, जिसमें लिखा था, "भिलाई इस्पात कारखाने की यह निरन्तर प्रगति बहुत उत्साहवर्धक है और सोवियत तथा भारतीय इंजीनियरों के आपसी सहयोग की प्रतीक है। सोवियत संघ मे प्रशिक्षित बहुत से भारतीय इंजीनियर इन मिलों का संचालन करते रहेंगे। मै इस संस्थान की सफलता के लिए भिलाई कारखाने मे काम करने वाले सभी लोगों और विशेष रूप से सोवियत तथा भारतीय इंजीनियरों को बधाई देता हूँ।"[1]

अक्तूबर १९६० मे एक रेल तथा स्ट्रक्चरल स्टील मिल के कार्य आरम्भ करने के अवसर पर अपनी दूसरी भिलाई यात्रा के दौरान नेहरू ने एक विशाल

१. सोवियत लैंड, १९६४, संख्या २३-२४।

जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा, "भिलाई इस्पात कारखाना दो बड़े देशों के आपसी सहयोग का एक अनोखा उदाहरण है। पिछले कुछ समय से सोवियत रूस के अनुभवी इंजीनियर यहाँ रहकर हमें महत्त्वपूर्ण सहयोग देते रहे है। हमारे युवा इजीनियर प्रशिक्षण के लिए रूस गये। इससे भी कारखाने की स्थापना में बडी सहायता मिली है। दो राष्ट्रों के मैत्री सम्बन्ध मजबूत करने के सचमुच बहुत फायदे है।"[1] नेहरू ने फरवरी १६६२ मे भिलाई की तीसरी यात्रा की। इस अवसर पर उन्होने कहा कि वह जब भी भिलाई आते है, तभी नयी वर्कशापों, नये उत्पादनो और अनुभव से निपुण हो गये नये लोगो को देख कर बहुत प्रसन्न होते है। उन्होंने भिलाई को भारत तथा सोवियत संघ के आपसी सहयोग का प्रतीक बताया।

आज भिलाई कारखाना देश के कुल उत्पादन का एक-तिहाई इस्पात तैयार कर रहा है। नवम्बर १६७३ मे सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के जनरल सेक्रेटरी लियोनिद ब्रेझनेव भारत यात्रा पर आये तो भिलाई कारखाने की क्षमता को ७,०००,००० टन इस्पात का उत्पादन प्रतिवर्ष तक पहुँचाने के लिए एक समझौता हुआ।

भिलाई कारखाना सोवियत सहायता से लगाया जाने वाला पहला बड़ा औद्योगिक संस्थान था। इसने दो भिन्न-भिन्न सामाजिक व्यवस्थाओ के देशों के सहयोग—दोनों पक्षो के आपसी हितो—और पूरी बराबरी पर आधारित सहयोग—की सफलता की व्यापक सम्भावनाओं को स्पष्ट कर दिया है।

भिलाई कारखाने का निर्माण-कार्य पूरा हो जाने के बाद भारत की आर्थिक आत्मनिर्भरता को मजबूत बनाने के लिए मशीनों के निर्माण, शक्ति उत्पादन, तेल निकालने, कोयले की खदानों का विकास करने और औषधि निर्माण तथा कृषि आदि विभिन्न क्षेत्रों में सोवियत संघ ने मित्रतापूर्ण सहयोग दिया।

१. सोवियत लैंड, १६६४, संख्या २३-२४।

# भिलाई—भारत के भविष्य का प्रतीक-चिह्न

वेनियामिन दीमशित्स
सोवियत संघ की मन्त्री परिषद् के उपाध्यक्ष,
भिलाई इस्पात कारखाने के चीफ इंजीनियर
इंचार्ज (१९५७-५९)

भिलाई इस्पात कारखाने के निर्माण-स्थल पर और दिल्ली में औपचारिक अवसरों पर नेहरू से मेरी बहुत-सी मुलाकातें हुई। वह मुझे हमेशा एक ऐसे व्यक्ति के रूप में याद रहेंगे जिसने कि अपने देश के अनेको लोगो को उभारने और भारत-सोवियत मैत्री को स्थापित करने तथा उसे दृढ़ करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

विशेष रूप से नेहरू की दिसम्बर १९५७ के मध्य की भिलाई यात्रा मुझे याद है। इस अवसर पर उन्होने पूरे निर्माण-स्थल का दौरा किया था। उनकी उपस्थिति में ओपन हर्थ वर्कशाप का पहला स्तम्भ खड़ा किया गया था और उसी समय रोलिंग मिल्स के पहले खंड की स्थापना की गयी थी। उन्होने विशाल निर्माण-स्थल के हर हिस्से में पूरी रुचि ली। मैटल स्ट्रक्चर्स शॉप में उनसे अनुरोध किया गया कि वह पिछले दिनों स्थापित की गयी शीट मैटल कटिंग मशीनों में से पहली को स्विच दबाकर चालू करने का अनुग्रह करें। शॉप का निर्माण-कार्य उस समय तक पूरा नही हुआ था। असल में उस समय शॉप के ऊपर छत भी नही थी और सूरज की लपलपाती किरणें सीधी पड रही थी। नेहरू ने पूछा कि उष्ण जलवायु में सोवियत इंजीनियर यहाँ खड़े होकर कैसे काम कर पाते हैं? इंजीनियर एन. बी. लोबोत्सकी जो वहीं मौजूद थे, उन्होंने उत्तर दिया कि गर्म जलवायु के भी अपने फायदे है। इंजीनियर ने आगे कहा—असल में जब शॉप का निर्माण-कार्य चल रहा था और कुछ हिस्सों की स्थापना पूरी हो चुकी थी तो हमने उन हिस्सों को चालू कर दिया था, ताकि जब तक पूरी शॉप चालू हो, उस समय तक काफी मात्रा में उत्पादन किया जा सके।

भिलाई में निर्माण-कार्य आरम्भ होने के पहले दिन से ही हमें बराबर एहसास बना रहा कि नेहरू को इस बात का ख़याल है कि हमारी आवश्यकताएँ समय से पूरी होती रहें। हालाँकि हमारे सहयोगी इस बारे में सतर्क थे कि नेहरू की दिलचस्पी का फायदा न उठावें, फिर भी उनमें से कुछ ने नेहरू से

ऐसी समस्याओं के बारे मे बातचीत की जिनका निर्माण-कार्य की प्रगति पर प्रभाव पड़ रहा था। खास तौर मे विशाखापट्टनम बन्दरगाह पर सोवियत मशीनों को उतारने में जो समस्या आ खड़ी हुई थी, उसे हल कराने मे नेहरू की सहायता के लिए निर्माणकर्त्ता बहुत आभारी हुए। एक बार उन्होने सुझाव दिया कि भिलाई के लिए मशीनें लाने वाले जहाजो मे से कुछ को बम्बई और कलकत्ता की तरफ मोड दिया जाये। इस सुझाव को अमल मे लाने से मशीनें निर्माण-स्थल पर बहुत तेजी से पहुँचने लगी और काम की स्थिति में बहुत बड़ा सुधार आ गया।

बाद मे १००,००० के विशाल जन-समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि जब तक भारत के पास अपने भारी उद्योग नही होंगे तब तक वह तरक्की नहीं कर सकता। यह ठीक है कि भारत के खेतों की सिंचाई होनी चाहिए, लेकिन सिंचाई के लिए जरूरी है कि हम बांध बनाये, विद्युत् गृह बनायें और औद्योगिक कारखाने लगायें। इन सबको बनाने के लिए लोहे और इस्पात की जरूरत है। नेहरू ने आगे कहा—भारत के पास बहुत अच्छे किस्म के कच्चे लोहे का बहुत बड़ा भंडार है लेकिन अभी पिछले कुछ समय तक यह सम्पदा सही मायनों मे बेकार पड़ी थी। अब एक बड़ा इस्पात कारखाना लगाया जा रहा है। यह कारखाना भारत के भविष्य की ओर इशारा करता है। उन्होने आगे कहा—कितनी भी दिक्कतें क्यों न आयें, भारत के लोगों को अपने लोहे और इस्पात के उद्योग का विकास करने के लिए भरपूर चेष्टा करनी चाहिए। सोवियत विशेषज्ञ भारतीयों की बहुत सहायता कर रहे है। उन्हें प्रशिक्षण दे रहे हैं और तकनीकी जानकारी तथा अपने अनुभवों मे भागीदार बना रहे हैं। इसके लिए हम उनके आभारी हैं। नेहरू ने आगे कहा—भारतीय इंजीनियरों और कर्मचारियों के लिए यह परम महत्त्व की बात है कि इस समय वे अपने उद्योग का विकास स्वयं करने का प्रशिक्षण प्राप्त कर लें।

भिलाई से विदा होने से पहले नेहरू ने कहा, "जो कभी एक सपना था, अब वह शक्ल ले रहा है और एक सचाई बनता जा रहा है। भिलाई भारत के भविष्य का प्रतीक-चिह्न है।"[1]

१९६५ और १९७० में सोवियत-भारत आर्थिक सहयोग की दसवीं और पन्द्रहवीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में मुझे सोवियत सरकार के प्रतिनिधि मंडलों का नेतृत्व करने के अवसर मिले। दूसरी परियोजनाओं को देखने के साथ मैं दोनों

१. सोवियत लैंड, १९६४, संख्या १२।

ही बार भिलाई इस्पात कारखाने को देखने भी गया। वहाँ मेरे जीवन के दो सदा याद रहने वाले वर्ष गुजरे थे। मेरी दूसरी यात्रा के दौरान जब मै बाइ प्रोडक्ट कोक सैक्सन्स को देखने गया तो मुझे वहाँ ईरान से आये विशेषज्ञों के एक दल को देखकर बहुत खुशी हुई। यह ईरानी दल भिलाई कारखाने में आॅन-द-जाॅब ट्रेनिग कोर्स पर आया हुआ था। इस रोचक तथ्य से प्रकट हो गया कि जैसे-जैसे कारखाने का विस्तार हुआ, उसे चलाने वाले लोग भी आगे बढ़े। लोहे और इस्पात के पेचीदा संयन्त्रों का संचालन करते हुए उन्हें दूसरे देश के सहयोगियों से जो अनुभव प्राप्त हुए थे, अब वे उन अनुभवों में अन्य देश के लोगों को भागीदार बनाने के लिए तैयार थे। मै जानता हूँ कि अगर आज नेहरू होते तो वह उन भारतीय इंजीनियरों से बहुत खुश होते और उन पर गर्व करते जिन्होंने कि कारखाने के उत्पादन को निरन्तर बढाया है और अब यह कारखाना भारत के लौह तथा इस्पात उद्योग का मुख्य केन्द्र बन गया है।

## नये भारत के नये तीर्थ

निकोलाई गोल्डिन
भारी उद्योग निर्माण के मन्त्री, भिलाई इस्पात, कारखाने के चीफ इजीनियर इंचार्ज(१६५६-६१) १६७० से सोवियत-भारत सांस्कृतिक सम्बन्ध समिति के अध्यक्ष

नेहरू की भिलाई यात्राओं के दौरान या जब कभी मुझे किसी काम के सिलसिले में दिल्ली जाना पड़ा तो बहुत बार उनसे मिलने का सुअवसर मिला। उन मुलाकातों में हुई बातचीत से मैं उनके लग्नशील मस्तिष्क और खुले विचारों का प्रशंसक बन गया। इन वर्षो मे विभिन्न राजनैतिक विचारधारा के समाचार पत्र उनके 'अभूतपूर्व प्रयोग' पर विस्तृत टिप्पणियाँ लिख रहे थे। ऐसे समय जब कि शीत युद्ध अपने शिखर पर था और पश्चिम के कुछ देश नेहरू की सकारात्मक तटस्थता की नीति को एक शर्मनाक नीति कहकर खारिज करने की कोशिश कर रहे थे, यह नेहरू का ही काम था कि वह न केवल भारत और सोवियत संघ के बीच हर प्रकार के सहयोग का पक्ष-पोषण करते रहे बल्कि इस

बारे में भी सतर्क रहे कि उनके विचारों पर अमल हो। भारत-सोवियत सहयोग के शत्रु बराबर 'भविष्यवाणियाँ' कर रहे थे। उनके अनुसार रूसी विशेषज्ञ अयोग्य थे, उनकी तकनीक पिछडी हुई थी और सोवियत लोग किसी के साथ सहयोग करने में समर्थ ही नही थे। इन तमाम बातो के अलावा 'साम्यवादी प्रचार' की साजिश के जो आरोप लगाये गये, उनका तो कहना ही क्या ! इन तमाम पूर्व निर्धारित दुर्भावनाओ से अप्रभावित रह सकने, सच और झूठ मे भेद कर सकने और दुनिया के पहले समाजवादी देश के साथ विभिन्न क्षेत्रों मे आपसी सहयोग बढ़ाने की नीति पर अमल करने के लिए एक महान् राजनीतिज्ञ की सूझ और साहस की आवश्यकता थी। और नेहरू मे ये सभी गुण एक साथ थे।

निर्माणाधीन भिलाई कारखाने के कामगरों की एक जनसभा में दिया गया नेहरू का एक भाषण मुझे याद है। भारत के आम लोगों के बीच बोलते समय वह बहुत सीधी और सरल भाषा का प्रयोग करते थे। उसी भाषा मे अपने श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए नेहरू ने कहा कि यदि भारत सही मायनों मे एक स्वतन्त्र और मजबूत राष्ट्र बनना चाहता है और अपनी गरीबी, पिछडेपन तथा अशिक्षा को दूर करना चाहता है तो उसे ऐसी अर्थ-नीति अपनानी होगी, जिसमें कि सरकारी क्षेत्र में भारी उद्योगों को लगाया जा सके। तमाम महत्त्वपूर्ण उद्योगों को सरकारी क्षेत्र मे लेकर ही ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न की जा सकती है, जिनमें कि देश के लोगों का जीवन-स्तर उभर सके। उन्होंने आगे कहा—आप देख सकते हैं कि आपके रूसी भाई जो यहाँ मूलभूत औद्योगिक उत्पादनों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के हमारे प्रयत्न में सहायता करने के लिए आये है वे कैसे काम करते है। वे यहाँ रहते है, आपके कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करते हैं और अपने गहरे अनुभवों में आपको भागीदार बनाते हैं। एक समय था कि उन्हे भी ऐसे ही शुरुआत करनी पड़ी थी लेकिन उनके कठोर परिश्रम से आज रूस दुनिया के सबसे शक्तिशाली देशों मे से एक बन गया है। मै चाहता हूँ कि आप इन लोगों से काम करना सीखें, क्योंकि यह जानकारी भविष्य में आपको ऐसे ही बहुत से कारखाने लगाने और नये भारत के नये तीर्थ बनाने में काम आयेगी।

नेहरू भारत के औद्योगिक विकास मे बहुत गहरी दिलचस्पी रखते थे। यहाँ एक उदाहरण प्रस्तुत है : भिलाई इस्पात कारखाना, जो कि इस समय भारत के कुल इस्पात का एक-तिहाई उत्पादन करता है, जब यह कारखाना निर्माणाधीन था तो नियमित रूप से सीमेंट, लोहे, इलेक्ट्रोड्स, एसिटिलीन और दूसरे आवश्यक पदार्थों की आवश्यकता पड़ती थी। उस समय भारत में इन

चीजों की कमी थी और कभी-कभी मालवाहक जहाजों को रास्ते में विलम्ब हो जाता था। जब कारखाने के पहला भाग ब्लास्ट फर्नेस का निर्माण-कार्य लगभग पूरा होने जा रहा था तो उस समय किसी भी तरह का विलम्ब बहुत महँगा पडता। परियोजना मे मशीनों और संयन्त्रों की एक बड़ी सेना के अलावा ६०,००० आदमी काम पर लगे हुए थे। यह हिसाब लगाया गया था कि एक दिन के निर्माण-कार्य पर आने वाला खर्च १००,००० रुपये बैठता है। मै कारखाने के किसी काम से दिल्ली गया तो मैने प्रधानमन्त्री को स्थिति से अवगत कराया। मै वापस भिलाई पहुँचा ही था कि यह घोषणा सुनने को मिली कि राज्य मे धातु शोधन के तीन कारखाने लगाने के काम को प्राथमिकता दी गयी है।

मुझे नेहरू की अक्तूबर १९६० की यात्रा भी खूब याद है। जैसा कि प्रायः होता था, उस अवसर पर श्री स्वर्णसिंह भी उनके साथ थे। स्वर्णसिह कई वर्षो तक इस्पात, खदान और ईधन विभाग के मन्त्री रहे थे। उल्लेखनीय है कि श्री सिंह के साथ हमारे बहुत अच्छे कार्य-सम्बन्ध थे। वह हमारी तमाम बातों और सुझावो को गौर से सुनते थे, और छोटी या बड़ी कैसी भी समस्या हो, उसे जल्दी से जल्दी हल करने की भरपूर चेष्टा करते थे। सोवियत विशेषज्ञ जो कि उष्ण जलवायु के अभ्यस्त नही थे, उनके लिए एयर कंडीशनर और अच्छे से अच्छे खाने की व्यवस्था कराने मे भी वे व्यक्तिगत रुचि लेते थे।

उन्ही दिनों हम रेल एंड स्ट्रक्चरल मिल की स्थापना कर रहे थे। एकदम तकनीकी विषयों पर नेहरू के प्रश्न और टिप्पणियाँ मुझे अभी भी याद हैं। ये विषय थे—मिल का कुल उत्पादन, रेलो और चैनलो की किस्म और मात्रा, उनकी लम्बाई, वे ज्यादा लम्बे अरसे तक काम मे आ सकें इसके लिए तापक्रिया द्वारा उनकी सतह को और सख्त करने की सम्भावनाएँ, निर्यात के लिए उनकी बिक्री की सम्भावनाएँ आदि। नेहरू अपनी आँखों के सामने इस्पात की गर्म सिल्लियों और छड़ों को उपयोगी उत्पादनों में बदलते देखकर खुश तो होते ही थे, साथ ही साथ यह भी सोचते रहते थे कि इन चमत्कारिक मशीनों से देश को और देश के लोगों को ज्यादा से ज्यादा फायदा कैसे पहुँच सकता है।

मुझे पूरा विश्वास है कि सैकड़ों सोवियत विशेषज्ञ और उनके परिवार के सदस्य जो कि भिलाई, राँची, दुर्गापुर, अंकलेश्वर, सूरतगढ़ और बम्बई में रहे, नेहरू के बारे मे मेरी राय से पूरी तरह सहमत होंगे। नेहरू जब भी सोवियत सहयोग से बनने वाले कारखानों की यात्रा पर गये, उन्होंने सोवियत इंजीनियरों और दूसरे विशेषज्ञों के रहन-सहन की सुविधाओं के बारे मे अवश्य ही मालूमात की। वे सोवियत विशेषज्ञों के बच्चो के स्कूलों में भी गये और उन्होंने अध्याब-

सायिक मनोरंजन कार्यक्रमों और खेल-कूद प्रतियोगिताओं को भी देखा। मुझे पूरा विश्वास है कि सोवियत जनता भी आने वाली पीढियाँ नेहरू को एक महान् राजनीतिज्ञ और भारत-सोवियत मैत्री के निर्माता के रूप में याद रखेंगी।

## समृद्धि का स्रोत—वसुधारा

बोरिस रोमानोव
भारत स्थित सोवियत दूतावास में आर्थिक मामलों के प्रतिनिधि (१९५७-६३)

भारत में मेरे कार्यकाल के दौरान मुझे अनेक बार नेहरू से मिलने का अवसर मिला। वह मुलाकात मुझे विशेष रूप से याद है जब कि १६ दिसम्बर १९५७ को नेहरू भिलाई इस्पात कारखाने का निर्माण-स्थल देखने आये। कारखाने के हर मामले में उनकी गहरी दिलचस्पी शुरू से ही जाहिर थी। उन्होंने किसी भी तरह का उतावलापन दिखाये बिना एक के बाद दूसरे विभाग का निरीक्षण किया और तरह-तरह के सवाल पूछकर कारखाने के तकनीकी पक्ष को जिस हद तक समझ सकते थे, उस हद तक समझने की कोशिश करते रहे। खास तौर से उन्होंने उस तकनीक को जानने के बारे में दिलचस्पी दिखायी जिससे कि कोक ओवन बैटरी के विशालकाय कंक्रीट पाइपों को सामान्य रूप से बनाये जाने वाले किसी आधार के बिना खड़ा किया जा रहा था और बैटरी अभी तक लगभग १०० मीटर की ऊँचाई तक उठ चुकी थी।

नेहरू ने तेल की खोज करने और उसे निकालने की समस्या पर भी बहुत ध्यान दिया। वह बहुत बार उन क्षेत्रों के दौरे पर गये, जहाँ कि सोवियत विशेषज्ञ अपने भारतीय सहयोगियों के साथ इस महत्त्वपूर्ण पदार्थ की खोज में लगे थे, जो कि भारत के आर्थिक विकास के लिए परम आवश्यक है। इस सम्बन्ध में मुझे एक घटना याद आती है। एक बार नेहरू कैम्बे पहुँचे। वहाँ तेल की खोज की सम्भावनाओं का परीक्षण करने के लिए सोवियत विशेषज्ञ अपने भारतीय सहयोगियों की सहायता कर रहे थे। एक स्थान पर एक तेल के कुएँ से तेल निकलकर पास ही खड़े नेहरू के ऊपर गिरने लगा। उनके साथ खड़े विशेषज्ञों ने संकोच अनुभव किया। लेकिन नेहरू बिल्कुल भी विचलित

नही हुए और बोले, "मैं इसी शेरवानी में संसद में भाषण दूँगा। सब लोगों को यह मालूम हो जाना चाहिए कि अब हमारे पास अपना तेल है।"[1]

नेहरू तेल के कुएं को 'वसुधारा' अर्थात् 'समृद्धि का स्रोत' कहा करते थे।

मई १९६३ मे नेहरू अंकलेश्वर के तेल-क्षेत्र के दौरे पर गये। वहाँ उन्होने कर्मचारियों से बात करते हुए पूरा दिन बिताया। उस अवसर पर उन्होने कहा कि सोवियत संघ के मित्रतापूर्ण सहयोग से खोजे गये अंकलेश्वर के तेल द्वारा न केवल गुजरात बल्कि पूरे भारत के आर्थिक विकास और समृद्धि को बढ़ाने में मदद मिलेगी। नेहरू ने आगे कहा कि भारत का तेल उद्योग सोवियत संघ के मित्रतापूर्ण सहयोग का आभारी है। यह भारत का समाजवाद के मार्ग पर एक और कदम है।

बाद मे नेहरू ने कोयाली मे एक तेल-शोधक कारखाने का शिलान्यास किया। इस अवसर पर भाषण देते हुए उन्होने कहा कि गुजरात में तेल-शोधक कारखाने का निर्माण भी भारत के अच्छे मित्र सोवियत संघ के सहयोग से ही सम्भव हो सका है। उन्होंने विश्वास प्रकट किया कि इस कारखाने के द्वारा दोनों देशों के सम्बन्धों को और ज्यादा मजबूत बनाने मे मदद मिलेगी। सोवियत संघ एक सामर्थ्यवान देश है और उसने तकनीकी क्षेत्र में बहुत प्रगति की है। भारत को सोवियत अनुभवों से बहुत कुछ सीखना है। बहुत से अवसरों पर, जब भी नेहरू अंकलेश्वर आये, मुझे उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कोयाली तेल-शोधक कारखाने को और भिलाई को भी अंकलेश्वर से ही तेल भेजा जाता है।

नवम्बर १९६३ के मध्य में नेहरू राँची और दुर्गापुर आये। राँची में उन्हें सोवियत सहयोग से बने भारी मशीनों का निर्माण करने वाले कारखाने और खदान संयन्त्रों का निर्माण करने वाले कारखाने के प्रारम्भिक विभागों का उद्घाटन करना था। हम इस बात से बहुत प्रभावित हुए कि नेहरू अपनी व्यस्तता और अस्वस्थता के बावजूद प्रमुख औद्योगिक इकाइयों द्वारा आयोजित ऐसे समारोहों के लिए समय और शक्ति जुटा लेते थे।

नेहरू मुझे हमेशा एक ऐसे व्यक्ति के रूप में याद रहेंगे, जिसका पूरा जीवन शान्ति और अपने देश की समृद्धि के लिए समर्पित था और जो सोवियत संघ के साथ हर क्षेत्र में निकट मैत्री तथा आपसी सहयोग के वाहक थे।

१. सोवियत लैंड, १९६४, संख्या १२।

# सूरतगढ़ में नेहरू के साथ भेंट

अलेक्ज़ेंडर सेलिवानोव

सोवियत कृषिविद, १९५६ मे राजस्थान के रेगिस्तान की भूमि को खेती योग्य बनाने का अभियान शुरू करने के लिए भेजे गये दल के सदस्य, इन्होने सूरतगढ़ में तीन वर्ष काम किया और वहाँ के रेगिस्तान को उपजाऊ बनाने में मदद दी

अप्रैल १९५९ में प्रधानमन्त्री नेहरू के सूरतगढ़ फार्म को देखने के लिए आने की खबर आसपास के गाँवों में जंगल की आग की तरह फैल गयी। गंगानगर जिले के हर कोने से स्थानीय किसान अपने परिवारों सहित सूरतगढ पहुँचने लगे।

जिस कार में नेहरू, इंदिरा गाधी, राजस्थान के मुख्य मन्त्री, भारत के कृषि मन्त्री और फार्म के मैनेजर को जाना था, उसे ड्राइव करने का काम मुझे सौंपा गया था। नेहरू ने मुझसे हाथ मिलाया और कहा कि आपसे दोबारा मिलकर बहुत खुशी हुई। उन्हें याद था कि एक वर्ष पहले दिल्ली के एक समारोह में उनसे मेरा परिचय कराया गया था।

निरीक्षण का कार्य फार्म के उस क्षेत्र से शुरू हुआ, जो कि रेलवे स्टेशन के पास था। नेहरू फार्म की सभी गतिविधियों में दिलचस्पी ले रहे थे—परती भूमि को चालू करने की योजना की प्रगति ? फार्म पर किस तरह की मशीनें इस्तेमाल की जा रही हैं ? काम करने के लिए कितने मजदूरों की जरूरत पड़ती है ? भारतीय कर्मचारी नयी मशीनों को कैसे चला रहे है ? कार गेहूँ के एक खेत के पास पहुँची तो वहाँ फसल की कटाई का काम चल रहा था। नेहरू कार से उतर पड़े और एक कंबाइन हार्वेस्टर मशीन पर चढ़ गये। वह बिन में गिरते हुए अनाज को बहुत गौर से देख रहे थे।

नेहरू ने कटाई की प्रक्रिया को बहुत दिलचस्पी के साथ देखा और ट्रैक्टर ड्राइवरों, कंबाइन आपरेटरों, मिस्त्रियों और खेतों मे काम करने वाले कामगरों के साथ विस्तारपूर्वक बातचीत की। वह बहुत अनौपचारिक थे और मजाक करके हमें मैत्रीपूर्ण खुशनुमा माहौल में पहुँचा देते थे। यह माहौल उनके चारों तरफ हमेशा बना रहता था।

शाम को हम देर से सूरतगढ़ लौटे। शहर का वह मैदान खचाखच भरा था। नेहरू मंच पर चढ़ गये और उन्होंने धीरे-धीरे बोलना शुरू किया। फार्म के निरीक्षण के अनुभवों का समाधान करते हुए उन्होने कहा कि अगर भारत के पास इस तरह के और फार्म होते तो उसकी खाद्य-समस्या समाप्त हो जाती।

उन्होंने बहुत उत्साहपूर्वक फार्म की मशीनों पर काम करने वाले कर्मचारियों की सराहना की और कहा कि उन लोगों ने एक रेगिस्तान को खेती के योग्य बढ़िया जमीन में बदल दिया है। फिर उन्होंने सोवियत संघ के बारे में कहा कि वह हमारे आर्थिक विकास में बहुत मदद कर रहा है और उसके विशेषज्ञ अपने भारतीय सहयोगियों के कन्धे से कन्धा मिलाकर काम कर रहे हैं। अन्त में उन्होंने एक नये भारत का निर्माण करने के लिए भारतीय किसानों को उनके फर्ज की याद दिलायी।

उस शाम खाने के समय नेहरू ने सोवियत विशेषज्ञों से रहने और काम करने के हालात के बारे में बातचीत की और पूछा कि स्थानीय गर्म जलवायु में वे कोई असुविधा तो महसूस नहीं करते। उनकी उदार हृदयता और दूसरों की सुविधाओं का इस हद तक खयाल रखने की वृत्ति से हम बहुत प्रभावित हुए। मैं नेहरू को हमेशा सुलझे विचारों वाले, उदार हृदय और चरित्र की शक्ति से सम्पन्न व्यक्ति के रूप में याद रखूँगा।

गत कुछ वर्षों में खेती में भारत-सोवियत सहयोग तेजी से विकसित हुआ है और खेती के बहुत से उत्पादनों पर उसका सुप्रभाव पड़ा है। बंजर भूमि को खेती योग्य बनाने की पाँच परियोजनाओं—हिसार, रायचुरू, झारसूगुड, जालन्धर तथा कनानोर—के लिए सोवियत संघ ने भेंट स्वरूप खेती की मशीनें, उनके संयन्त्र और स्पेयर पार्ट्स दिये हैं।

इंडियन स्टेट फार्मस कारपोरेशन के अध्यक्ष एम. आर. कृष्णा ने एक इंटरव्यू में कहा कि सूरतगढ़ का मुख्य फार्म और साथ ही दूसरे सरकारी फार्म एक बड़ी मात्रा में विभिन्न फसलों के उच्च कोटि के बीज तैयार कर रहे हैं और इस बात के अच्छे उदाहरण हैं कि फार्म मशीनरी का इस्तेमाल करने से कितना फायदा उठाया जा सकता है। असल में ये फार्म ऐसे प्रयोगात्मक केन्द्र हैं, जहाँ भरपूर फसल उगाने की नयी से नयी तकनीक का अध्ययन किया जायेगा।

सोवियत संघ भारत के पशु विशेषज्ञों तथा कृषिविदों को सूरजमुखी तथा चुकन्दर जैसी नयी फसलों को सफलतापूर्वक उगाने मे और अच्छी किस्म की ऊन वाली भेड़ों तथा बकरियों की नस्ल सुधारने में भी सहायता दे रहा है।

बदले में भारत के पौधों की नस्लों के विशेषज्ञ तथा उनका चुनाव करने वाले अपने लम्बे अनुभवों के आधार पर सोवियत संघ के लिए उष्णकटिबन्धीय जलवायु में पैदा होने वाले खाद्यान्नों की नयी किस्में तैयार कर रहे हैं।

## नेहरू का सपना सच्चा साबित हुआ

अलेक्सी वार्लामोव
रांची के भारी मशीन निर्माण कारखाने के मुख्य विशेषज्ञ (१९५९-१९६३)

जून १९५५ मे अपनी पहली शासकीय विदेश यात्रा के दौरान नेहरू ने स्वेर्दलोवस्क स्थित उरालामाश भारी मशीन निर्माण कारखाने का दौरा किया। बाद में उन्होंने कहा कि उरालामाश बड़े कारखानों में भी बढ़ा है और भारत को इस तरह के कारखाने की सख्त जरूरत है।

भारत गणतन्त्र के प्रधानमन्त्री इस बात को बहुत अच्छी तरह जानते थे कि मशीन निर्माण उद्योग की रीढ है और मशीनी संयन्त्रों तथा औजारों के बिना उद्योगों, आधुनिक खेती, परिवहन और कुल मिलाकर एक नये भारत का निर्माण कर पाना असम्भव है। इसीलिए नेहरू ने उरालामाश जैसा एक कार-खाना भारत में लगाने की इच्छा प्रकट की।

उसके बाद सोवियत सहयोग से उस तरह का एक कारखाना राँची में लग चुका है। जब कारखाना निर्माणाधीन था तो नेहरू उसकी प्रगति में गहरी दिलचस्पी लेते रहे और कई बार निर्माण-स्थल पर गये। नवम्बर १९६३ में कारखाने के प्रारम्भिक विभागों का कार्य आरम्भ होने के अवसर पर अन्तिम बार राँची गये थे। उस समय कारखाने के दूसरे विभागों में मशीनों के संयोजन का काम पूरी रफ्तार से चल रहा था।

कारखाने के कर्मचारियों की एक विशाल सभा को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि भारत के औद्योगिक विकास में राँची कारखाने का जो महत्त्व है उसका अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। उन्होंने मजदूरों और इंजीनियरों को आह्वान किया कि वे देश के औद्योगिक विकास को तेजी से आगे बढ़ाने के प्रयत्नों में कोई भी कसर बाकी न रखें। इस औद्योगिक विकास में राँची

कारखाने का भी बहुत बड़ा हाथ होगा। उनके प्रेरक शब्दों से हम लोगों का उत्साह कई गुना बढ़ गया और हम सब—यानि सोवियत और भारतीय इंजीनियरों, तकनीशियनों और मजदूरों ने कारखानों को जल्दी से जल्दी और अच्छे से अच्छा बनाने के लिए हर सम्भव प्रयत्न किया।

आज राँची का कारखाना पूरे भारत में अपनी तरह का सबसे बड़ा कारखाना है। जैसे-जैसे यह अपनी नियोजित क्षमता को पूरी करता जाता है, वैसे ही इसके द्वारा होने वाला लाभ भी बढ़ता जाता है।

राँची कारखाने के जनरल मैनेजर श्री डी. आर. शास्त्री ने समाचार-पत्र 'सोत्सियालिस्तीचेस्काया इंडस्ट्रिया' में १८ नवम्बर १९७३ मे अपने लेख 'टेस्टिड बाइ टाइम' में लिखा है, "हमें यह जानकर बहुत खुशी है कि सोवियत संघ के ९३ संस्थान, जिनमें डिजाइन इंस्टीट्यूट भी हैं, इस कारखाने के निर्माण में हमें अमूल्य सहयोग दे रहे है। ब्ल्यू प्रिंट तैयार करने से शुरू करके उनका हर प्रकार का तकनीकी सहयोग हमें सुलभ रहा है और इसी कारण कारखाना ७४० प्रकार के औद्योगिक उपयोगिता के उत्पादन करने में सफल हो सका है। इस डाकुमेंटेशन के आधार पर भारतीय डिजाइनर अपने ग्राहकों की आवश्यकता, काम करने की स्थानीय परिस्थिति और कच्चे माल की सुलभता को ध्यान में रखते हुए नित नये उत्पादनों के डिजाइन तैयार कर रहे है। सोवियत संघ विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय युवकों को प्रशिक्षित करके भारत की बहुत बड़ी सहायता कर रहा है। विशेष रूप से राँची के भारी मशीन निर्माण कारखाने में काम करने वाला सोवियत विशेषज्ञों का दल अपने तकनीकी ज्ञान और अनुभवों में भारतीय इंजीनियरों तथा कामगरों को उत्साहपूर्वक भागीदार बना रहा है। पूरे कारखाने मे आपसी समझ-बूझ और सच्ची मित्रता पर आधारित प्रेरक वातावरण बना हुआ है। इस वातावरण का प्रभाव निश्चय ही कारखाने के उत्पादन पर भी पड़ता है।"

आज इस कारखाने के उत्पादन भिलाई, बोकारो, अंकलेश्वर, हरद्वार, बम्बई और कलकत्ता भेजे जा रहे है। भारी औद्योगिक संयन्त्रों के मामले मे भारत को आत्मनिर्भर देखने का नेहरू का स्वप्न आज सच्चा साबित हो रहा है।

# एक कभी न भूलने वाली याद

प्राध्यापक एलेग्जेडर लिबोव

सोवियत भारत सांस्कृतिक सम्बन्ध समिति की लेनिनग्राद शाखा के बोर्ड के सदस्य। १९५८-६१ में इन्होने भारतीय रेडक्रास के अनुरोध पर दिल्ली मे रह एक सोवियत छूत रोग विशेषज्ञ दल का नेतृत्व किया। नीचे उनका वक्तव्य प्रस्तुत है

हम नयी दिल्ली के मेडिकल कालेज के बालविभाग के साथ संयुक्त थे। वहाँ रहते मैंने बच्चो की छूत की बीमारियों पर एक भाषण-माला प्रस्तुत की और साथ ही इस विषय पर एक पुस्तक भी लिखी। सोवियत रेडक्रास ने इस पुस्तक को प्रकाशित कराने मे मेरी सहायता की। पुस्तक में मैंने छूत की बीमारियो को रोकने और निरोधात्मक कार्रवाइयों के बारे में सोवियत अनुभवों तथा भारतीय चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा संग्रहीत तथ्यों का सारांश प्रस्तुत किया था। मैं इस पुस्तक के बारे में आपको इतने विस्तार से बता रहा हूँ तो इसके पीछे एक कारण है। और कारण यह कि इस पुस्तक की बदौलत ही मुझे नेहरू से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। भारत में चिकित्सक शताब्दियों से दो प्राचीन—आयुर्वेदिक तथा यूनानी—पद्धतियों से चिकित्सा करते रहे हैं। १९५७ में नेहरू ने डॉक्टर जी. बोरकर की पुस्तक 'हैल्थ इन इंडिपेंडेंट इंडिया' की भूमिका में इस आवश्यकता पर बल दिया कि इन पुरानी चिकित्सा-पद्धतियों का नये वैज्ञानिक तरीकों से पुनर्परीक्षण किया जाना चाहिए।

नेहरू शासकीय कार्यभार के बावजूद स्वास्थ्य के क्षेत्र में होने वाले किसी भी महत्त्वपूर्ण कार्य मे दिलचस्पी लेते थे। वह अच्छी तरह समझते थे कि स्वास्थ्य के मामले में वास्तविक समस्या क्या है। उन्होंने लिखा है, "राष्ट्र के स्वास्थ्य सुधार या कि स्वास्थ्य के स्तर को ऊँचा उठाने का मतलब केवल रोगों की चिकित्सा करना ही नहीं, बल्कि उन्हें रोकने के निषेधात्मक उपाय करना भी है।"

भारत में आने के कुछ ही दिनों बाद हमने अपने भारतीय सहयोगियों के साथ मिलकर 'द प्रॉबलम्स ऑफ पैडियट्रिक्स' लिखी और उसे प्रकाशित भी करायी। इस पुस्तक की एक प्रति हमने नेहरू के निवास-स्थान पर भी

भिजवायी। कुछ दिन बाद मुझे एक पत्र मिला, जिसे कि मैने पिछले वर्षों में बहुत सँभालकर रखा है। पत्र इस प्रकार है:

प्रिय प्रोफेसर लिबोव,

मैं आपका आभारी हूँ कि आपने बच्चों की देखभाल के बारे में भारतीय तथा सोवियत डॉक्टरों के सहयोग से प्रस्तुत की गयी पुस्तिका मुझे भिजवाने का अनुग्रह किया। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तिका उन सबके लिए उपयोगी सिद्ध होगी जो कि इस महत्त्वपूर्ण विषय मे दिलचस्पी रखते हैं।

आपका
जवाहरलाल नेहरू

मेरी उस पाठ्यपुस्तक के प्रकाशन के कुछ दिनों बाद राजकुमारी अमृतकौर ने मुझे एक शाम दावत पर बुलाया और उस मुलाकात के दौरान जवाहरलाल नेहरू का एक पत्र दिखाया जिसमें कि उन्होंने लिखा था, "कल १३ अप्रैल को प्रश्नोत्तर काल के पश्चात् अर्थात् लगभग १२.१५ बजे संसद भवन के मेरे कमरे में प्रोफेसर लिबोव से मिलकर मुझे प्रसन्नता होगी।"

निश्चित समय पर नेहरू संसद भवन के अपने कमरे मे दाखिल हुए। उस समय वहाँ हम तीन थे—नेहरू, राजकुमारी अमृत कौर और मै। नेहरू ने कहा कि यह बहुत अच्छी बात है कि आपने छूत की बीमारियों के बारे मे एक पाठ्यपुस्तक लिखी है। ये बीमारियाँ भारत की नम्बर एक दुश्मन है और नम्बर दो दुश्मन है गन्दा पानी और उसकी निकासी के लिए नालियों की कमी। असल में भारत को तो पहली सीढ़ी से ही शुरुआत करनी है। सोवियत संघ के अनुभव हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकते हैं। एक समय था जबकि सोवियत लोगों के सामने भी बीमारियों पर काबू पाने और पानी की निकासी का समुचित प्रबन्ध करने की समस्या थी। आप लोगों ने समस्या पर सफलतापूर्वक काबू पा लिया है और मुझे आशा है कि हम भी पा लेंगे।

इसके बाद नेहरू ने ग्रामीण क्षेत्रों में बीमारियों की रोकथाम के लिए अपनाये जाने वाले नवीनतम उपायों और सोवियत संघ में स्वास्थ्य सेवा के संगठनो के बारे में प्रश्न किये। मैंने इस बात को ध्यान में रखते हुए कि मुझे उनका बहुत अधिक समय नहीं लेना चाहिए, प्रश्नों के अधिक से अधिक जानकारी देने वाले उत्तर दिये। बहरहाल, नेहरू एक के बाद एक प्रश्न करते चले गये। मैने अनुभव किया कि वे मेरे उत्तरों को भारतीय परिस्थितियों पर लागू करने के बारे में सोच रहे हैं। नेहरू के प्रश्नों से मेरे मन में ज़रा भी सन्देह

नहीं रहा कि वे ऐसे महान् राजनीतिज्ञ थे, जिसे अपने देश के लोगों की आवश्यकताओं और समस्याओं का सूक्ष्म ज्ञान था। साथ ही जिसमें स्वास्थ्य सेवाओं की प्रमुख समस्याओं को समझने की असाधारण क्षमता थी।

इस मुलाकात का मेरे ऊपर बहुत गहरा असर पड़ा।

# सोवियत प्राच्यविदों की दृष्टि में नेहरू

## महान् देश का महान् सपूत

अकादमीशियन बौबोद्जन गफूटोव
सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी के प्राच्य
विद्या संस्थान के निदेशक

आज की दुनिया में वे सब लोग जो कि विश्व-शान्ति तथा सामाजिक प्रगति में विश्वास रखते हैं, नेहरू के महान् मानवतावादी विचारों से अवश्य ही प्रभावित होते है। सोवियत संघ में लोग जवाहरलाल नेहरू को अच्छी तरह जानते हैं और वहाँ उनका बड़ा सम्मान है। उनकी देशभक्ति, दृढ़ निश्चय तथा अद्भुत कार्य-क्षमता से बहुत प्रभावित थी। उनके ये गुण विश्व-शान्ति तथा जन-सामान्य के हितों के लिए किये गये उनके संघर्ष से स्पष्ट हैं।

मुझे नेहरू से बहुत बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह एक असाधारण राजनीतिज्ञ, विद्वान् इतिहासकार तथा योग्य राजनैतिक पत्रकार थे।

मैं उनकी सादगी और विनम्रता से बहुत प्रभावित हुआ। अपने शासकीय कार्यों की व्यस्तता के बावजूद नेहरू हर वर्ग के और हर देश के लोगों से मिलने के लिए समय निकाल लेते थे।

उल्लेखनीय है कि हमारे संस्थान के जो भी सदस्य भारत गये, प्रायः उन सभी को नेहरू से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

मुझे नेहरू से बहुत से उच्च स्तरीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भी मिलने

का सुअवसर मिला। ऐसे अवसरों पर मैंने सदा महसूस किया कि नेहरू चाहते है कि सम्मेलन में उन्हें एक साधारण भागीदार के रूप में ही लिया जाये। वह इस बारे में बहुत सतर्क रहते थे कि सम्मेलन में भाग लेने वाले हर व्यक्ति के सम्मान और सत्कार का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाये। नेहरू मधुर आवाज में बोलते थे लेकिन उनके तर्क प्रबल होते थे। उनके भाषण सदा विषय केन्द्रित तथा तथ्यपूर्ण होते थे।

नेहरू एक महान् देश के महान् सपूत थे।

## साम्राज्यवाद के प्रबल विरोधी

अकादमीशियन येवजेनी झुकोव

नवम्बर १९६४ में दिल्ली में आयोजित विश्व-शान्ति तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सोवियत प्रतिनिधि मंडल के नेता। सम्मेलन का एक सत्र नेहरू पर ही था। येवजेनी झुकोव नेहरू से बहुत बार मिले थे। सम्मेलन में दिये गये उनके भाषण का संक्षिप्त रूप यहाँ प्रस्तुत है

आज जवाहरलाल नेहरू के जन्म-दिवस के अवसर पर हम अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक क्षेत्र में किये गये उनके महत्त्वपूर्ण कामों तथा विभिन्न देशों के बीच शान्ति स्थापित करने और उनकी मैत्री दृढ़ करने के लिए किये गये अथक प्रयत्नों को ससम्मान याद करते हैं। भारतीय तथा सोवियत-मैत्री को घनिष्ठ बनाने में नेहरू का महत्त्वपूर्ण योगदान है। सोवियत लोग जो कि भारत तथा अन्य देशों के साथ मैत्री सम्बन्ध विकसित करने में दिलचस्पी रखते है, इस क्षेत्र में नेहरू द्वारा किये गये कामो की बहुत कद्र करते हैं।

गुटनिरपेक्षता की नीति जिसे कि सकारात्मक तटस्थता की नीति भी कहा जाता है, असन्दिग्ध रूप से नेहरू के नाम के साथ जुड़ी है। वह इस नीति के निर्माता तथा अग्रदूत थे। कुछ देशों के चन्द लोगों ने बिना किसी तर्क के इस नीति को निष्क्रिय नीति कहकर आक्रमण किये। उन्होंने इसे आत्रमक शक्तियों के विरुद्ध चलने वाले संघर्ष के प्रति विश्वासघात बताया और परम्परागत

अर्थ में मध्यमार्गी कहकर इसे खारिज करने की कोशिश की।

असल में नेहरू की गुटनिरपेक्षता की नीति, जिसका कि तटस्थ देशों में से अधिकांश अनुसरण कर रहे हैं, निष्क्रियता से कोई ताल्लुक नहीं रखती। सच तो यह आक्रामक शक्तियों के प्रतिरोध का एक रूप है और औपनिवेशिक सैनिक गुटों, विदेशी फौजी अड्डों तथा आणविक शस्त्रों के विस्तार को समाप्त करने का एक साधन है। यह नीति विकासमान देशों की राष्ट्रीय स्वतन्त्रता को खतरे में डालने वाली प्रतिक्रियावादी तथा आक्रामक शक्तियों के प्रतिरोध का एक प्रभावपूर्ण साधन है। उपनिवेशवादी शक्तियाँ अन्य देशों को अपने आक्रामक गुटों के दायरे में लेने के लिए उन्हें तथाकथित सैनिक सहायता देने का दंभ करती हैं। वैसे उनका एकमात्र लक्ष्य अपना आधिपत्य जमाना और जिन देशों ने कुछ ही समय पहले उपनिवेशवादी सत्ता के जुए को उतारकर फेंका है, उन पर फिर वही सत्ता थोप देना है।

उपनिवेशवाद की कुटिल आकांक्षाओं के विरोध, किसी भी प्रकार के बलात अधिग्रहण के मौके पर राष्ट्रीय स्वाधीनता की रक्षा, उपनिवेशवाद की भर्त्सना तथा हर संभव रूप में उसके विरुद्ध संघर्ष के पीछे सकारात्मक तटस्थता की नीति ही होती है। इस नीति को व्यापक समर्थन मिला और पूरी दुनिया के प्रगतिशील लोगों की प्रशंसा मिली है।

मैं गुटनिरपेक्षता की उपनिवेशवाद-विरोधी प्रकृति पर खास तौर से जोर देना चाहता हूँ। जिस भी व्यक्ति ने नेहरू के जीवन का अध्ययन किया है और बहुत नाजुक मौकों पर उनके क्रिया-कलापों को समझने की कोशिश की है वे निःसंदेह इस नतीजे पर पहुँचेंगे कि नेहरू उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद के विरुद्ध निरंतर लड़ने वाले योद्धा थे। इन्होंने अपने जीवन के कई वर्ष उपनिवेशवादी जेलों में बिताये थे, इसलिए उनका उपनिवेशवाद-विरोधी होना स्वाभाविक ही था।

१९५५ में मैं बांडुंग सम्मेलन में एक पत्रकार के रूप में सम्मिलित हुआ। वहाँ मुझे अफ्रेशियाई देशों के इस पहले सम्मेलन में नेहरू की असाधारण सक्रियता स्वयं अपनी आँखों से देखने का अवसर मिला। बांडुग सम्मेलन के बाद दुनिया में बड़े-बड़े परिवर्तन हो गये है और उपनिवेशवाद पर घातक प्रहार हुए है। लेकिन उपनिवेशवाद अभी भी काफी मजबूत है और उस पर बराबर निगरानी रखने की सख्त जरूरत है। जवाहरलाल नेहरू ने गुटनिरपेक्षता की जिस नीति को दुनिया के सामने रखा और जिस पर उन्होंने स्वयं भी निष्ठा

के साथ आचरण किया, उसकी सूझ-बूझ और औचित्य को समय ने सिद्ध कर दिखाया है।

## नेहरू के साथ मेरी कुछ भेंट

प्रोफेसर येवजेनी चेलिशेव
सोवियत-भारत सांस्कृतिक समिति के उपाध्यक्ष,
जवाहरलाल नेहरू पुरस्कार के विजेता

मैं जब भी दिल्ली स्थित उस भवन में जाता हूँ, जो कि नेहरू का निवास-स्थान था और अब जिसमें नेहरू स्मारक संग्रहालय है तो मैं भावातिरेक से गद्-गद हो उठता हूँ। यह वह भवन है जहाँ कि मै नेहरू से मिला था और उनसे बातें की थीं। वे मुलाकातें अपने पूरे विस्तार में मुझे आज भी याद हैं, और याद है वह पूरा परिवेश जिसमे कि ये मुलाकातें हुई थी। मेरे ऊपर सबसे गहरा प्रभाव इस अद्भुत आदमी के आकर्षक व्यक्तित्व का पड़ा।

मै प्रायः नेहरू के दायित्व बोध तथा भावनाओं की उष्मता से और उनकी सादगी तथा महानता से चमत्कृत रह जाता था। इन गुणों के साथ-साथ नेहरू में अटूट कार्यक्षमता और अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए अपराजेय साहस भी था।

मेरी भारत-यात्राओं की एल्बम में कुछ ऐसे फोटो हैं, जो कि मुझे विशेष रूप से प्रिय हैं। ये फोटो जवाहरलाल नेहरू के हैं, और जब कभी मैं इन्हें देखता हूँ तो स्मृति मुझे भूतकाल की स्मरणीय घटनाओं में पहुँचा देती है...

दिल्ली, १९५५। नेहरू सोवियत प्रतिनिधि मण्डल के सदस्यों का स्वागत कर रहे हैं। यह प्रतिनिधि मण्डल अन्तर्राष्ट्रीय तनाव से मुक्ति पाने के लिए एशियाई देशों के सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत आया था। यह वह समय था, जबकि विश्व शान्ति और एशिया तथा अफ्रीका के देशों की एकता का आन्दोलन नया था और धीरे-धीरे बढ़ रहा था।

इस आन्दोलन में नेहरू के योगदान का मूल्यांकन करना सरल नहीं है। यह तो सभी जानते हैं कि वह उपनिवेशवादी व्यवस्था के कट्टर विरोधी और तमाम

उलझे हुए अन्तर्राष्ट्रीय मामलों को आपसी बातचीत के द्वारा हल करने के पक्ष-पाती थे।

एक अन्य फोटो में नेहरू दिल्ली स्टेडियम में बच्चों के एक दल से घिरे खड़े हैं। यह फोटो १९५६ के शरद में उनके जन्म दिवस समारोह के अवसर पर ली गयी थी। इसमें फूलों का एक विशाल समुद्र, टुकड़ियों में नाचते हुए लोग और मुस्कराते हुए खुशनुमा चेहरे दिखाये गये है। सार्वभौम प्रसन्नता का यह वातावरण नेहरू के प्रति लोगों के हार्दिक प्रेम को प्रकट करता है।

दिल्ली में जवाहरलाल नेहरू के निवास-स्थान पर हुई भेंटों की मधुर याद अभी भी मेरे दिमाग में ताज़ा है। १९५९ के शरद में नेहरू मद्रास मे आयोजित तीसरी आल इण्डिया राइटर्स कानफ्रेंस में भाग लेकर लौटते हुए हमारे प्रतिनिधि मण्डल से मिले। लेखक बोरिस पोलेवाय, बेर्दी करबाबायेव और मैं उनके अध्ययन-कक्ष में पहुँचे तो उत्तेजित हुए बिना न रह सके। हम तीनो ही अवसर के अनुकूल बधाई के उचित शब्द खोजने में लगे थे। नेहरू तेज कदमों से कमरे मे दाखिल हुए, हल्के से मुस्कराये और उन्होंने हमे आराम से बैठ जाने के लिए कहा। उनके मृदु व्यवहार से हमारी उत्तेजना समाप्त हो गयी और मित्रतापूर्ण, अनौपचारिक बातचीत शुरू हुई।

बोरिस पोलेवाय तथा बेर्दी करबाबायेव को सम्बोधित करते हुए नेहरू ने कहा कि वह रूसी साहित्य के बहुत शौकीन रहे है और एक समय उन्होंने ताल्सताय, चेखव, गोर्की और दूसरे रूसी लेखकों के साहित्य में से काफी कुछ पढ़ा है। नेहरू ने आगे कहा कि हालाँकि अब उन्हें [illegible] पढ़ने के लिए अधिक समय नही मिल पाता, फिर भी वह उनकी पुस्तकों के लिए समय निकालने की पूरी चेष्टा करेंगे।

पोलेवाय ने अपने उपन्यास **एक वास्तविक आदमी की कहानी** और करबाबायेव ने अपने उपन्यास **निर्णायक कदम** के अंग्रेजी अनुवाद नेहरू को भेंट किये।

वे सब जो कि नेहरू को जानते थे, उनकी विद्वत्ता और विज्ञान तथा संस्कृति के क्षेत्रों में उनके बहुमुखी ज्ञान से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते थे। स्वयं नेहरू की रचनाओं से ही हमें पता चलता है कि भारत के लोगों ने विश्व संस्कृति को क्या कुछ दिया है। नेहरू की रचनाएँ उनके समसामयिक दृष्टिकोण और भारत तथा विश्व के अन्य देशों के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक विकास की समस्याओं के प्रति उनके स्पष्ट तथा दृढ़ विचारों के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी पुस्तक **भारत की खोज** सोवियत संघ में काफी लोक-

प्रिय है।

मैंने नेहरू को अन्तिम बार ७ नवम्बर १९६३ को दिल्ली में देखा था। उस समय वे गवर्नमेण्ट हाउस के अपने अध्ययन-कक्ष मे मिले थे। शासकीय कार्य-भार के दबाव, अस्वास्थ्य और थकान के बावजूद नेहरू ने अमृतसर में हुए अखिल भारतीय शान्ति सम्मेलन के रूसी प्रतिनिधियों से मिलने का समय निकाला।

मैं नेहरू को हमेशा उसी रूप में याद रखूँगा, जिसमें कि मैंने उन्हें अन्तिम बार देखा था। आज भी मैं उनकी वह मधुर आवाज सुन सकता हूँ, उनके मित्रतापूर्ण हाथ मिलाने के स्पर्श को अनुभव कर सकता हूँ और उनकी खुली-खिली मुस्कान को देख सकता हूँ।

## नेहरू के महान् कार्य ही उनका स्मारक हैं

व्लादिमिर बाला बुशेविच
इतिहास के निदेशक। अनेक वर्षों तक सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी के प्राच्य विद्या अध्ययन संस्थान के भारतीय विभाग के अध्यक्ष। सोवियत-भारत सांस्कृतिक सम्बन्ध समिति के भूतपूर्व उपाध्यक्ष।

मैं नेहरू से सबसे पहले १९२७ में महान् समाजवादी अक्तूबर क्रान्ति की दसवीं वर्षगाँठ के अवसर पर मास्को हाउस आफ यूनियन्स के कालम हाल में मिला था। हाल पूरा भरा हुआ था। श्रोताओं में विभिन्न देशों से आये हुए बहुत से अतिथि थे। सभा की कार्यवाही को चलते हुए कुछ देर हो चली थी कि अचानक हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। श्रोता ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध संघर्षरत भारत की महान् जनता के प्रतिनिधियों का स्वागत कर रहे थे। आगन्तुकों में शान्त स्वभाव के और सफेद बालों वाले मोतीलाल नेहरू, उनके युवा तथा उत्साही पुत्र जवाहरलाल नेहरू और साथ में उनकी पत्नी कमला और छोटी बहन। भारतीय मेहमानों का बहुत उत्साहपूर्ण स्वागत किया गया और उन्हें उनके योग्य सम्मानपूर्ण स्थान में रखा गया। इस बात पर अधिक जोर देने की आवश्यकता नहीं है कि अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की दसवीं वर्षगाँठ के अवसर पर नेहरू की यह सोवियत यात्रा, एक ऐसी यात्रा जिसके

लिए युवा नेहरू काफी दिन से उत्सुक थे, असाधारण महत्त्व रखती है।

उस सभा में हालाँकि मैं मंच से कुछ दूर बैठा था, फिर मैं जो कुछ देख सका, उससे अत्यधिक प्रभावित हुआ। उस समय मै एक युवा भारतीय विद्याविद् था और अब उन व्यक्तियों को साक्षात् अपने सामने देख रहा था, जिन्हें कि मैंने बहुत अच्छी तरह पढ़ा था और जो कि उपनिवेशवाद के विरुद्ध भारत के संघर्ष के प्रतीक थे।

उसके काफी वर्ष बाद जनवरी, १९६४ में दिल्ली में हुई प्राच्यविदों की २६वीं कांग्रेस के उद्घाटन के अवसर पर नेहरू से मेरी फिर भेंट हुई। मुझे इस भेट की भी बहुत-सी बातें याद हैं। जवाहरलाल नेहरू मंच पर आये तो श्रोताओं ने खड़े होकर उनका स्वागत किया। सदा की तरह नेहरू का भाषण तर्कसम्मत एवं प्रभावपूर्ण था। उन्होंने उस अवसर पर कहा कि भूतकाल का अध्ययन केवल जानकारी प्राप्त करने के लिए ही नहीं, बल्कि उस जानकारी की रोशनी में आज की समस्याओं के समाधान ढूँढ़ने के लिए किया जाना चाहिए। भाषण के बाद नेहरू मंच से उतरे तो उन्होंने कुछ प्रतिनिधियों से हाथ मिलाये। उन प्रतिनिधियों में से एक मैं भी था। उस समय मुझे ज्ञात नहीं था कि नेहरू से यह मेरी अन्तिम भेंट होगी। आज भी मेरे लिए यह विश्वास करना कठिन है कि नेहरू नहीं रहे; क्योंकि उन्होंने जो महान् कार्य किये, वे आज भी जीवित हैं। वे महान् कार्य ही नेहरू का सबसे अच्छा स्मारक हैं।

## महान् विद्वान्—जवाहरलाल नेहरू

सैबोखात अजीमद्जनोवा
इतिहास के डॉक्टर, सोवियत-भारत सांस्कृतिक सम्बन्ध समिति की उज़बेक शाखा के उपाध्यक्ष, उज़बेक विज्ञान अकादमी के प्राच्य अध्ययन संस्थान के निदेशक

हम—सोवियत उज़बेकिस्तान के वैज्ञानिक और अध्येता नेहरू को केवल एक महान् राजनीतिज्ञ के रूप में ही नहीं, बल्कि एक ऐसे विद्वान् के रूप में भी देखते है जिसने कि प्राच्य विद्या के समसामयिक अध्ययन में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। उनकी असाधारण महत्त्व की रचनाएँ, जैसे कि 'भारत की कहानी'

श्रौर 'श्रात्मकथा' जिनमें कि भारत के इतिहास, संस्कृति तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम की बहुत ही श्रच्छी विवेचना प्रस्तुत की गयी है, सोवियत पाठकों में बहुत लोकप्रिय हैं। नेहरू वैज्ञानिक दूरदर्शिता से युक्त एक श्रसाधारण इतिहास-कार थे।

मैं, एक साधारण उजबेक महिला श्रौर भारतीय श्रध्ययन के क्षेत्र की एक शोध कार्यकर्त्री, तीन बार नेहरू से मिलने का सौभाग्य कर प्राप्त कर सकी।

दिसम्बर १९६० के श्रंत में मैं भारत-सोवियत मैत्री संघ के तत्वावधान में रवीन्द्रनाथ ठाकुर के ऊपर होने वाले एक श्रधिवेशन में सोवियत-भारत सांस्कृतिक सम्बन्ध समिति की प्रतिनिधि के रूप में भारत गयी। श्रधिवेशन बम्बई में हुश्रा था। श्रधिवेशन के एक सत्र में नेहरू ने महान् भारतीय कवि के जीवन श्रौर कृतित्व के ऊपर एक श्रभिभाषण पढ़ा। यह हमारे लिए श्राश्चर्य की बात थी। हम एक लम्बे श्ररसे से नेहरू को एक महान् राजनीतिज्ञ मानते रहे थे, लेकिन वह तो साथ ही विद्वान् भी सिद्ध हुए।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सम्बन्ध में नये किन्तु गम्भीर विचारों से युक्त उनके भाषण से हम बहुत प्रभावित हुए। नेहरू की श्रपने कथ्य को सीधी-सरल भाषा में प्रस्तुत करने की कला तथा उनके श्रन्दाज ने श्रभिभाषण को बहुत ही प्रभावशाली बना दिया।

नेहरू से मेरी दूसरी भेंट १९६१ में उज़बेकिस्तान में तब हुई जब कि वह रूस की शासकीय यात्रा पर श्राये। वे जहाँ-जहाँ गये, वहीं उनका एक सच्चे मित्र जैसा उत्साहपूर्ण स्वागत हुश्रा। ऐसा स्वागत उन्हीं लोगों को मिल पाता है, जिन्हें कि बहुत श्रधिक प्यार श्रौर उतना ही सम्मान दिया जाता है। हम—उज़बेकी प्राच्यविद् यह जानकर बहुत प्रसन्न हुए कि नेहरू ने हमारे प्राच्य विद्या संस्थान का श्रवलोकन करने की श्रनुमति दे दी है। इस श्रवसर पर उनसे श्रनौपचारिक तथा मित्रतापूर्ण वातावरण में बातचीत हुई। नेहरू ने संस्थान के कार्यकर्ताश्रों के काम में गहरी दिलचस्पी ली। संस्थान के प्राचीन पांडु-लिपियों के विभाग में हुसरो देरवल्यावी की एक पांडुलिपि का निरीक्षण करते हुए उन्होंने कहा कि यह कवि भारत में भी सुपरिचित तथा प्रशंसित है श्रौर साथ ही कहा कि भारतीय तथा उजबेक संस्कृतियों में बहुत समानता है।

नेहरू के साथ ४ जनवरी, १९६४ को हुई श्रन्तिम भेंट मुझे श्रच्छी तरह याद है। यह भेंट दिल्ली में उस समय हुई जबकि उन्होंने प्राच्यविदों के एक श्रधिवेशन में भाषण दिया। दस वर्ष बीत गये लेकिन श्रभी भी मंच से

बोलते हुए उनका वह सादा किन्तु आकर्षक रूप और वे पारदर्शी आँखें मेरे सामने हैं।

## नेहरू आज भी जनता के दिलों में समाये हैं

अलेक्सी लेवकोव्स्की,
अलेक्ज़ेंडर चिचेरोव
सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी के प्राच्य विद्या संस्थान में भारतविद्

अप्रैल १९६३ की वह सुनहरी सुबह हमें हमेशा याद रहेगी, जब कि इंदिरा गांधी ने हमें जवाहरलाल नेहरू से मिलने का आमंत्रण दिया था। उस समय हम दोनों सोवियत भारतविद् अपने कार्य-क्षेत्र में पदार्पण कर रहे थे।

भेंट से पहले हम दोनों बुरी तरह उत्तेजित थे क्योंकि हमें बराबर एहसास बना हुआ था कि नेहरू के स्तर के नेता से मिलने वाले व्यक्ति पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ जाती है। सच तो यह कि हमें इसी बात पर आश्चर्य था कि नेहरू ने अपने तमाम शासकीय दायित्वों के बावजूद हम जैसे लोगों से मिलने के लिए समय कैसे निकाल लिया।

हम कुछ संकोच के साथ विदेश मंत्रालय के उनके कमरे में दाखिल हुए। हालाँकि हमारी बातचीत संक्षिप्त थी, लेकिन उसका हमारे ऊपर बहुत गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा। हम विशेष रूप से नेहरू की शालीनता तथा विचारों की महानता से और साथ ही साथ उनकी विनम्रता और गहन दायित्व बोध से प्रभावित हुए। हमने उन्हें रूस में भारतीय संस्कृति, इतिहास तथा अर्थ-शास्त्र के अध्ययन की प्रगति के बारे में बताया तो उन्होंने बहुत तल्लीनता से हमारी बात सुनी। हमने सोवियत भारतविदों की पुस्तकों के रूप में अपनी तुच्छ भेंट भी उन्हें अर्पित की।

नेहरू ने हमें धन्यवाद दिया और कहा कि वह सोवियत भारतविदों की रचनाओं में और विशेष रूप से उन रचनाओं में जो कि भारत और सोवियत जनता के सम्बन्धों को निकटतर लाने में सहायक हैं, बहुत दिलचस्पी रखते हैं। उन्होंने पूछा कि सोवियत भारतविद् आजकल किन-किन विषयों का अध्ययन कर

रहे है ? और जब हमने बताया कि वे प्राचीन तथा मध्यकालीन भारत के इतिहास तथा संस्कृति और यहाँ के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास और साथ ही साथ समकालीन भारत के सामाजिक तथा आर्थिक विकास से सम्बद्ध अनेक महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का विशेष अध्ययन कर रहे हैं तो नेहरू ने हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की।

विशेषज्ञ होने के नाते हमने नेहरू से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सम्बन्ध में बहुत से प्रश्न पूछे। नेहरू मुस्कराये और बोले कि ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के संक्षिप्त और चालू किस्म के जवाब देना मुझे पसन्द नहीं है और फिर आप क्योंकि पत्रकार नहीं, विशेषज्ञ हैं, इसलिए ऐसे उत्तरों से आप संतुष्ट भी नहीं हो सकेंगे। इसके बजाय, बेहतर यह है कि जब आप अपना काम और देश की यात्रा पूरी कर चुकें तो हम एक बार फिर मिलें। यहाँ के बारे में आपकी राय जानने के बाद मै आपके सवालों के जवाब और विस्तार से दूँगा।

उसके बाद क्योंकि नेहरू का स्वास्थ्य बहुत ज्यादा खराब हो गया और उन्हें आराम के लिए दिल्ली से बाहर जाना पड़ा, इसलिए उनसे हमारी दूसरी भेंट सम्भव नहीं हो सकी।

भारत के प्रधानमंत्री से हुई वह मुलाकात हमें सदा याद रहेगी। वे सोवियत संघ के घनिष्ठ मित्र, एक महान् राजनीतिज्ञ तथा विद्वान् और साथ ही साथ आश्चर्यजनक रूप से सादे, विनम्र और मानवीय गुणों से भरपूर थे।

# महान् मानवतावादी

वे तमाम सोवियत नागरिक जिन्हें कि नेहरू से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ, उनके मानवतावाद से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। हमारा विश्वास है कि इस प्रभाव ने ही भारत के महान् राष्ट्रीय नेता नेहरू के बारे में उनकी धारणाओं को निर्धारित किया। सुविख्यात सोवियत प्राच्यविद्, अकादमीशियन बोबोद्जन गफुरोव का कहना है कि नेहरू के स्तर के राजनीतिज्ञ और चिंतक के लिए मानवतावाद के सिद्धांतों, आदर्शों और उसकी समस्याओं में रुचि लेना स्वाभाविक था क्योंकि ये तमाम समस्याएँ भारत की राष्ट्रीय प्रगतिशील विचार-धारा की परम्परा में से तो उभरी ही थीं, साथ ही नेहरू के काल के भारत से भी जुड़ी थीं। वे भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम और रूढ़िग्रस्त मध्यकालीन भारत की परम्पराओं के विरुद्ध तथा उपनिवेशवाद के विरुद्ध चल रहे संघर्ष में से सहज रूप से उभरी थीं। वे नये भारत के सामाजिक तथा राजनैतिक पुनर्निर्माण के उपायों के लिए चल रही सतत खोज की स्थिति में भारत के जनमानस के सक्रिय सहयोग का स्वाभाविक प्रस्फुटन थी।

ऐसी परिस्थिति में नेहरू को एक राजनीतिज्ञ के रूप में देश की बागडोर सँभालनी पड़ी। अपनी रचनाओं में उन्होंने प्रायः एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व के महत्त्व का विश्लेषण किया है। इस सम्बन्ध में नेहरू का लेनिन के सिद्धांत तथा कर्म का विश्लेषण उल्लेखनीय है। हालाँकि वह लेनिन के व्यक्तित्व के विभिन्न अंगों—नेता, सिद्धांतकार तथा राजनीतिज्ञ को पूरी तरह सराहने में असमर्थ रहे हैं, फिर भी उन्होंने बहुत बार लिखकर और बोलकर लेनिन की प्रशंसा की है।

नेहरू ने लेनिन को एक ऐसे महान् व्यक्ति के रूप में देखा है, जिसने कि मजदूर वर्ग के जीवन को बेहतर बनाने के लिए अपना पूरा जीवन न्योछावर कर दिया। उन्होंने लेनिन को एक महान् चिंतक तथा ऐतिहासिक महत्त्व के ऐसे नेता के रूप में भी देखा जो कि क्रांतिकारी सिद्धांत को क्रांतिकारी व्यवहार से जोड़ने में समर्थ था।

नेहरू ने लिखा है कि जैसे-जैसे समय गुजरता जा रहा है, लेनिन महान् से महानतर बनते जा रहे हैं। वह दुनिया की कुछ एक चुनी हुई अमर विभूतियों मे से एक है। आज वह अपने स्मारकों और तस्वीरों में नहीं, बल्कि उस महान् काम के रूप में जिन्दा हैं, जो कि उन्होंने किया। और वह जिन्दा हैं उन करोड़ों मजदूरों के दिलों में जो कि उनके उदाहरण से प्रेरणा लेते हैं और एक बेहतर दिन के आने की उम्मीद करते हैं।

मार्क्स और लेनिन की रचनाओं का अध्ययन करने के बाद नेहरू ने लिखा, "इतिहास की ओर समाज विकास की इस लम्बी श्रृंखला में निश्चय ही एक विशेष अर्थ गर्भित है। कुछ परिस्थितियों पर और भविष्य पर अस्पष्टता की जो धूल पड़ी थी, वह एक हद तक साफ हो गयी है।"[1]

इस प्रकार हम देखते हैं कि दुनिया के प्रति नेहरू के दृष्टिकोण पर ऐतिहासिक तथा द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का गहरा प्रभाव था।

एक नये समाज का निर्माण करने की सोवियत संघ की व्यावहारिक उपलब्धियों का भी नेहरू के ऊपर कम प्रभाव नहीं पड़ा। इससे वह विकास की उस प्रक्रिया को समझने में समर्थ हो सके हैं जो कि दुनिया में आज कार्यरत है। उन्होंने इन उपलब्धियों को लेनिन द्वारा महान् मानवतावादी विचारों को दिये गये मूर्त आकार के रूप में देखा।

भारत की राष्ट्रीय स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान नेहरू को विश्वास हो गया कि किसी भी प्रकार का शोषण और दमन, सामंतशाही का शोषण चक्र, धार्मिक अंधविश्वास, नस्लभेद, इतिहास में किसी जातिविशेष के महत्त्व को कम आँकना, उपनिवेशवाद, फासिस्टवाद और साम्राज्यवाद व्यक्ति के और फिर सम्पूर्ण मानवता के संतुलित तथा सम्पूर्ण विकास में सबसे बड़े अवरोधक हैं।

नेहरू के मानवतावादी सिद्धांतों की साक्षी उनके साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद के विरुद्ध सतत संघर्ष के रूप में मिलती है। उन्होंने उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष को विश्वव्यापी स्वाधीनता संघर्षों के पूरक के रूप

१. द डिस्कवरी आफ इंडिया, पृष्ठ १४।

में देखा ।

भारत को राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त हो जाने के बाद भी नेहरू उपनिवेशवाद के विरुद्ध बराबर संघर्ष करते रहे । सच तो यह है कि उन्होंने प्रत्येक समसामयिक समस्या को उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष की रोशनी में ही देखा । उनके लिए यह स्वाभाविक ही था कि वह उपनिवेशवाद और उसके भयानक कुपरिणामों के विरुद्ध संघर्ष को नव-स्वतंत्रताप्राप्त देशों की जनता के महान मानवतावादी लक्ष्य के रूप में स्वीकार करते ।

असल में नेहरू पूँजीवादी व्यवस्था के दोषों से भली-भाँति परिचित थे । यही कारण था कि जब भारत का स्वाधीनता संग्राम चल रहा था, तभी उन्होंने सामाजिक तथा आर्थिक मामलों में कुछ ऐसे उपाय सुझाये, जिन पर चलकर भारत न केवल औपनिवेशिक तथा सामन्ती दमन से बच सकता था बल्कि पूँजीवाद के मार्ग पर चलने से भी बच सकता था ।

कई दशकों तक नेहरू बराबर भारत की जनता से कहते रहे कि समाजवाद आदर्श समाज-व्यवस्था है । अप्रैल १९३६ में लखनऊ में हुए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में दिये गये नेहरू के निम्नांकित वक्तव्य की बहुत चर्चा हुई थी । उन्होंने कहा था, "मुझे पूरा विश्वास है कि पूरी दुनिया की और इसीलिए भारत की भी समस्याओं के समाधान की कुंजी केवल समाजवाद के पास है । मैं जब समाजवाद शब्द का प्रयोग करता हूँ तो अस्पष्ट मानवीय रूप में नहीं, बल्कि इसके सही वैज्ञानिक तथा आर्थिक संदर्भ में करता हूँ । समाजवाद केवल एक विशेष प्रकार की आर्थिक व्यवस्था ही नहीं, यह जीवन-दर्शन भी है; और इसीलिए मुझे प्रिय है । भारत के लोगों की गरीबी और बेरोजगारी तथा उनके पतन और आत्महीनता को समाप्त करने का समाजवाद के अतिरिक्त और कोई उपाय मुझे नजर नहीं आता । समाजवाद में राजनैतिक तथा सामाजिक ढाँचे में विशाल परिवर्तन करना, भूमि तथा उद्योगों में से निहित स्वार्थों को अलग करना और साथ ही सामन्ती तथा स्वेच्छतापूर्ण राज्य व्यवस्था को समाप्त करना शामिल है । इसका तात्पर्य हुआ निजी सम्पत्ति को समाप्त करना और मुनाफे की वर्तमान व्यवस्था को एक आदर्श सहकारी व्यवस्था में बदलना । इसका मतलब है कि अंततः हमें अपने संवेगों और आदतों तथा आकांक्षाओं में परिवर्तन करना है । संक्षेप में इसका अर्थ हुआ—वर्तमान पूँजीवादी सभ्यता से सर्वथा भिन्न एक नई सभ्यता स्थापित करना ।"[1]

१. जवाहरलाल नेहरू, इंडियाज फ्रीडम, लंदन १९६२, पृष्ठ ३५ ।

नेहरू ने देखा कि मानवतावादी आदर्श सोवियत संघ में सचमुच गहरी जड़ें जमा चुके हैं। उन्हें विश्वास हो गया था कि आज की दुनिया के महत्त्वपूर्ण प्रश्न जैसे कि युद्ध तथा शांति, उपनिवेशवाद की समाप्ति, सामाजिक दमन के विरुद्ध तथा मनुष्य मात्र की प्रगति के लिए संघर्ष ऐसे प्रश्न हैं जो कि भारत तथा सोवियत संघ के लोगों को एक-दूसरे के निकट लाते और एक-दूसरे के प्रति गहरी सूझबूझ और आपसी मित्रता की मजबूत आधारशिला रखते है।

नेहरू के मानवतावादी विचारों ने विश्व के विभिन्न देशों के बीच शांति तथा मित्रता स्थापित करने के उनके प्रयत्नों के रूप में आकार ग्रहण किया। नेहरू इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि विभिन्न देशों के बीच शांति का प्रश्न अंततः भारत की विकराल समस्याओं के प्रति उनकी सजगता के साथ जुड़ा है। उनका विश्वास था कि यदि भारत को अपना पुनर्निर्माण करना है तो उसके लिए शाति परम आवश्यक है। उन्होने कहा था कि अगर दुनिया युद्ध में उलझ जाती है तो नये भारत के भविष्य के सपने धूल में मिल जायेंगे। नेहरू की दृष्टि में शाति भारत में ही नहीं बल्कि दूसरे देशों में भी प्रत्येक व्यक्ति के लिए और फिर मानवमात्र के लिए मानवतावादी आकांक्षाओं की पूर्ति की अनिवार्य शर्त थी। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हमारा काम शाति की रक्षा करना है, जिसका वास्तविक मतलब है—अपनी सभ्यता की रक्षा करना।

हम अगर गहराई से सोचें तो यह स्वयं ही स्पष्ट हो जाता है कि नेहरू सोवियत संघ तथा भारत के बीच विभिन्न क्षेत्रों में आपसी सहयोग बढ़ाने के प्रति प्रतिबद्ध क्यों थे।

१९४६ में जबकि भारत से ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन समाप्त होने जा रहा था तो नेहरू ने दिल्ली में आयोजित एशियाई एकता सम्मेलन में भाग लेने के लिए सोवियत प्रतिनिधियों को निमंत्रित किया। तब से सोवियत संघ और भारत के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान निरंतर विकसित होता गया है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए होने वाले वार्षिक समझौतों के अधीन शिक्षा, कला, विज्ञान तथा तकनीकी क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच आपसी सहयोग बढ़ता गया है। इन समझौतों के अनुसार उपरिलिखित क्षेत्रों के लोगों के तथा महिलाओं और युवा संगठनो के प्रतिनिधि मंडलों के एक-दूसरे के देशों में जाने की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। एक-दूसरे की साहित्यिक कृतियों का अनुवाद करने, ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न विषयों की पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं का आदान-प्रदान करने और आपसी सहयोग के आधार पर प्रदर्शनियाँ आयोजित करने को हर प्रकार से समर्थन तथा प्रोत्साहन दिया गया है।

सोवियत संघ और भारत के बीच होनेवाले इस सम्पूर्ण आदान-प्रदान में स्वाधीन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री, एक असाधारण मानवतावादी और विचारक जवाहरलाल नेहरू का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान है।

## कलाकार, राजनीतिज्ञ और भारत का सच्चा सपूत—नेहरू

इल्या एहरनबर्ग

लेखक, अन्तर्राष्ट्रीय लेनिन पुरस्कार के विजेता। १६५६ में भारत का दौरा किया। अपने लेख, 'इम्प्रेशन्स ऑफ इण्डिया' में उन्होंने अपनी इस यात्रा का वृत्तान्त प्रस्तुत किया है

मेरी दिल्ली यात्रा संयोग से मेरे पैंसठवें जन्म दिवस के अवसर पर हुई। कुछ लोगों का कथन है कि वृद्धावस्था में व्यक्ति २० वर्ष की उम्र के मुकाबले ज्यादा बेहतर ढंग से समझने लगता है। मैं नहीं जानता कि यह कहाँ तक सच है। अगर सचमुच ऐसा है और उम्र के साथ-साथ मनुष्य का ज्ञान बढ़ता है तो भी वह प्रकृति की एक अमूल्य भेंट से वंचित हो जाता है। यह अमूल्य भेंट—आश्चर्यचकित हो सकने की क्षमता—युवावस्था की अपनी विशेषता है। भारत को देखकर मै आश्चर्यचकित हुआ। इसे देखकर मैने महसूस किया गोया मैं दुनिया को एकदम नयी दृष्टि से देख रहा हूँ।

जिस भी व्यक्ति ने नेहरू की पुस्तकें पढ़ी हैं, वह जानता है कि नेहरू एक असाधारण किस्म के दिलचस्प बातचीत करने वाले रहे होंगे। उन्हें विविध विषयों का गहरा ज्ञान प्राप्त था और उनका जीवन नाटकीय घटनाओं तथा अनुभवों से भरा था। मुझे उनसे मिलने का अवसर मिला तो स्वाभाविक रूप से मेरी दिलचस्पी विश्व शांति की स्थापना में भारत के योगदान जैसे महत्त्व-पूर्ण विषय में थी। नेहरू अपने देश की शांतिप्रियता की नीति पर बहुत विस्तार से और गम्भीरतापूर्वक बोले। उनमें एक अनुभवी राजनीतिज्ञ की दृष्टि और एक कलाकार की अभिव्यक्ति-कुशलता थी। वह भारत के साधारण लोगों के निकट सम्पर्क में रहते थे और उनसे हार्दिक प्रेम करते थे।

मुझे जवाहरलाल नेहरू का वह रूप भी अच्छी तरह याद है जब कि वह

मास्को के बासमन्त्राया मार्ग पर गाड़ी में गुजरे। याद है कि स्वागत के उत्साह में भरे लोगों ने कैसे उनकी कार को फूलों से लाद दिया था। वे गहरे कासनी रंग के उत्तर के फूल थे और उस दिन मास्को का हृदय उत्साह से प्रफुल्लित था।

मुझे नेहरू से मिलने और उनसे बातचीत करते हुए एक पूरी शाम बिताने का सुअवसर मिला। नेहरू ने कहा कि वह विषय को दार्शनिक ढंग से पेश नहीं करना चाहते, क्योंकि वह जानते है कि यह दार्शनिकों का प्रदेश है।

मैं पेशेवर राजनीतिज्ञ नहीं हूँ और इसीलिए यह निर्णय दूसरों के लिए छोड़ता हूँ कि नेहरू ने अपने देश के लिए क्या किया और क्या नहीं किया। उनका देश उपनिवेशवादियों द्वारा लूटा गया एक प्राचीन, विविध तथा गहन संस्कृति का देश है। मैं तो केवल खुले विचारों के उस आदमी के बारे में बात करना चाहता हूँ, जिससे कि विभिन्न विषयों पर सहज ढंग से विचार-विमर्श किया जा सकता था।

नेहरू का व्यक्तित्व केवल राजनीतिक समस्याओं तक ही सीमित नहीं था। वह उन प्रश्नों में भी गहरे उतरते थे जो कि समसामयिक राजनीति के दायरे से बाहर के हैं। यह शायद उनके देश की शताब्दियों पुरानी सांस्कृतिक परम्पराओं की विरासत के कारण सम्भव था। भारतीयता नेहरू की हड्डियों तक मे समायी थी लेकिन उनकी दृष्टि में भारत की राष्ट्रीय प्रतिभा के सांस्कृतिक उत्कर्ष का अर्थ कभी भी आध्यात्मिक अलगाव और जीवन की समस्याओ से दूर भागना नहीं होता था।

नेहरू ने मुझसे तॉलस्ताय, रोमा रोलाँ और बर्नार्ड शा की रचनाओं पर बातचीत की। वह इन महान् लेखकों के भाषण सुन चुके थे। उन्होंने मुझे उन परिस्थितियों के बारे में बताया, जिनमें कि उन्हें अक्तूबर क्रांति की खबर मिली थी। बातचीत में नेहरू ने लेनिन को एक ऐसा व्यक्ति बताया जिसने कि मनुष्य की चेतना को जाग्रत करने के काम में बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान किया।

एक बार जब कि विश्व शान्ति परिषद् के ब्यूरो की नयी दिल्ली मे बैठक हो रही थी तो हमें एक बार फिर नेहरू से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। उस अवसर पर उन्होंने बहुत उत्साहपूर्वक कहा कि शान्ति के लिए कार्य करना हमारे समय का सबसे बड़ा आन्दोलन है।

# शान्ति तथा अफ्रो-एशियाई एकता के प्रबल समर्थक

अनातोली सोफरोमोव

लेखक, अफ्रो-एशियाई एकता की सोवियत समिति के उपाध्यक्ष

भारतीय इतिहास का एक पूरा युग—राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए उपनिवेशवाद के विरुद्ध जनता का संघर्ष और फिर पुनर्जागरण तथा जनता के लिए बेहतर जीवन जुटाने का संघर्ष जवाहरलाल नेहरू के नाम के साथ अविभाज्य रूप से जुडा है ।

पिछले दो दशकों में मुझे अनेक बार भारत की यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । मैने भारत और सोवियत संघ के बीच मित्रता को उभरते और मजबूत होते हुए देखा है । भारतीय जनता के विभिन्न वर्गों में इस मैत्री की गहरी जड़ें देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है । इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि यह मैत्री दोनों देशों की आपसी सूझ-बूझ और गहरे विश्वास के आधार पर खड़ी है और यह एक ऐसा महान् कार्य है, जिसमें कि नेहरू ने व्यक्तिगत रूप से बहुत योगदान किया ।

नेहरू अफ्रो-एशियाई एकता आन्दोलन के संवाहक थे ।

पहली अफ्रो-एशियाई एकता कान्फ्रेन्स की तैयारी के सिलसिले में १९५५ में अपने अस्सी दिन के भारत प्रवास के दौरान मैं और दूसरे बहुत से देशों के प्रतिनिधि प्रायः नेहरू से मिलते रहे । उसके बाद प्रधानमन्त्री ने नई दिल्ली मे एशियाई लेखक सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में भाग लिया । नेहरू से मिलने वाला कोई भी व्यक्ति विभिन्न विषयों में उनकी गहरी दिलचस्पी की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता । वह राजनीतिक, दार्शनिक और लेखक—तीनों एक साथ थे ।

विश्व शान्ति के प्रबल समर्थक और महान् मानवतावादी के रूप में नेहरू का सम्पूर्ण जीवन और उनके कार्य सोवियत संघ सहित दुनिया के करोड़ों लोगों की प्रशंसा प्राप्त कर चुके हैं ।

नेहरू अफ्रो-एशियाई जगत में एक असाधारण व्यक्तित्व रखते थे । उन्होंने विभिन्न उपनिवेशवाद-विरोधी शक्तियों के बीच एकजुटता और दृढ़ता कायम करने में उल्लेखनीय योगदान किया । नेहरू ने बार-बार कहा कि एशियाई और अफ्रीकी देशों की एकता कोई अमूर्त अथवा संयोगात्मक धारणा नहीं है । इसके

विपरीत इन देशों की एक-दूसरे के निकट आने की ललक स्वाभाविक है और उनकी उस समान ऐतिहासिक नियति में से प्रस्फुटित हुई है जिसे कि उन सबको अपनी स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए अत्यन्त घृणित उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष करते समय झेलना पड़ा।

नेहरू ने ठीक ही कहा था कि जो देश राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त कर चुके है, उनके सामने अत्यंत गम्भीर और तात्कालिक महत्त्व के काम है—अपनी प्रभुसत्ता की रक्षा करना और उलझी हुई सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं को हल करना। इसीलिए नेहरू ने जोर देकर कहा कि अफ्रो-एशियाई एकता का आन्दोलन केवल समान ऐतिहासिक मार्ग, समान भौगोलिक परिस्थितियों और समान सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं पर ही आधारित नहीं, बल्कि ये देश भूतकाल में और अब भी अपनी एक विशेष समानता के कारण एक रहे हैं। यह समानता है—हर सम्भव रूप में उपनिवेशवाद और नस्लवाद का विरोध करना। नेहरू ने फिर कहा कि जो देश उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के शिकजे से अपने को मुक्त करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, उन्हें समर्थन देना अफ्रो-एशियाई एकता की आधारभूत स्थापनाओं में से एक है। इस प्रकार के समर्थन के लिए नेहरू द्वारा की गई अपीलों को व्यापक तथा उत्साहपूर्ण प्रत्युत्तर मिले।

नेहरू ने नये उपनिवेशवाद की घुसपैठ का दृढ़तापूर्वक विरोध किया। उन्होंने उत्साह-भरे शब्दों में अफ्रीकी जनता द्वारा चलाये जा रहे शौर्यपूर्ण संघर्ष की सराहना की और कहा कि उनकी यह जागृति और स्वाधीनता संघर्ष बीसवी शताब्दी की बहुत महत्त्वपूर्ण घटनाएँ है।

अफ्रो-एशियाई एकता की समस्या पर नेहरू के विचार और विभिन्न प्रगतिशील आन्दोलनों के बीच निकट संबंध स्थापित करने के लिए उनकी अपीलें इस सचाई के साथ जुड़ी हैं कि नेहरू एशिया, अफ्रीका और पूरी दुनिया मे शान्ति स्थापित करने के संघर्ष के प्रति किस सीमा तक सजग थे। नेहरू ने बार-बार कहा कि नये स्वतंत्र हुए देश केवल शांति की स्थिति में ही अपने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की कठिन समस्याओं को हल कर सकते हैं।

# नेहरू की याद

इराक्ली अबाशीद्ज़े
कवि, नेहरू पुरस्कार के विजेता

दिसम्बर १९५६ में दिल्ली में आयोजित एशियाई लेखक सम्मेलन के मंच पर जैसे ही नेहरू पहुँचे, मैंने उन्हें तुरन्त पहचान लिया। उनकी पुस्तक **भारत की कहानी** १९५५ में रूसी में प्रकाशित हुई थी और मैंने उसे बहुत रुचि के साथ पढ़ा था। अब मैं उस व्यक्ति को अपनी आँखों से देख रहा था, जिसने कि पुस्तक लिखी थी। मैं उस स्मरणीय सम्मेलन के मौके पर ही नहीं, बल्कि पुस्तक पढने के बाद पिछले पूरे साल में नेहरू का प्रशंसक रहा था। इस समय मैं एक ऐसे महान् योद्धा को देख रहा था, जिसने कि अपनी जिन्दगी के बेश-कीमती साल औपनिवेशिक भारत की जेलों मे बिताये थे। वह पूर्व के एक महान् चिंतक, कलाकार, कवि और भारत के प्रधानमंत्री है। उन्होंने स्वयं अपने बारे में लिखा है, "मैं भी एक ऐसा असामान्य व्यक्ति था, जिसके भीतर अनोखे रहस्य और ऐसी गहराइयाँ थीं, जिन्हें कि खुद मैं भी कभी नहीं नाप सका।"[1]

शायद मैं नेहरू को उनकी सम्पूर्णता में कभी भी समझ नहीं सका और न ही अब समझ पाने में समर्थ हूँ। लेकिन, लगता है, मैं उनके व्यक्तित्व के उस पक्ष को जरूर समझ सका जो कि कम से कम मेरी दृष्टि मे भारत के इस महान् सपूत की मानसिकता का प्रमुख लक्षण है। उनका दृढ़ विश्वास था कि संसार के एक ज्यादा बड़े हिस्से में मानव जाति को जो कुछ प्राप्त है, वह उससे कहीं ज्यादा की हकदार है। नेहरू उस मार्ग को जानते थे जिस पर चलकर मानवता उससे कहीं ज्यादा को प्राप्त कर सकती है। नेहरू के सामने सोवियत संघ का उदाहरण था। सोवियत संघ यानि उस लेनिन की जन्मभूमि, जिसकी नेहरू सदा प्रशंसा करते थे।

भारतीय प्रधानमंत्री ने एक शानदार भाषण दिया, जिसमें उन्होंने महात्मा गांधी की इस माँग पर बहुत जोर दिया, "आज हमें जीवन के अत्यंत महत्त्व-पूर्ण विषयों को लेना है,...मैं ऐसी कला और साहित्य चाहता हूँ जो करोड़ों

१. जवाहरलाल नेहरू, डिस्कवरी ऑफ़ इडिया, पृष्ठ २७।

लोगों से अपनी बात कह सके।"[1]

महात्मा गांधी ने ये शब्द संघर्षरत भारत के कलाकारों तथा साहित्यकारों को संबोधित करते हुए कहे थे। नेहरू ने तमाम देशों के सृजनात्मक रचनाकारों से अनुरोध किया कि ऐसे समय हमें बहुत सतर्क रहने की जरूरत है, जब कि साम्राज्यवादी शक्तियाँ अपना प्रभाव बढ़ाने में लगी हैं। उन्होंने आग्रह किया कि हमें शान्ति, प्रगति तथा मानवतावाद, स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों की रक्षा के लिए अपने प्रयास दुगुने कर देने चाहिए। जो देश कुछ समय पहले ही स्वतन्त्र हुए हैं, उन देशों के साहित्यकारों की जिम्मेदारियों पर नेहरू ने विशेष बल दिया। उन्होंने उन देशों की कठिनाइयों और समस्याओं, विशेष रूप से भाषा तथा साहित्य के विकास की समस्याओं की चर्चा भी की।

हम सोवियत लेखक के उस दायित्व को अच्छी तरह अनुभव करते है जो कि उसने हमारे देश को एक नये समाजवादी देश में बदलने और हमारे दुश्मनों के विरुद्ध संघर्ष में निभाया है। जवाहरलाल नेहरू सम्भवतः उस अनुभव के बारे में अच्छी तरह जानते थे, जो कि सोवियत साहित्य और कला ने प्राप्त किया था। उन्होंने सोवियत संघ की वास्तविकताओं का गहराई से अध्ययन किया था और विभिन्न क्षेत्रों में उसकी उपलब्धियों से प्रभावित हुए थे।

१३ जून १९५५ एक गर्म दिन था। उस समय हम तबिलिसी हवाई अड्डे पर अपने भारतीय मेहमानों का इन्तजार कर रहे थे। मजाक में किसी ने कहा कि हमने उनके उपयुक्त मौसम बना लिया है। नेहरू अपनी बेटी इन्दिरा गांधी और दल के दूसरे सदस्यों के साथ तबिलिसी पहुँचे।

जब वायुयान के दरवाजे खोले गये तो एक लम्बा व्यक्ति अपने देश की राष्ट्रीय वेश-भूषा में और हाथ में चन्दन की छड़ी लिये हुए नजर आया। वह माइक्रोफोन के पास पहुँचा और स्वागत भाषण के उत्तर में उसने कहा : "आपके इस महान् देश में हमारा हर जगह भव्य स्वागत हुआ है। इन सभाओं में मुझे पता चला कि सोवियत जनता हमारे देश को कितना प्यार करती है। मुझे विश्वास है कि शान्ति हमेशा सब देशों की एक बड़ी आवश्यकता रही है, और आज तो यह और भी बड़ी आवश्यकता बन गई है।"[2]

उसी शाम मेहमानों को लोहे के रस्सों पर चलने वाली रेल का तबिलिसी की सबसे ऊँची चोटी पर बना प्लेटफार्म दिखाने का आयोजन किया गया।

१. डिस्कवरी ऑफ इंडिया, पृष्ठ ३४२।
२. सोवियत लैंड, १९७३, संख्या १०।

इस प्लेटफार्म से पूरे शहर का दृश्य दिखाई देता है और रात में जब कि शहर बिजली के कुमकुमों से चमचमा रहा होता है, तो यह दृश्य बहुत ही मनोरम बन जाता है। नेहरू और इन्दिरा गांधी बहुत उत्साहपूर्वक इस दृश्य की प्रशंसा कर रहे थे।

अगले दिन नेहरू और इन्दिरा गांधी को रुस्तावी नामक नगर दिखाया गया। यह नगर तबिलिसी से २० किलोमीटर दूर है और पिछले महायुद्ध के बाद बसाया गया है। आज रुस्तावी सोवियत संघ में इस्पात का सबसे बड़ा केन्द्र है। शहर का दौरा करने के बाद नेहरू ने कहा कि जल्दी ही भारत में भी सोवियत सहायता से ऐसा ही एक कारखाना बनाया जायेगा। असल में वह भिलाई कारखाने का जिक्र कर रहे थे। आज भिलाई का यह कारखाना पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। संयोग से भिलाई इस्पात कारखाने में जार्जिया के विशेषज्ञों ने भी काम किया है। १६७० में जबकि मैं दिल्ली में था तो भिलाई में काम करनेवाले जार्जिया के कुछ इंजीनियर वहाँ आये और जनपथ होटल में मुझसे मिले। उन्होंने मुझे भारत में बीत रहे अपने जीवन के बारे में बहुत-सी दिलचस्प बातें बतायी और कहा, "लेकिन एक दिन हमें फिर तबिलिसी ही जाना है।"

नेहरू और उनके दल ने शहर के आसपास के दर्शनीय स्थानों को देखने का कार्यक्रम बनाया। १४ जून को विदा होने से एक दिन पहले उन्होने अपने एक विदाई भाषण में कहा, "मैं आपको और खूबसूरत जार्जिया के सभी नागरिकों को हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे अपनी यह यात्रा सदा याद रहेगी।"

संयोग से नेहरू की इस यात्रा के दौरान हमें उनके बारे में एक नयी जानकारी मिली। स्वेरदवलोवस्क मे नेहरू ने एक भू-गर्भ संग्रहालय का अवलोकन किया। बाद में उन्होने दर्शकों की पुस्तिका में लिखा, "यह एक अच्छा संग्रहालय है। यह वैसे तो सभी लोगों के लिए दिलचस्प है, लेकिन जिन्होंने भू-गर्भ विज्ञान पढ़ा है, उनके लिए तो विशेष रूप से आकर्षक है, क्योंकि मैंने विद्यार्थी जीवन में भू-गर्भ विज्ञान पढ़ा था, इसलिए इस संग्रहालय को देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। संग्रहालय में विभिन्न प्रकार की कच्ची धातुओं का जो संग्रह किया गया है, उसका विस्तृत अध्ययन करके मुझे और भी खुशी होगी।

उस समय नेहरू के जीवन के बारे में बहुत अधिक नही जानता था। यह जून १६५५ की बात है और **भारत की कहानी** उसके बाद सोवियत संघ मे प्रकाशित हुई। लेकिन नेहरू के बारे में मेरी अपनी खोज तो उसी समय शुरू हो गई।

···यह लिखते समय मुझे बार-बार एहसास हो रहा है कि नेहरू जैसे महान् व्यक्ति के नाम पर जो पुरस्कार दिया जाता है, उसे पानेवाले लेखक के ऊपर बहुत-सी जिम्मेदारियाँ आ जाती हैं। हम उस पृथ्वी पर रहते हैं, जो कि एक ऐसे बड़े घर की तरह है, जिसमें कि बहुत-से लोग एकसाथ रहते हैं। इस घर की रक्षा करना हम सबका कर्तव्य है। अगर हम सब जवाहरलाल नेहरू की तरह पूरी लगन से शान्ति की रक्षा के लिए प्रयत्न न करें, तो किसी भी समय इस घर पर विपत्ति आ सकती है। मुझे जो पुरस्कार मिला है, वह केवल मुझे ही नहीं, बल्कि सोवियत संघ के बुद्धिजीवियों ने भारत एवं सोवियत मैत्री के लिए और मनुष्य मात्र के भविष्य को और सुखी बनाने के लिए जो प्रयत्न किया है, उसके लिए भी दिया गया है। हम इस संघर्ष में अपने दायित्व के प्रति, मनुष्य मात्र के प्रति अपने कर्त्तव्य के बारे में पूरी तरह सजग है।

## वह आज भी मेरे गीतों में जिन्दा हैं

रसूल रज़ा

अजरबाईजान के कवि

मैं भारत दो बार गया हूँ। अपनी दूसरी यात्रा के दौरान मुझे जवाहर-लाल नेहरू से मिलने का सौभाग्य मिला। यह १९६३ की बात है। उस समय मुझे सोवियत संसद् सदस्यों के एक दल के रूप में भारतीय संसद को देखने का मौका मिला। एक बैठक के बाद हमें बताया गया कि अगले दिन हमें भारत के प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू से उनके निवास-स्थान पर मिलना है। हम वहाँ दोपहर ग्यारह बजे पहुँचे और हमें एक सादे ढंग से सजाये गये कमरे में बैठाया गया। फौजी वर्दी में एक अधेड़ व्यक्ति दरवाजे के पास खड़ा था। उसने हमसे बैठने के लिए कहा और अन्दर के कमरे में चला गया। लौटने पर उसने बताया कि नेहरू आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

वह क्षण अभी भी मेरी स्मृति में ताजा है। नेहरू ने खुली मुस्कान के साथ हमारा स्वागत किया। उनकी आँखों में एक बहुत ही तीखी अभिव्यक्ति थी। लगभग आधा घण्टे तक हमारी बातचीत चलती रही। नेहरू ने सोवियत संघ के साहित्य और विज्ञान की प्रगति के बारे में विशेष रूप से और पूरे देश के

बारे में सामान्य रूप से बहुत से प्रश्न पूछे । वह जानना चाहते थे कि सोवियत संघ के विभिन्न प्रदेश वहाँ की संस्कृति की परम्पराओं को बनाये रखने के लिए क्या कुछ कर रहे है और विभिन्न प्रदेशों की भाषाओ का विकास करने के लिए क्या किया जा रहा है । नेहरू ने मेरी कविताओं और कहानियो में बहुत दिलचस्पी ली, जो कि मैंने भारत के बारे में लिखी थीं। मैने उन्हें रवीन्द्र-नाथ ठाकुर की कहानियों का वह संकलन भेंट किया जो कि अजरबाईजान की भाषा में प्रकाशित हुआ था और वहाँ बहुत लोकप्रिय था । उस भेंट को पाकर वह भी बहुत प्रसन्न हुए । उन्होने मुझे धन्यवाद दिया और कहा कि एक लम्बे समय से पूर्वी देशों के लोग सांस्कृतिक और वैज्ञानिक सम्बन्ध बनाये हुए हैं । अब इन सम्बन्धों को आगे बढ़ाने का समय आ गया है । उनका विश्वास था कि समय और राजनीतिक मतभेदों ने जो अवरोध इन देशों के बीच खड़े कर दिये हैं, उन्हें साहित्य और कविता के द्वारा काफी हद तक दूर किया जा सकता है ।

हमारी बातचीत के बाद नेहरू ने आश्वासन दिया कि हमारी भारत यात्रा को अधिक से अधिक सुखद और लाभप्रद बनाने के लिए वह हर सम्भव प्रयत्न करेंगे ।

बहुत-से ऐसे लोग होते हैं, जिनसे कि हम वर्षों तक बराबर मिलते रहते हैं, लेकिन जब उनसे अलग होना पड़ता है, तो हमें कोई खास तकलीफ नहीं होती । इसके विपरीत कुछ ऐसे लोग होते हैं, जिनसे कि हमें थोड़ी ही देर के लिए मिलने का मौका मिलता है, लेकिन उनसे विदा होते समय मन बहुत भारी होता है और उनकी याद जीवन-भर बनी रहती है । नेहरू एक ऐसे ही व्यक्ति थे । वह आज भी मेरी स्मृति मे जिन्दा है और जब तक मै रहूँगा, जब तक इसी तरह बने रहेंगे ।

# मेरे जीवन में भारत

राशिद बी० बुतोव
सोवियत संघ के जन कलाकार

कहा जाता है कि कुछ ही ऐसे लोग होते है, जो सपनों में रंग देखते हैं। मैं चार बार भारत गया और इन चारों यात्राओं में मैने रंगीन सपने देखे। मेरी पहली भारत यात्रा १९५३ में हुई।

भारत में जहाँ-जहाँ मेरे कार्यक्रम हुए, लोगों ने बहुत बड़ी संख्या में उनमें भाग लिया। मैं विभिन्न शहरों और गाँवों में गया और मंचों पर तथा खुली जगहों में अपने गाने के कार्यक्रम प्रस्तुत किये। बहुत बार तो रेलवे स्टेशनों पर जब कि लोग मेरा स्वागत करने आये, तो मुझे वहाँ गाने का अवसर मिला। मुझे मालूम था कि हालाँकि मेरे गाने रूसी या अजरबाईजान की भाषा में है, फिर भी भारतीय मित्र उन्हें सुनना पसन्द करते थे। असल में "सारे जहाँ से अच्छा" एकमात्र ऐसा गाना था, जिसे कि मै हिन्दी मे गाता था। रूसी और अजरबाईजान भाषा के गानों को भारत में बहुत लोकप्रियता मिली।

भारत में हुई बहुत-सी बैठकों की याद मुझे अभी तक है, लेकिन जवाहरलाल नेहरू के साथ हुई भेट विशेष महत्त्व रखती है। मै उनसे अपनी पहली दो यात्राओं के दौरान मिला। नेहरू ने अपने शानदार निवास-स्थान पर ही हमारा स्वागत किया। हमारे लिए एक गार्डन पार्टी का आयोजन किया गया था। उसके दौरान नेहरू ने मुझसे कहा—मुझे पता चला है कि आप भारतीय गानों को ठीक उसी तरह गाते हैं, जैसे कि हम। क्या आप गाने की कृपा करेंगे?

मैंने "सारे जहाँ से अच्छा" गाया। गाना समाप्त हुआ तो नेहरू ने कहा कि उन्होंने हर शब्द गौर से सुना है। आश्चर्य है कि आपका उच्चारण बिल्कुल सही है। उन्होंने पूछा कि क्या आप काफी लम्बे समय तक हिन्दी पढ़ते रहे हैं?

इसके बाद नेहरू ने हमें शाम के खाने का निमन्त्रण दिया। नेहरू अपनी उँगलियों से खाना खा रहे थे। मैने भी उनका अनुकरण किया। नेहरू हँसे और बोले: आप लगभग वैसे ही खा रहे है जैसे कि हम खाते हैं। पार्टी काफी देर तक चलती रही और बहुत आनन्ददायक रही। विदा होते समय नेहरू ने पूछा कि अगर वह बुलायेंगे, तो क्या हम फिर भी आयेंगे। मैने उत्तर

दिया कि भारत तो मेरी मातृभूमि बनता जा रहा है। नेहरू ने मुझे गले लगाया और कहा कि वह हमसे जल्दी ही फिर मिलेगे।

अजरबाईजान लौटने पर मैंने कुछ और भारतीय गीत तैयार किये। कुछ साल बाद फिर भारत यात्रा पर जाना हुआ, तो मै नेहरू से मिला। इस बार भी नेहरू हमें बगीचे मे ही मिले। उन्होने एक पुराने मित्र की तरह हमारा स्वागत किया और पूछा कि क्या इस बार आप कुछ नये भारतीय गीत लाये है ? सोवियत प्रतिनिधि मण्डल के दूसरे सदस्यों की तरफ मुड़ते हुए उन्होने मजाक में कहा, "आप में से बहुत-से लोग पहली बार भारत आये है, लेकिन आपके बीच एक ऐसे सदस्य भी हैं, जिन्हें कि हम अपना प्रतिनिधि मानते हैं। यदि आपके सामने कोई कठिनाई हो, तो आप राशिद से कहें, वह उसे दूर कर देंगे।"

उसके बाद दो बार फिर मुझे भारत आने का मौका मिला। मेरी अन्तिम भारत यात्रा इन्दिरा गांधी के निमन्त्रण पर थी। इस बार मै एक सोवियत गायन महोत्सव में भाग लेने के लिए भारत आया था और सोवियत प्रतिनिधि मण्डल का कला-निदेशक था। श्रीमती गांधी बहुत उत्साह के साथ मुझसे मिलीं। वे मेरे बहुत-से गायन कार्यक्रमों में सम्मिलित हो चुकी थी और उन्होंने मेरे भारतीय तथा रूसी गानों को बहुत पसन्द किया था। १३ भारतीय नगरों मे मैंने अपने गायन के कार्यक्रम प्रस्तुत किये और उनमें भारतीय तथा रूसी दोनों ही प्रकार के गाने गाये। आखिरी कार्यक्रम समाप्त होने पर इन्दिरा गाधी मंच पर आयीं और उन्होंने मुझे एक फूलों की माला भेंट की।

## वह मेरे पिता, के समान थे

एलीमीरा रागीमोवा

अजरबाईजान के प्रसिद्ध कलाकार

भारत के बारे में मेरी दिलचस्पी उसके गीतों से बढ़ी। २१ जनवरी, १९५५ को मास्को में भारत के सम्बन्ध में होने वाले एक उत्सव में मुझे आमन्त्रित किया गया था। वहाँ मैंने भारतीय फिल्मों (आवारा, बैजू बावरा) से बहुत से गाने गाये। श्रोताओं में भारतीय राजदूत श्री के० पी० एस० मेनन

भी थे। कार्यक्रम के बाद श्री मेनन ने मुझे उस आनन्द के लिए धन्यवाद दिया, जो कि कार्यक्रम मे उन्हे प्राप्त हुआ था। साथ ही उन्होने कहा कि वे इस बार दिल्ली जायेंगे, तो प्रधानमन्त्री नेहरू से मेरी चर्चा करेंगे।

मेरी पहली भारत यात्रा से काफी पहले अजरबाईजान के श्रोता भारतीय फिल्मों के गानों के मेरे कार्यक्रम सुनते रहे थे और उन्हें पसन्द करते रहे थे। यह गाने मैंने भारतीय फिल्म देखकर याद कर लिये थे और उन्हें जनता को सुनाना शुरू कर दिया था।

सितम्बर १९५७ में मुझे स्वयं जवाहरलाल नेहरू का एक तार मिला। उन्होंने मुझे भारत आने का निमन्त्रण दिया था। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। कुछ दिन बाद मैंने अपने मित्रों से विदा ली और भारत के लिए रवाना हो गया। कभी-कभी मुझे अटपटा लगता है कि लोग क्यूँ समारोह के बारे में जो कि भारत में मेरे स्वागत में आयोजित किये गये, बेपनाह सवाल पूछने लगते है। मुझे वह अवसर बहुत अच्छी तरह याद है, जबकि मुझे पहली बार प्रधानमत्री नेहरू से मिलाया गया। यह रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा स्थापित शान्ति निकेतन विश्वविद्यालय की घटना है। वहाँ मुझे कला विभाग मे प्रथम वर्ष की छात्रा के रूप मे दाखिल किया गया था। मेरे सहपाठी मित्रो ने आग्रह किया कि जब मैं नेहरू से मिलूँ तो मुझे साड़ी पहननी चाहिए। कुछ समय बाद हम कई छात्राएँ प्रधानमत्री से मिलने के लिए एक कमरे मे गई। वे हमसे उत्साह-पूर्वक मिले और थोड़ी ही देर बाद उन्होंने पूछा, "सोवियत संघ से आयी हुई लड़की कहाँ है ?" मैं नेहरूजी के ठीक सामने खड़ी हुई थी और महसूस कर रही थी कि दूसरी भारतीय लड़कियों के बीच वे मुझे अलग से नहीं पहचान पा रहे है। जब उनसे मेरा परिचय कराया गया तो उन्होंने मेरी तरफ ऐसे देखा, जैसे परिचय कराने वाले पर विश्वास न कर रहे हों। अपने दल के दूसरे सदस्यों की तरफ मुड़ते हुए नेहरू ने कहा, "मैं इस लड़की को कल सुबह चाय पर बुला रहा हूँ। उस समय मैं इसे इसकी अपनी राष्ट्रीय वेशभूषा में देखना पसन्द करूँगा।"

अगले दिन सुबह मैने अपनी अजेरबाईजान की राष्ट्रीय वेशभूषा पहनी और जब मै नेहरूजी के कमरे पर स्वागत के लिए पहुँची, तो मैंने देखा कि शान्ति निकेतन के सभी विदेशी छात्र वहाँ मौजूद थे। मेरा स्वागत करते हुए उन्होंने कहा, "अब तुम सचमुच रूसी बन गई हो।" उस सारे आयोजन में मै नेहरू के पास बैठी रही। एक मौके पर उन्होंने मुझे अजरबाईजान का राष्ट्रीय गीत गाने के लिए कहा। मैं नेहरू की सादगी से बहुत प्रभावित हुई।

वह बहुत मजाक करते थे और ऐसी हँसी हँसते थे जो कि दूसरों को भी हँसा देती थी। उन्होने कहा कि तुम आश्चर्यजनक रूप से भारतीय लड़की हो। लगता है यह ईश्वर की गलती से हुआ है कि तुम्हें अजरबाईजान में पैदा कर दिया।

मैने कुछ अजरबाईजान के गाने गाये, इस पर नेहरू ने आग्रह किया कि अगर मैं गा सकूँ, तो भारतीय गाना भी गाऊँ। इस पर मैंने भारतीय फिल्मों के भी गाने गाये, जो कि रूस में रहते हुए सीखे थे। नेहरू ने मुझसे पूछा कि क्या तुम इन गानों का मतलब भी समझती हो ? मैंने हाँ की, तो उन्होंने एक-एक लाइन की व्याख्या मुझसे करवाई।

इस बैठक के दौरान नेहरू बराबर छात्रों से घिरे बैठे रहे। उस स्मरणीय बैठक के बाद छात्रों ने मुझे भारतीय कवयित्री मीरा के अनुकरण पर 'मीरा दी' कहकर पुकारा। मीरा की कविताओं पर आधारित भारत के राष्ट्रीय गीत गाने के लिए बहुत मुश्किल माने जाते हैं। अगली बार नेहरू स्नातक छात्रों के दीक्षांत समारोह मे शान्तिनिकेतन आये, तो मैने उन्हें मीरा का एक भजन भी सुनाया।

भारत में अपने प्रवास के दौरान मैने और भी बहुत से भारतीय गीत सीखे। एक साल पूरा होने के बाद मुझे दूसरे साल भी भारत मे रहने के लिए निमन्त्रित किया गया। मैंने प्रसन्नतापूर्वक इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और दूसरे साल भारत में रहकर वहाँ के राष्ट्रीय नृत्यों का अभ्यास किया।

भारत में रहते हुए मै दो बार नेहरू से मिली। बहुत से लोगों ने मुझे बताया कि शासकीय काम में व्यस्त रहने के बावजूद नेहरू कभी-कभी विश्व-विद्यालय में मेरी प्रगति के बारे मे पूछते रहे हैं।

शान्तिनिकेतन विश्वविद्यालय मे अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद मैं तीन बार फिर भारत गई हूँ। अब नेहरू जीवित नहीं थे। जब मै पहली बार नेहरू से मिली थी, तो उस घटना को कई वर्ष बीत चुके थे, लेकिन उसकी याद अभी तक मेरे मन में ताजा है। मैं उस अद्भुत व्यक्ति को हमेशा याद रखूँगी, जिसने कि व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए इतना कुछ किया। सच तो यह है कि वे मेरे लिए पिता के समान थे।

# नये भारत के निर्माता—नेहरू

रोमन कारमेन

फिल्म निदेशक, लेनिन पुरस्कार के विजेता

१९५५ का वह दिन मुझे अभी तक याद है, जबकि जवाहरलाल नेहरू मेगनितनाया पर्वत के ऊपर एक प्लेटफार्म पर खड़े हुए थे। यह प्लेटफार्म मेगनीत-गोसर्क नगर की एक ऊँची पहाड़ी पर बनाया गया है, जिससे कि वहाँ खड़े होकर नगर और आसपास के इलाके को अच्छी तरह देखा जा सके। वहाँ खड़े हुए नेहरू ने एक रूसी अधिकारी से कहा : यह दृश्य कितना शानदार है और खास तौर से नीचे फैले हुए यह विशाल कारखाने। उन्होंने आगे कहा, हमें ऐसे बहुत से कारखाने लगाने होंगे। यह बहुत आवश्यक है, क्योंकि अब भारत ने आर्थिक विकास की ओर तेजी से कदम बढ़ा दिये है।

यह सम्भव है कि उस समय नेहरू अवश्य भिलाई के इस्पात कारखाने के बारे में सोच रहे होंगे। क्योंकि कुछ ही वर्ष बाद इस विशाल कारखाने का निर्माण कार्यक्रम आरम्भ हो गया। नेहरू से मेरी दूसरी भेंट कुछ साल बाद हुई; जबकि एक सोवियत प्रतिनिधि मण्डल के साथ मैं एक फिल्म के कार्यकर्ता के रूप में वहाँ गया। उस अवसर पर नेहरू ने कई भाषण दिये, जो कि विशेष रूप से इन दो महान् देशों के आपसी मैत्री के सम्बन्ध में थे। उनके भाषणों से पता चलता था कि उन्हें सोवियत तथा भारत मैत्री से कितना प्रेम है और पुराने समय से उनके जो सम्बन्ध रहे हैं, नेहरू उन्हें किस सीमा तक आगे ले जाना चाहते थे।

हमारा फिल्मी दस्ता भारत के सम्बन्ध में एक डाकूमेन्टरी फिल्म 'भारत का उदय' बनाना चाहता था। नेहरू ने हमें आमन्त्रित किया। उन्होंने फिल्म का पूरा कथानक हमसे सुना और उस पर अपनी राय प्रकट की। धीरे-धीरे फिल्म से बात आपसी मैत्री-सम्बन्धों पर आ गयी। नेहरू ने हमें अपने देश के लोगों के बार में, उसके भूतकाल के बारे में, वर्तमान स्थितियों के बारे में और भविष्य के बारे में बहुत-सी बातें बताई। मैं उस महापुरुष की बातें बड़े गौर से सुन रहा था और मेरे मस्तिष्क की आँख बराबर उस फलक पर लगी हुई थी, जिस पर नेहरू का जीवन-संघर्ष चित्रित था। उन्होंने कैसे भारत को उपनिवेश-वाद के पंजे से मुक्त किया और कैसे वे एक महान् विचारक और मानवतावादी के रूप में स्थापित हुए।

उस भेंट के बाद मुझे नेहरू से फिर कई बार मिलने का सौभाग्य मिला। मैंने उनके अध्ययन-कक्ष में पुस्तकों, तस्वीरों और फोटोग्राफ से घिरे नेहरू की फिल्म खींची। उनका घर हमेशा खेलते हुए, मुस्कराते-चहचहाते बच्चों से घिरा रहता था। बच्चों के प्रति नेहरू का प्रेम उनके दो नातियों के प्रति गहरे आकर्षण में भी देखा जा सकता है।

बहुत बार मैंने नेहरू की ऐसी फिल्में भी खींचीं, जिनमें कि वे उन बच्चों में घिरे हुए हैं, जो कि उन्हें बेहद प्यार करते है।

## भारत के महान नागरिक

निकोलाई पैस्तुखोव

पत्रकार

जवाहरलाल नेहरू ने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत की राष्ट्रीय स्वतंत्रता के संघर्ष को और वहाँ के लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए समर्पित कर दिया। नेहरू एक असाधारण राजनीतिज्ञ, कट्टर देशभक्त और विश्व शान्ति के योद्धा थे। वह एक प्रभावशाली वक्ता और प्रतिभाशाली पत्रकार थे और साथ ही अपने देश के इतिहास और संस्कृति के बारे में अमित ज्ञान रखने वाले विद्वान् भी। वह बहुत उदार हृदय, ईमानदार और सचमुच महान् थे।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद और रूस की अक्तूबर क्रांति ने दुनिया में जो कुछ किया, नेहरू ने उसकी भूरी-भूरी प्रशंसा की और उन्होंने संसार में पहले समाजवादी देश सोवियत संघ के मानवीय तथा रचनात्मक सिद्धान्तों को बहुत सराहा।

भारत का राजनैतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक पुनर्जागरण नेहरू के जीवन तथा कार्यों से अविभाज्य रूप से जुड़ा है। भारत में प्रावदा के विशेष संवाददाता के कार्यकाल में मुझे अनेक बार नेहरू से मिलने के अवसर मिले। मैंने संसद् में, जलसों में तथा औपचारिक समारोहों में बहुत बार उनके भाषण सुने और उनके पत्रकार सम्मेलनों में भाग लिया। भारत के उनके दौरों के अवसरों पर और सोवियत संघ की यात्राओं में भी मैं उनके साथ रहा। बहुत बार मुझे उनसे बातचीत करने का सौभाग्य भी मिला।

नेहरू की अतिरिक्त सजगता, निर्दोष वेशभूषा, उनके फुरतीलेपन—कुल

मिलाकर उनके जादूभरे व्यक्तित्व ने मुझे बहुत प्रभावित किया। बहुत से मौकों पर वह अपने नोट्स को एक तरफ रख देते और सीधे-सीधे जो बात मन मे आती, उसे ही श्रोताओ के सामने प्रस्तुत कर देते। उनमे पर्याप्त मात्रा मे शिष्ट तथा मधुर हास्य था लेकिन यदि मौका मजबूर करता तो तीखे व्यंग्य-प्रहार करने से भी वह न चूकते। जब उनके विरोधी उन्हें किसी व्यर्थ के वाद-विवाद में उलझाना चाहते तो वह कोई सीधा किन्तु अकाट्य तर्क उपस्थित करके उनका मुँह बंद कर देते। पत्रकार सम्मेलनों में पश्चिमी देशों के, पीछे पड़ जाने वाले, संवाददाता एक के बाद एक प्रश्न पूछकर उन पर आक्रमण करते तो कभी-कभी वह आवेश में आ जाते और उन संवाददाताओ को हतोत्साह कर देने के लिए अपने तर्कों को ऐसे दबंग तरीके से पेश करते कि संवाददाताओं का उत्साह धीमा पड़ जाता।

इसके विपरीत, समाजवादी देशों के पत्रकारों के साथ वह बहुत आदर तथा विनय का व्यवहार करते। वह हमारी बात बहुत गौर से सुनते और प्रश्नों के विस्तृत उत्तर देते। कभी वह किसी प्रश्न को हल्के से मजाक से खारिज कर देते लेकिन इस बारे में हमेशा सावधान रहते कि मजाक मजाक ही रहे।

नेहरू को उनके पूरे जीवन-काल में भारतीय लोगों का अपार स्नेह प्राप्त रहा। सोवियत संघ की जनता ने भी उन्हें बहुत मान दिया। आज हम भारत के उस महान् सपूत को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते है। हम उन भारत-वासियों की भी बहुत सराहना करते हैं जो कि नेहरू द्वारा प्रज्वलित भारत-वासियों के कल्याण तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की ज्वाला को थामे आगे बढ़ रहे है।

# नेहरू

अलिम केशोकोव
सोवियत कबारदा कवि

सपने देखने की आजादी ?
लेकिन एक गरीब
जिसकी छीन ली गयी है रोटी
और छीन लिया गया है मकान
सो सकता है ?
मुझे शक है—
शक है कि जब विदेशी सिपाहियों के बूटों की
जंगी गड़गड़ाहट के बीच
भूखे बच्चों की चीखों की आवाज
डूब जाती है तो कौन है
जो सो सकता है !

सपने देखने की आजादी ?
लेकिन कोई सो सकता है
ऐसे देश में
जो लिपटा हो वाद-विवाद की लपटों में
और जहाँ

सीमाएँ नहीं, टीसते हुए जख्म
आदमी और आदमी
और भाषा और भाषा के बीच
लकीरें खींचते हों !
नेहरू ! इस अँधेरे पहर में
स्वाधीनता की तुम्हारी पुकार
सपने में नहीं, सचाई में
चीरती चली गयी
पूरे देश ने गुलामी की भट्टी से बाहर झाँककर
साँस ली,
स्वतन्त्रता सेनानियों के दिल
विश्वास और उत्साह से भर गये ।

तुम्हें बंद कर दिया गया था
सींखचों में लेकिन तुम्हारी आवाज
पूरे देश में गूँजती रही
लोगों ने बन्दूकें उठा लीं
और शरीक हो गये उस दस्ते में
जो तुम्हारे झंडे के नीचे खड़ा
स्वतन्त्रता संग्राम में तुम्हारे
पीछे चलने की प्रतीक्षा कर रहा था ।
आखिर युद्ध का समय आया
लोगों ने अपनी बन्दूकें भर लीं
बारूद से ? नहीं, विदेशियों के
प्रति तीखी घृणा से
प्रतिकार की अजेय तलवार
खिंच गयी
तुमने युद्ध का आह्वान किया
और तुम्हारे नेतृत्व में
जनता की विजय हुई ।

# सूरज और चाँद

सैमुअल मारशक
सोवियत कवि

नीले निरभ्र आकाश के नीचे
काँपती हुई लहरें दौड़ रही है
एक चमचमाता स्टीमर घर की तरफ लौट रहा है
पूरा दृश्य सूरज की सफेद धूप से नहाया है

दूर भारत से आने वाला यह स्टीमर
लाया है—मित्रता की एक मधुर भेंट
इसमें एक अनोखा सामान है
दो अद्‌भुत जीव

जैसे ही स्टीमर ओदेसा में पहुँचा
हजारों लोग स्वागत में उमड़ पड़े
लोग जो फूलों की मालाएँ लिये बैठे थे
उनमें सबसे आगे हैं बच्चे

दूर से और नजदीक से
आते ही रहते हैं ओदेसा में जहाज

लेकिन कह सकता है कोई
उन जहाजों में आये हों कभी
सूरज और चाँद ?

ये दो आने वाले अद्‌भुत जीव
आ रहे हैं शायद सीधे आकाश से
नहीं, ये तो हैं सिर्फ नाम उन बच्चों के
हाथी के बच्चों के, जो आ रहे हैं साथ-साथ

ये भारतीय मेहमान खड़े हैं चुपचाप
हाथियों को पसंद नहीं है शोर और आवाज
भारत की ओर से नेहरू ने भेजा है उन्हें
सोवियत लड़कियों और लड़कों के लिए

भारत से वे लाये हैं एक पत्र
भारत जो कि हमसे है इतनी दूर
सीधी भाषा में यह पत्र एक ऐलान है
ऐलान कि शांति के प्रहरी हैं वे

सूरज और चाँद स्टीमर से उतरते हैं
और चल देते हैं सीधे बाहर की तरफ
सधे कदमों से वे धीरे-धीरे चलते हैं
सूंड उनकी लटक रही है नीचे

अपनी यात्रा में उन्होंने आधी दुनिया देखी है
वे कितने शांत हैं और कितने शानदार
अब वे हमारे सोवियत देश में धीरे-धीरे
बड़े हो जायेंगे ठीक मकानों की तरह
दूर देश से आने वाले इन मेहमानों का
हार्दिक स्वागत किया है हमने
दोनों देशों की मित्रता निरंतर बढ़ती रहे
जैसे कि हाथी के ये दोनों बच्चे।

सोवियतलैंड, सं० २०, १९५५

# नेहरू की भस्म

मिर्जा कैम्पे
सोवियत लिथुआनिया कवियित्री

मै कभी साक्षात शरीर थी और अब
केवल भस्म हूँ
सुनो, भस्म क्या कहती है।
मुझे उठाओ, आकाश तक उठाओ
मै पंखों वाली भस्म हूँ और
उड़ना चाहती हूँ !

मुझे नीले आकाश तक उठाओ और वहाँ से
बिखेर दो पूरे भारत की छाती पर
उसे पूरे को ढक दो
जैसे एक आँचल से
और तब मै धीरे-धीरे फुसफुसा कर कहूँगी :
—माँ, क्या तुम मेरे स्पर्श को महसूस कर रही हो ?
जीवन हो या मृत्यु
मै ज्वाला रहूँ या बन जाऊँ भस्म
मैने अपने को पूरी तरह
तुम्हें समर्पित कर दिया है

मुझे छाती से लगाकर
भारत माता कहती है—
बिना शब्दों के चुपचाप :
जवाहरलाल, मेरे प्रिय पुत्र, मैं तुझे आराम से
नहीं बैठने दूंगी और न ही जाने दूंगी
मृत्यु के मुँह में
तुम्हारी भस्म ललक रही है
लाल गुलाब की कलियों के लिए

तुम्हारे जीवन का कमल
सदा-सदा मुझमें खिला रहेगा ।

मैं कभी समुद्र की हरी लहर की तरह
था अजेय
और अब बन गया हूँ—
शांत मटमैली भस्म
सुनो, भस्म क्या कहती है :
—मुझमें से एक मुट्ठी भर उठाओ और उसे बहा दो
इलाहाबाद में गंगा के किनारे से
वहाँ से मैं पहुँच जाऊँगी
अनन्तता की गंगा में
वह मुझे बहाकर ले जाएगी धीरे-धीरे
और फैला देगी दुनिया भर के
समुद्रों में

मैं मनुष्य के विचारों को
और वे मुझसे पूछेंगे :
—शांति के मित्र,
तुम चुप क्यों हो ?
सब इकट्टे हो जाओ और एक-दूसरे के गले लगो
ऐसी भस्म को सिर पर लगाओ
लहर पुकार कर उत्तर देगी
और एक दूसरी लहर का आलिंगन करके
स्वयं उसमें विलीन हो जाएगी
और फिर वह लहर इस अशांत संसार में
आगे बढ़ती रहेगी
बढ़ती रहेगी हर जगह प्रेम और शांति पुकारते हुए
प्रेम और शांति ।

—सोवियतलैंड, सं० १०, १९६५

# जवाहरलाल नेहरू के बाकू आने पर

तौफीक बैराम

सोवियत अजरबैजानियायी कवि

तुमने उसे कहाँ देखा ?
संसार के इस पवित्र नगर में ।
तुमने उसे सबसे पहले कहाँ सुना ?
वहाँ, जहाँ कि मेरी जन्मभूमि है ।
तो फिर उससे मिले कैसे ?
मैंने उसे फूलों से लाद दिया...
और तब हर सड़क पर और
हर गली में, मैने बिखेर दी
मुस्कानें और करतल ध्वनि ।
मुझे बताओ कि उसका आलिगन कैसे किया जाय ?
आलिंगन—बाबेकों की विशाल भुजाओं में ।
उस पृथ्वीपुत्र का स्वागत कैसे किया ?
वीर केरेग्लुओं के आत्मसम्मान के साथ ।
तुमने उसके साथ कैसा व्यवहार किया ?
अपने मन की पूरी उष्णता से ।
मैंने कामना की—
यह मित्रता और यह आत्मविश्वास
ठीक कपाज की तरह
दृढ़ और चिरायु हो !

मुझे याद है—खूब याद है—
जनता का वह उमड़ता हुआ समुद्र
हमारे सबसे प्रिय मेहमान को
दिया गया पर्वत शिखर जैसा सम्मान ।
वह उस राष्ट्र का मस्तिष्क और प्राण था
जो कि अपनी स्वाधीनता के लिए लड़ा ।

उसके भूरे बाल
गंगा की चाँदी जैसी लहरों के समान थे।
तुमने देखा—उसकी आँखें
कैसी चमकीली थीं !
उसका उदार सहयोग
सभी के लिए सुलभ था।

मैंने उसे देखा और फिर
देखा स्वयं अपने को—
उस प्राचीन तथा एकान्त जगह में।
मैंने देखा—दिल्ली और कलकत्ता
खुली भुजाओं से मेरा स्वागत।
मैंने उसकी तरफ देखा और
मुझे याद आया—भारत
उसकी धरती और आकाश
और फिर याद आया—
स्वतन्त्रता के प्रकाश का उद्‌गाता
प्रोमेथियुस।
बाकू के तमाम निवासियों ने हर्ष ध्वनि की
उन हाथों के स्वागत में
जिन्होंने तोड़ दी अंग्रेजी दासता की जंजीरें।
सब उसे स्वतन्त्रता सेनानी कहते हैं
लेकिन जवाहरलाल नेहरू तो
पूरी दुनिया के लोगों का जवाहर और लाल था।

मैं उसकी यात्रा को कभी नहीं भूलूँगा।
वह दृश्य मुझे हमेशा याद रहेगा—
मैं आगे बढ़ा और भीड़ में शामिल हो गया
"हो सकता है—वह मुझे देखें।"
मैं हाथ में फूलों का एक गुच्छा लिये हुए
भीड़ को चीरता हुआ आगे बढ़ा
लेकिन मेरा हाथ उसके हाथ तक नहीं पहुँचा

और तब मुझे उसकी मधुर आवाज सुनायी दी।
हो सकता है—उसने मुझे सम्बोधित किया हो,
हो सकता है—उसने मुझे बधाई दी हो
लेकिन लोगों ने बताया
उसने तो मेरे पूरे देश को पुकारा था।
जैसे ही उसने अपना हाथ हवा में लहराया
मेरे देश के लोगों में खुशी की लहर दौड़ गयी।
लगा जैसे कि पूरा अजरबाइजान
पूरे हिन्दुस्तान के गले लग रहा है।
उसकी आँखो में करोड़ों हिन्दुस्तानियों की
आँखों की चमक आ गयी
और उसके होंठों पर
करोड़ों होंठों की मुस्कान खेल गयी।

वह दो दिन तक हमारा मेहमान रहा
और इस बीच पूरा देश
उसके स्वागत में जागता रहा।
मैंने पूरी रात अपने दरवाजे खुले रखे
कहीं ऐसा न हो कि रात में वह आ जाये।
मेरे यहाँ नहीं तो वह पड़ोसी के यहाँ आ जाये
इसलिए मैं सारी रात जागता रहा
लेकिन व्यर्थ, वह नहीं आया
आश्चर्य! तब मुझे एक सपना दिखायी दिया—
भविष्य में मैं मेहमान बन कर उसके यहाँ गया हूँ।
मैं बच्चा था और उस समय ये सपने
कितने अच्छे और कितने लुभावने लगते थे!
और तब मैंने कामना की—
प्यारे जवाहरलाल स्थायी मेहमान बनकर रहे
मेरे देश के लोगों के दिलों में!

—सोवियतलैंड, संख्या २१, १९७२

# नेहरू ग्रौर 'सोवियतलैंड' पत्रिका

"भारत गणतंत्र की चौदहवीं वर्षगाँठ पर मैं **सोवियतलैंड** को अपनी शुभकामनाएँ भेजता हूँ। इन चौदह वर्षो मे हमें बहुत-सी सफलताएँ मिली हैं तो कुछ असफलताएँ भी। हम असफलताओं से हतोत्साह नहीं हुए हैं। वे भविष्य के प्रयत्नों के लिए प्रेरक बनती है। हमें विश्वास है कि ये प्रयत्न सफल होगे और जो काम हमारे सामने है, उसमें हमें सफलता मिलेगी। यह काम है आधुनिक विज्ञान और तकनीक पर आधारित खेती तथा उद्योग का विकास करना अर्थात् एक नये भारत का निर्माण करना और अपने देश के लोगों के जीवन-स्तर को ऊपर उठाना। हम समाजवादी व्यवस्था की ओर आगे बढ़ना चाहते हैं।

"इस महान् काम में हमें दूसरे देशों के मित्रों से और विशेष रूप से सोवियत संघ से बहुत सहायता मिली है। सोवियत संघ से हमारे बहुत ही घनिष्ठ मैत्री सम्बन्ध है और आशा है कि ये सम्बन्ध न केवल बने रहेंगे बल्कि निकटतर होते जायेंगे।"[1]

भारत में सोवियत दूतावास द्वारा प्रकाशित 'सोवियतलैंड' अंग्रेजी पत्रिका को नेहरू की तरफ से भेजा गया यह अंतिम बधाई-संदेश है। इस पत्रिका का प्रकाशन भारत के राजनैतिक स्वाधीनता प्राप्त करने के कुछ ही समय बाद नवम्बर १९४७ में किया गया था। तब से यह पत्रिका निरंतर भारत तथा सोवियत संघ के मैत्री सम्बन्धों के आरम्भ से लेकर सुदृढ़ होने तक की उनकी

1 'सोवियतलैंड', १९६४, सं० २

प्रगति को और विभिन्न क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच होने वाले आपसी सहयोग को प्रस्तुत करती रही है। भारतीय पाठकों के सामने सोवियत जीवन की वास्तविकता को प्रस्तुत करने के लिए इस पत्रिका ने एक झरोखे का काम किया है और साथ ही साथ दोनों महान् देशों के बीच निरन्तर बढ़ रहे सम्बन्धों के प्रत्येक पक्ष को विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया है। इस क्षेत्र में स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री द्वारा किये गये प्रयत्नों को 'सोवियतलैंड' ने प्रमुखता देकर प्रकाशित किया है।

पत्रिका ने नेहरू के सम्बन्ध में बहुत से लेख प्रकाशित किये हैं। भारत को औद्योगिक दृष्टि से एक आत्मनिर्भर देश बनाने की नेहरू की नीति और उनकी गुटनिरपेक्षता तथा शातिपूर्ण सहअस्तित्व और साथ ही विश्वशांति तथा निःशस्त्रीकरण के क्षेत्रों में किये गये उनके अथक प्रयत्नों पर सोवियत संघ के अग्रणी पत्रकारों तथा वरिष्ठ राजनैतिक विश्लेषकों के लेख प्रकाशित किये गये हैं।

नेहरू समय-समय पर पत्रिका के अनुरोध पर पाठकों के लिए बधाई-संदेश देते रहे हैं और भारत-सोवियत मैत्री सम्बन्धों के बारे में भारत सरकार के दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने के लिए इंटरव्यू देते रहे है।

यही कारण था कि नेहरू की मृत्यु का समाचार पाकर पत्रिका के सभी कर्मचारी शोक में डूब गये। पत्रिका की १९६४ की ११वीं संख्या के एक विशेष परिशिष्ट में जो शोक-सूचना प्रकाशित की गयी उसमें लिखा था, "श्री जवाहरलाल नेहरू के दुखद देहावसान से हम सबको गहरा धक्का लगा है। उनकी मृत्यु भारत के लिए और फिर पूरी दुनिया के लिए एक बड़ी हानि है। नेहरू के रूप में भारत ने एक महान् सपूत और प्रिय नेता खो दिया है। सोवियत संघ ने अपना एक अच्छा दोस्त खो दिया है और बाकी दुनिया ने एक महत्त्वपूर्ण राजनैतिज्ञ खो दिया है।"

भारत के महान् सपूत और सोवियत संघ के परम मित्र जवाहरलाल नेहरू की स्मृति को अक्षय बनाने के लिए 'सोवियतलैंड' ने १९६४ में "सोवियत-भारत मैत्री की दृढ़ता के लिए" एक कोष स्थापित किया। इस कोष से प्रति वर्ष सोवियत-भारत मैत्री तथा विश्व-शांति को समर्पित, सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक रचनाओं तथा पत्रकारिता पर जवाहरलाल नेहरू पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं। नेहरू पुरस्कार रूसी तथा सोवियत संघ की अन्य भाषाओं की क्लासकीय साहित्यिक रचनाओं के भारतीय भाषाओं में श्रेष्ठ अनुवादों पर भी दिये जाते है। इसके अतिरिक्त नेहरू पुरस्कार जन-नेताओं, कला के क्षेत्र के प्रमुख

व्यक्तियों, वैज्ञानिकों तथा अध्यापकों को भारत-सोवियत मैत्री को दृढ करने के लिए किये गये उनके प्रयत्नों पर भी प्रदान किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त बाल चित्रकला प्रतियोगिता के पाँच विजेता बच्चों को भी पुरस्कार दिये जाते हैं।

प्रत्येक वर्ष साहित्य तथा पत्रकारिता के प्रथम पुरस्कार विजेताओं को सोवियत संघ की दो सप्ताह की निःशुल्क यात्रा करायी जाती है और बाल चित्रकला प्रतियोगिता के विजेता पाँच भारतीय बच्चों को क्रीमिया के आरटेंक बाल अवकाश शिविर में बिना कुछ खर्च किये एक-एक मास की छुट्टी बिताने का अवसर दिया जाता है।

'सोवियतलैंड' द्वारा जवाहरलाल नेहरू पुरस्कारो की स्थापना की गयी तो शासकीय तथा जननेताओं और बुद्धिजीवियों द्वारा इसकी बहुत सराहना की गयी। इस अवसर पर बहुत से प्रमुख व्यक्तियों के जो संदेश प्राप्त हुए उनमें तत्कालीन राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन तथा प्रधानमंत्री लाल बहादुरशास्त्री के संदेश भी थे। भारत के राष्ट्रपति ने अपने संदेश मे कहा, 'मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि **सोवियतलैंड** भारतीय भाषाओं में भारत-सोवियत मैत्री को प्रोत्साहित करने वाली तथा विश्वशांति की पक्षधर साहित्यिक तथा पत्रकारिक रचनाओं पर स्वर्गीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की स्मृति में कई अच्छे पुरस्कार आरंभ कर रहा है।

"हम सोवियत संघ की मैत्री की कद्र करते हैं और मुझे पूर्ण विश्वास है कि **सोवियतलैंड** भारतीय विद्वानों को दिये जाने वाले जिन पुरस्कारों की घोषणा कर रहा है, वे निश्चय ही विभिन्न क्षेत्रों में हमारे दोनों देशों के बीच आपसी समझ-बूझ और सहयोग को बढ़ावा देंगे।"[१]

प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने अपने संदेश में कहा, "विश्वशांति जो कि पंडितजी को बहुत प्रिय थी, उस महान् लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में भारतीय तथा सोवियत जनता की मित्रता की निरन्तर प्रगति से बहुत अधिक सहायता मिली है। मैं पुरस्कार विजेताओं को अपनी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ भेजता हूँ।"[२]

नेहरू पुरस्कार समिति के अध्यक्ष, प्रख्यात जननेता के. पी. एस. मेनन ने अपने संदेश में पत्रिका के सम्पादकों की भावनाओ को बहुत संतुलित शब्दों में अभिव्यक्त किया, '**सोवियतलैंड**' इन पुरस्कारों को आरम्भ करके नेहरू की

१. सोवियतलैंड, १९६५, सख्या २४।
२. वही।

बहुमुखी प्रतिभा के एक पक्ष को अच्छी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है··· जवाहरलाल नेहरू के कवि, देश-भक्त तथा राजनीतिज्ञ विभिन्न पक्षों को एक-जुट करने वाले सूत्र को और पूरी दुनिया में शांति कायम करने तथा मनुष्य-मनुष्य और देश-देश को एक-दूसरे के निकट लाने के लिए भारत और सोवियत संघ की आपसी मैत्री के सूत्र को **सोवियतलैंड** ने बहुत सम्मानपूर्ण और शानदार स्वीकृति दी है।"[१]

उस अवसर पर इंदिरा गांधी ने अपने भाषण में दूसरी बहुत-सी बातों के साथ यह भी कहा, "वह (जवाहरलाल नेहरू—सं०) कई कारणों से सोवियत संघ की बहुत प्रशंसा करते थे। मूलत: तो इसलिए कि देश की जनता को एक नया जीवन देने के लिए सबसे पहले सोवियत संघ में ही इतना बड़ा अभियान चलाया गया; दूसरे इसलिए कि वहाँ नारी जाति के प्रति व्यवहार का एक नया मापदण्ड स्थापित किया गया और फिर वहाँ की वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति के लिए।" इसके बाद उन्होंने नेहरू की सोवियत यात्राओं और उनके एवज में सोवियत नेताओं की भारत यात्राओं की चर्चा करने के बाद कहा, "इससे दुनिया में एक नयी प्रक्रिया का आरम्भ हुआ।

"जवाहरलाल नेहरू विभिन्न देशों के बीच पुलों के निर्माण में विश्वास करते थे। **सोवियतलैंड** नेहरू पुरस्कार समिति की स्थापना नेहरू के उस काम को आगे बढ़ाना है। मुझे विश्वास है कि भविष्य में दोनों देशों के बीच ऐसे और भी बहुत से पुल बनाये जायेंगे।"[२]

अगले वर्ष जब कि इंदिरा गाधी अपने देश की प्रधान मंत्री बन चुकी थीं, उन्होने पुरस्कार विजेताओं के एक नये दल का स्वागत करते हुए भारत-सोवियत मैत्री के महत्त्व पर जोर दिया और कहा, "यह केवल दो देशों की सरकारों के बीच की मित्रता नहीं बल्कि दो पड़ोसी देशों की जनता की मित्रता है। यह मित्रता आपसी लेन-देन पर नहीं, बल्कि कुछ निश्चित सिद्धांतों पर आधारित है। यह मित्रता पूरी दुनिया के हित में है।"[३]

नेहरू पुरस्कार विजेताओं की सूची में ऐसे लेखक, कवि, पत्रकार तथा कलाकार सम्मिलित हैं जैसे सुमित्रानन्दन पंत, हरिवंशराय बच्चन, शंकर कुरुप, वी. एस. मेनन, कृष्णचन्दर, आर. के. करंजिया, पी. वी. गाडगिल,

१. सोवियतलैंड, १९६५, संख्या २४।

२. वही।

३. सोवियतलैंड, १९६५, सख्या २४।

एल. एन. भावे, विनोद करुणादिकर, वृन्दावनलाल वर्मा, मखदूम मोहिउद्दीन, अली सरदार जाफ़री, बनारसीदास चतुर्वेदी और दूसरे बहुत से लोग।

१९६७ में भारत सरकार ने सोवियत संघ के बुद्धिजीवियों—लेखकों, कवियों, पत्रकारों, चित्रकारों को, वैज्ञानिकों, जिन्होंने भारत-सोवियत मैत्री को दृढ़ बनाने और सोवियत जनता को भारत के इतिहास, संस्कृति तथा यहाँ की वर्तमान स्थिति से परिचित कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है, प्रतिवर्ष नेहरू पुरस्कार देने का निश्चय किया। सोवियत प्रधानमंत्री एलेक्सी कोसिगिन नेहरू पुरस्कार समिति के संरक्षक हैं।

कवि मायोजेलेतिस, चित्रकार वेसिली चुकोव, संगीतकार सरजेई बाला-सान्यान तथा वैज्ञानिक येवजेनी चेलीशेव नेहरू पुरस्कार पाने वाले बहुत से विजेताओं में से कुछ सुपरिचित नाम हैं। ये पुरस्कार उस महान् मानवतावादी, देशभक्त और विश्वशांति तथा दुनिया-भर के लोगों की खुशहाली के प्रहरी जवाहरलाल की स्मृति को अक्षय बनाये रखने के लिए दिये जाते है।

# चाचा नेहरू

नेहरू बच्चों के बहुत अच्छे मित्र थे। सोवियत बच्चे भी उन्हें उतना ही प्यार करते थे जितना कि नेहरू बच्चों को। नेहरू कहा करते थे कि उन्हें बच्चों से बातें करने और यहाँ तक कि उनके साथ खेलने का भी बहुत शौक है। उन्होंने कहा है कि जब वह बच्चों के बीच होते हैं तो अपनी उम्र भूल जाते हैं।

बच्चों के लिए उनके घर के दरवाजे सदा खुले थे। जब कभी भी समय मिलता, वह भारत के नन्हे नागरिकों को अपने यहाँ बुलाते। वह उनसे तरह-तरह की बातें करते। उन्हें सृष्टि के अनन्त सौन्दर्य के बारे में, देश-भक्ति के बारे में, विभिन्न देशो की मित्रता और भाईचारे के बारे में बताते। नेहरू बच्चों के जीवन को ज्यादा से ज्यादा खूबसूरत और खुशहाल बनाने के लिए जो कुछ कर सकते थे, उन्होंने किया।

नेहरू जब-जब शासकीय यात्राओं पर सोवियत संघ गये तो वहाँ के बच्चों ने बहुत उत्साह के साथ उनका स्वागत किया। नेहरू बाल भवनों में अथवा छोटे बच्चों के कैम्पों में जाते तो बच्चे फूलों से उनका स्वागत करते और गले में बाँधने का लाल रंग का रूमाल उनकी गर्दन के चारों तरफ लपेट देते। वे उन्हें आकर्षक खिलौने भेंट करते, सपनों में चाचा नेहरू को देखते और उन्हें बड़े प्यारे पत्र लिखते।

मास्को के बोर्डिंग स्कूल संख्या-१३ के छात्रों द्वारा नेहरू को १९५९ में लिखा गया एक अनोखा पत्र यहाँ प्रस्तुत है :

"प्रिय चाचा जवाहरलाल नेहरू,

यह पत्र सोवियत संघ के बच्चों के दल ने लिखा है। हमें मालूम है कि १४

नवम्बर को आप अपना जन्म-दिन मनायेंगे। इसीलिए हम यह पत्र भेज रहे हैं। अफसोस है कि इस अवसर पर आपको एक पुष्पहार भेंट करने के लिए हम भारत नहीं आ सकते। अधिक से अधिक हम जो कुछ कर सकते हैं, वह यही कि आपके स्वास्थ्य और हजार वर्ष की लम्बी उम्र की कामना करते हुए यह पत्र लिख रहे हैं।

"चाचा नेहरू, हालांकि हमें कभी भी आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ लेकिन हम प्रायः सोचते हैं कि वह दिन कब आयेगा, जब हम आपके साथ बैठकर विश्व-शांति और भारत के लोगों के जीवन के बारे में बातें करेंगे। हमारे अध्यापकों ने हमें बताया है कि आप भारत के लोगों के लिए और साथ ही पूरी दुनिया के लोगों के लिए शांति की व्यवस्था करने के महान् कार्य में मन-प्राण से लगे हैं। हमें मालूम है कि भारत में आपका जन्म-दिवस बाल-दिवस के रूप में मनाया जाता है।

"हम—सोवियत बच्चों ने इस अवसर पर आपको कुछ बहुत खूबसूरत भेंट देने का निश्चय किया है। हमारे स्कूल की प्रथम कक्षा की छात्रा ओल्पा फोमीचोवा ने एक रूमाल पर आपका नाम रेशमी धागों से काढ़ा है। इस काम में दस दिन लगे। उसने रूमाल पर आपका नाम हिन्दी अक्षरों में काढ़ा है। इस स्कूल में हम सब बच्चे हिंदी और उर्दू पढ़ रहे है। पाँचवीं और छठी कक्षाओ के बच्चे कुछ भारतीय भाषाओं को पढ़ने और लिखने लगे हैं लेकिन हममें सबसे छोटा बच्चा भी 'शान्ति' और 'मित्रता' शब्दों से परिचित है। सोवियत संघ में हर व्यक्ति 'हिन्दी-रूसी भाई-भाई!' शब्दों से परिचित है। लेकिन हमारे स्कूल के बच्चे भारत के बारे में दूसरे सोवियत बच्चों से अधिक जानते हैं, क्योंकि यह भारतीय भाषाओं का एक विशेष स्कूल है। यहाँ बहुत से विषय भारतीय भाषाओ के माध्यम से ही पढ़ाये जाते हैं। हम भारतीय भाषाओ के पाठों में बहुत दिलचस्पी लेते हैं और उससे भी ज्यादा दिलचस्पी 'बाल यात्रियों का भारत क्लब' में लेते हैं।

"हम भारत की परी-कथाओं और कविता को बहुत शौक से पढ़ते हैं, साथ ही प्राचीन भारत के बारे में लिखी गई कहानियो में भी हमारी बहुत दिलचस्पी है। हमारे अध्यापक ने बताया कि भिलाई कारखाने ने इस्पात का उत्पादन शुरू कर दिया है। इस पर हमने अपने अध्यापक से अनुरोध किया कि वह हमें तीन बार 'हुर्रा' करने की अनुमति दें। अध्यापक ने धीरे से हुर्रा करने की अनुमति दे दी, जिससे कि दूसरी कक्षाओं के बच्चों का ध्यान न बँटे! हमारी कोशिश के बावजूद दूसरी कक्षाओं के बच्चों ने हमारी आवाज सुनी और बाद में पूछा

कि किस शुभ अवसर के लिए 'हुर्रा' किया गया था।

"चाचा नेहरू, हम भारत के बारे में और अधिक जानने के लिए निरंतर प्रयत्न कर रहे हैं और जब कोई भी भारतीय हमारे स्कूल में आते है तो हमे बहुत खुशी होती है।

"प्रिय चाचा नेहरू, यह बहुत मजेदार बात हो कि अगर आप भी हमारे स्कूल को देखने के लिए आयें। जब आप आयेंगे तो हम आपको बहुत ही स्वादिष्ट केक और अपने स्कूल के बागीचे के सेब पेश करेंगे। हमे बताया गया है कि कुछ वर्ष पहले आप सोवियत संघ की यात्रा पर आये थे और हमसे बड़े छात्रों ने आपको देखा था। अफसोस ! उस समय हम बहुत ही छोटे थे। इस-लिए हम आशा करते हैं कि आप एक बार फिर हमारे देश की यात्रा पर और हमारे इस स्कूल में भी आयेंगे। अगर आप आये तो हमें बहुत ही खुशी होगी।

"अच्छा चाचा नेहरू, विदा। इस पत्र के साथ एक पार्सल भी आपको मिलेगा। इसमें कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्हें कि हम बच्चों ने आपके लिए अपने हाथों से तैयार किया है। एक बार फिर आपको हार्दिक बधाई और शुभ कामनाएँ।

"सादर, आपके सोवियत मित्र—

इरियाना सिमिनोबा, तात्याना, जोतिना व्याचेस्लेव युवको, वलेरी बुजि-नोब, आन्द्रेई नेमेदोव, अनान्ते कोनोव और आइगोर अगेयेव

मास्को के बोर्डिंग स्कूल नं० २३ के सभी छात्रों की ओर से।"

इस पत्र के लेखक तब से अब तक बड़े हो गये हैं और उन सभी के मन में नेहरू की मीठी यादें बसी हैं। उनके पत्र में नेहरू के प्रति सम्मान और प्रेम की जो भावना अभिव्यक्त हुई है वह निश्चय ही पूरे सोवियत देश के निवासियों की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करती है और उनके मन में नेहरू तथा उनके देश व निवासियों के प्रति जो प्रेम व आदर है, उसे अभिव्यक्त करती है।

# रामायण के प्रदर्शन के अवसर पर नेहरू

—गैनेडी पेचनिकोव

सोवियत संघ के एक प्रसिद्ध कलाकार, नेहरू पुरस्कार के विजेता। सम्प्रति मास्को की केन्द्रीय बाल नाट्य संस्था से सम्बद्ध। संस्था द्वारा १९६० में किये गये रामायण के पहले प्रदर्शन से अब तक राम का अभिनय करते रहे हैं और प्रदर्शन के निदेशक भी रहे हैं। जवाहरलाल नेहरू अपनी सोवियत यात्रा के दौरान इस प्रदर्शन को देखने गये तो उस समय की बहुत-सी मधुर यादें आज भी संस्था के सदस्यों के दिलों में है। १९७४ के साल में मास्को की बाल-नाट्य संस्था भारत की यात्रा पर आयी थी।

सितम्बर १९६१ में नेहरू मास्को में थे। ८ सितम्बर को हमें रामायण का मंचन प्रस्तुत करना था। उस दिन सुबह सवेरे हमें बताया गया कि श्रोताओं में स्वयं जवाहरलाल नेहरू भी रहेंगे। हमारे लिए यह विश्वास करना मुश्किल था कि एक इतना महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हमारे प्रदर्शन को देखने के लिए समय निकालेगा। असल में, हमें मालूम था कि उनके हर मिनट का कार्यक्रम पूर्व निश्चित है। इसके बावजूद हमें आशा बँध गयी कि वह अवश्य आयेंगे। हमें याद आया कि उन्होंने अपनी पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में 'रामायण' और 'महाभारत' दो महान् भारतीय महाकाव्यों के बारे में क्या लिखा है। नेहरू ने लिखा है कि इन दो महाग्रन्थों का भारतीय जनता के दिलों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है और आज भी ये दोनों ग्रन्थ भारतीय जनता की मानसिकता की संरचना के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। रामायण ने हम लोगों के मन में भारतीय संस्कृति के प्रति और साथ ही उसके इतिहास, सांस्कृतिक विरासत और जनता के प्रति गहरी दिलचस्पी पैदा की है। हमें विश्वास था कि रामायण के पात्र जो कि हर भारतीय को बचपन से ही प्रिय होते हैं, रूस जैसे भारत के मित्र देश में प्रस्तुत किये जायेंगे तो नेहरू को अवश्य ही आकर्षित करेंगे।

हम सब—अभिनेता, निर्देशक, रूपसज्जाकार तथा दर्शक व्यग्रतापूर्वक अपने विशेष अतिथि के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रदर्शन आरम्भ हुए।

थोड़ा ही समय हुआ था कि हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। हमने नेहरू को हाल में प्रवेश करते हुए देखा और तमाम दर्शकों ने उन्हें पहचान लिया।

मध्यान्तर में नेहरू नाट्यशाला के विशिष्ट कक्ष में पधारे। वहाँ भारत के सम्बन्ध में कुछ फोटोग्राफ लगाये गये थे। वहाँ बच्चों ने नेहरू को घेर लिया तो वह उनसे बहुत उत्साह के साथ मिले। कुछ मिनट तक उनसे बातें करते रहे और फिर उनके साथ फोटो खिंचवाये। उन्होंने दर्शक-पुस्तिका में हस्ताक्षर भी किये और अन्त में मंच के पीछे कम्पनी के कलाकारों से मिलने के लिए गये।

नेहरू धीरे-धीरे हमारी तरफ आ रहे थे और अभिनेताओं की तरफ बहुत गौर से देख रहे थे जैसे रामायण के पात्रों के साथ उनकी तुलना कर रहे हों। निकट आने पर उन्होंने बधाई दी और हमने उनके लिए जो मनोरंजन प्रस्तुत किया था, उसके लिए धन्यवाद दिया। मुझे उनका दृढ़ता से हाथ मिलाना, उनकी आँखों की स्नेहभरी चमक, उनके चेहरे पर सदा व्याप्त रहने वाली मधुर मुस्कान, उनके बटन के काज में लगा वह छोटा-सा गुलाब और उनकी सफेद टोपी—सभी कुछ बहुत अच्छी तरह याद हैं। हमने उनसे एक ग्रुप-फोटो खिंचवाने का अनुरोध किया। उन्होंने खुशी से स्वीकार कर लिया। वह सोफा पर बैठ गये और प्रदर्शन के बारे में अपनी राय देते रहे। हम सब सावधान थे और उनके मुख से प्रशंसा सुनकर बहुत प्रसन्न थे। तभी दूसरे भाग के शुरू होने का संकेत देने वाली तीसरी घण्टी बजी। नेहरू ने हम सबसे हाथ मिलाये और फिर मिलने का वादा करके अपने बाक्स की तरफ तेजी से चले गये। हम सबने जो कि दूसरे भाग में अभिनय कर रहे थे, अच्छे से अच्छा अभिनय करने का प्रयत्न किया। हमें लग रहा था कि आज पूरा भारत, उसका इतिहास और उसकी जनता हमें देख रही है।

हमारे थियेटर में आने से पहले नेहरू बहुत से शासकीय कार्यक्रमों में सम्मिलित हो चुके थे और उससे थक गये थे। इसलिए उन्होंने थोड़े आराम और मनोरंजन के खयाल से हमारा प्रदर्शन देखने की अनुमति दी थी। थियेटर के कलाकारों और दर्शकों से मिलकर और अभिनेताओं का उत्साहपूर्ण अभिनय देखकर नेहरू सचमुच बहुत प्रसन्न थे।

मुझे विश्वास है कि नेहरू ने बाल-नाट्य संस्था के रामायण के प्रदर्शन को देखने की अनुमति बच्चों के प्रति अपने स्वाभाविक प्रेम के कारण भी दी होगी। सितम्बर की उस शाम हम सब कलाकार तथा दर्शक इस सचाई को बार-बार अनुभव करते रहे।

नेहरू के जन्म-दिवस १४ नवम्बर, को जो कि भारत में बाल-दिवस के रूप में मनाया जाता है, मास्को के केन्द्रीय नाट्य-संस्थान में रामायण का प्रदर्शन हुआ। नवम्बर १९७१ में हमारी कम्पनी ने रामायण का १५०वाँ प्रदर्शन प्रस्तुत किया।

बहुत समय नहीं बीता जबकि केन्द्रीय बाल-नाट्य संस्थान ने निकोलाई आस्त्रोवस्की के उपन्यास 'हाउ द स्टील वाज टैम्पर्ड' के इसी नाम के नाट्य-रूपान्तर का रिहर्सल पूरा किया। इस नाटक के मंच-निर्देश देते समय मुझे अक्सर नेहरू की याद आयी। कारण यह कि नेहरू ने अपनी पुस्तक 'भारत की कहानी' का समापन मनुष्य जीवन के वास्तविक अर्थ के बारे में आस्त्रोवस्की की प्रसिद्ध उक्ति से किया है : " मनुष्य के पास सबसे मूल्यवान चीज उसका जीवन है। यह जीवन क्योंकि केवल एक बार जीने के लिए उसे मिला है, इसलिए इसे इस तरह जीना चाहिए कि कायरतापूर्ण तुच्छ भूतकाल की शर्म के मारे वह कठोर न हो जाये, इस तरह जीना चाहिए कि वह बरसों तक बेमकसद यातना न झेलता रहे, इस तरह जीना चाहिए कि मरते समय वह कह सके, 'मेरा पूरा जीवन और पूरी शक्ति दुनिया के सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य 'मनुष्य मात्र की मुक्ति' को समर्पित रहे हैं।'"

मेरे विचार से यह सिद्ध करता है कि नेहरू हमारे समय को कितनी बारीकी से समझते थे, भविष्य को परखने की उनमें कितनी अद्भुत क्षमता थी और सोवियत साहित्य के वे कितने अच्छे पारखी और प्रशंसक थे। इससे यह भी प्रकट है कि नेहरू ने सोवियत साहित्य के नायकों से प्रेरणा ग्रहण की और वह भारत की नयी पीढ़ी को सचेत करने के प्रति किसी हद तक जागरूक थे। इसीलिए उन्होंने सोवियत लेखकों के उपन्यासों के पात्रों के प्रेरक उदाहरणों की ओर संकेत किया।

मुझे १९७४ में तुलसीकृत रामायण की ४००वीं वर्षगाँठ के अवसर पर आयोजित समारोहों में भाग लेने के लिए 'इंडियन काउन्सिल फार कल्चरल रिलेशन्स' के निमन्त्रण पर भारत की यात्रा का सौभाग्य मिला। सबसे पहले मैं नेहरू संग्रहालय देखने गया। वहाँ मैंने दर्शकों की पुस्तिका में लिखा कि मास्को के केन्द्रीय बाल नाट्य-संस्थान के कलाकार तथा अन्य कर्मचारी नेहरू को सदा याद रखेंगे, क्योंकि हम जब भी रामायण का प्रदर्शन प्रस्तुत करते हैं तो हमें उस समय की मधुर स्मृतियाँ घेर लेती हैं, जब कि नेहरू हमारे संस्थान को देखने आये थे।

# नेहरू ने अपना वादा पूरा किया

मिरजा मखमुतोव

तातार स्वायत्तता प्राप्त सोवियत समाजवादी गणतन्त्र के शिक्षा मन्त्री। मिरजा मखमुतोब ने १९६१ मे अध्यापक संघ के जबलपुर में आयोजित अधिवेशन में भाग लिया।

हम भारत के विभिन्न दर्शनीय स्थानो के दौरे से वापस दिल्ली लौटे थे कि हमे सोवियत दूतावास के एक अधिकारी ने बताया कि प्रधान मन्त्री नेहरू सोवियत संघ में राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों के लिए शिक्षा सुविधाओं के विस्तार के बारे में, विशेष रूप से संघ तथा स्वायत्तता प्राप्त गणतन्त्रों में रूसी तथा अन्य राष्ट्रीय भाषाओं की शिक्षा के बारे में और विभिन्न राष्ट्रीयताओं के बीच संचार के माध्यम के रूप में भाषा को योगदान के बारे में दिलचस्पी रखते हैं। यही कारण है कि वे सोवियत शिक्षाविदों के प्रतिनिधि मंडल से मिलना चाहते हैं।

हम निश्चित समय पर नेहरू के निवास-स्थान पर पहुँचे। हम छः व्यक्ति यानि पूरा सोवियत प्रतिनिधि मंडल वहाँ था। नेहरू हमे अपने अध्ययन कक्ष के दरवाजे पर ही मिल गये। उन्होने हमारा हार्दिक स्वागत किया और सबसे अलग-अलग हाथ मिलाये। इस अवसर पर भारत में सोवियत संघ के राजदूत आई० ए० बेनेदिक्तोव भी उपस्थित थे। मैं दुनिया के सबसे बड़े राष्ट्रों में से एक के प्रधान मन्त्री और दुनिया के सर्वाधिक प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक के साथ मिलने के लिए अत्यधिक उत्सुक और उत्तेजित था। संसार में कुछ लोग होते हैं, जिनका व्यक्तित्व इतना प्रभावपूर्ण होता है कि लगता है जैसे उनमें से एक आन्तरिक प्रकाश फूट रहा है। नेहरू भी उन्ही व्यक्तियों में से एक थे। उनसे जो भी व्यक्ति मिलता, वह उनकी मुख मुद्राओं, धीमी आवाज, जादू-भरी मुस्कान और उनके सम्पूर्ण व्यवहार से प्रभावित हुए बिना न रहता और उसके मन में नेहरू के प्रति गहरी श्रद्धा उत्पन्न हो जाती।

उन दिनों शायद शासन का काम अधिक बढ़ा हुआ था—प्रधान मन्त्री कुछ थके हुए से दिखायी दिये।

नेहरू को बताया गया था कि हम लोगों में ताशकन्द की एक अध्यापिका रोनो कायुमोवा भी है। वह उज़बेक के स्कूली बच्चों की कई हिन्दी पाठ्य-

पुस्तकों की सह-लेखिका हैं। हमने नेहरू को हिन्दी अक्षर-ज्ञान की दो पुस्तकें भेंट की थीं। नेहरू ने उन पुस्तकों को बहुत गौर से देखा और कहा कि भारत को एक ऐसी भाषा की बहुत बड़ी आवश्यकता है, जिसके द्वारा विभिन्न भाषा-भाषी जनता के बीच सम्पर्क स्थापित किया जा सके। उन्होंने कहा कि अगर वे तमाम भारतीय स्कूलों में हिन्दी की पढ़ाई की व्यवस्था कर सकें तो यह एक उपलब्धि होगी। दुर्भाग्य से हमारे देश में कुछ ऐसे लोग हैं, जो हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार करने में हिचकते है लेकिन मुझे विश्वास है कि देश की बहुभाषी जनता के हितो को ध्यान में रखते हुए, वे लोग बाद में हिन्दी के प्रति अपने रुख परिवर्तन कर लेंगे।

सोवियत राजदूत ने नेहरू को बताया कि हमारे प्रतिनिधि मंडल में एक प्रतिनिधि तातार स्वायत्तता प्राप्त गणतन्त्र का भी है। नेहरू ने मुझसे हमारे गणतन्त्र की स्कूली शिक्षा के बारे में बहुत-से सवाल पूछे। साथ ही यह भी पूछा कि मैंने अंग्रेजी कहाँ सीखी—मास्को में या कजान में ? मैने उत्तर दिया कि मैंने अंग्रेजी मास्को में पढ़ी है। तब मैंने प्रधान मन्त्री को बताया कि मेरे पास कजान की एक स्कूली लड़की का पत्र है। मैने कहा, "जब आप जून १९५५ में अपनी बेटी के साथ कज़ान गये तो हवाई अड्डे पर आपका स्वागत करने वालों में एक स्कूली लड़की भी थी। उसने फूलों से आपका स्वागत किया था। अब उस लड़की ने मुझसे कहा कि मै उसकी शुभकामनाएँ आप तक पहुँचा दूँ और आपसे कहूँ कि उसके लिए भारत में एक अच्छा पैन-फ्रैंड तलाश करने में उसकी सहायता करें।

नेहरू मुस्कराये और तभी उन्होंने अपने एक सहायक को आदेश दिया कि इस अनुरोध पर तुरन्त गौर की जाए। उन्होंने कहा, "यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण अनुरोध है। हमारे दोनों देशों के नन्हे नागरिक हमारी मित्रता को बहुत दृढ़ कर सकते हैं।"

नेहरू कुछ क्षण सोचने-समझने के लिए रुके और फिर उन्होंने हाथी-दाँत का एक छोटा-सा टुकड़ा उठाया, जिस पर कि अशोक के शान्ति-संदेश खुदे हुए थे। नेहरू ने वह टुकड़ा मुझे दिया और कहा, "कृपया इसे अपने नगर के नन्हे नागरिक तक पहुँचा दीजिए।"

बातचीत समाप्त होने पर हम लोगों ने नेहरू के साथ एक सम्मिलित फोटो-ग्राफ खिचवाया। इसके बाद नेहरू हमें दरवाजे तक छोड़ने आये और उन्होंने हम सबको बिदाई दी।

मैं नेहरू के साथ हुई इस स्मरणीय भेंट को कभी नहीं भूलूँगा। वह हाथी-

दाँत का टुकड़ा अब कज़ान के एक संग्रहालय मे है। नेहरू अपने वायदे को नही भूले और अब एक भारतीय छात्र तथा उपरोक्त तातार लड़की में नियमित पत्र-व्यवहार हो रहा है।

# सोवियत संघ में नेहरू की रचनाओं का प्रकाशन

पूरे सोवियत संघ मे नेहरू की रचनाओं को बहुत दिलचस्पी के साथ पढ़ा जाता है। कुछ अपवादों को छोड़कर उनकी प्रायः सभी रचनाएँ रूसी भाषा में अनूदित हैं और बहुत बड़े संस्करणों में प्रकाशित हो चुकी हैं।

## भारत की कहानी

१९५५ में इनोस्त्रान्ताया लितरेचर प्रकाशन ने नेहरू की भारत की कहानी का प्रकाशन किया।

इसके रूसी संस्करण की भूमिका में नेहरू ने अपनी सोवियत संघ की यात्रा से कुछ ही समय पहले दिल्ली में २८ मई १९५५ को लिखा, "मुझे प्रसन्नता है कि मेरी पुस्तक 'भारत की कहानी' का रूसी भाषा में अनुवाद किया जा रहा है। यह पुस्तक बारह वर्ष पहले उस समय लिखी गयी थी जब कि मै जेल में था और युद्ध दुनिया के एक बड़े भूभाग में पंजे फैलाये था। इससे मेरी उस वक्त की मनःस्थिति और विचारों का पता चलता है।

"पिछले दस वर्षों में दुनिया मे बहुत बड़े परिवर्तन हुए हैं और इस शताब्दी के पाँचवें दशक के आरम्भिक वर्षों के मुकाबले हम बहुत आगे निकल आये है। लेकिन पुस्तक मुख्य रूप से भारत के भूतकाल से सम्बन्धित है और संभवतः इस प्राचीन देश की पृष्ठभूमि को समझने मे किंचित् सहायक हो सकती है। शायद यह उन घटनाओं को समझने में भी कुछ सहायक हो जिनका प्रभाव भारत की आज की पीढ़ी पर पड़ रहा है।

"कुछ ही दिनों में, आशा है, मुझे इस महान् देश—सोवियत संघ—की यात्रा करने का सौभाग्य मिलेगा। जिस देश के बारे में मै इतना कुछ पढ़ता रहा हूँ उसे अपनी आँखों से देखने और उन शक्तियों को किसी हद तक समझने का मौका मिलेगा, जो कि संसार को व्यापक रूप से प्रभावित करने वाले इस विराट तथा महान देश के निर्माण में संलग्न रही हैं। मेरे लिए यह विशेष प्रसन्नता की बात है कि यह पुस्तक जो कि मेरे कारावास जीवन के एकान्त क्षणों की उपलब्धि है, अब रूसी भाषा में प्रकाशित होने जा रही है।"[1]

## मेरी आत्मकथा

उसी वर्ष १९५५ में सोवियत संघ में नेहरू की आत्मकथा का प्रकाशन भी किया गया। सोवियत संस्करण की भूमिका में नेहरू ने लिखा :

"लगभग छः मास पूर्व मैंने अपनी पुस्तक 'भारत की कहानी' के रूसी अनुवाद की भूमिका लिखी थी। उस भूमिका को लिखने के कुछ ही समय बाद मुझे सोवियत संघ की यात्रा का सुअवसर मिला। मै पन्द्रह दिन वहाँ रहा। इस अवधि में उस महान देश और उसकी महान जनता का बहुत ही गहरा प्रभाव मेरे मन पर पड़ा। मेरी यात्रा यद्यपि संक्षिप्त थी, फिर भी इसके द्वारा मैं सोवियत संघ की महान प्रगति और वहाँ की जनता की आत्मीयता, प्रेम और शांतिप्रियता के बारे में काफी कुछ जान-समझ सका। उस यात्रा की याद बहुत दिनों तक मेरे साथ रहेगी।

"यह देखकर मुझे बहुत खुशी हुई कि मेरी पुस्तक का सोवियत संघ में स्वागत हुआ है और उसे बहुत लोगो ने पढ़ा है। यह जानकर मुझे स्वाभाविक रूप से एक लेखक का गर्व अनुभव हुआ। लेकिन साथ ही यह आशा भी बँधी कि इससे रूसी लोगों को भारत को और अच्छी तरह समझने में सहायता मिलेगी।

"अब मुझे दूसरी पुस्तक 'आत्मकथा' के रूसी अनुवाद की भूमिका लिखने के लिए कहा गया है। मैं प्रसन्नतापूर्वक इसे स्वीकार करता हूँ। लेकिन यह स्पष्ट कर देना आवश्यक समझता हूँ कि यह आत्मकथा मैने अब से बीस वर्ष पहले लिखी थी। दूसरी पुस्तक की तरह यह भी जेल में लिखी गयी थी। पुस्तक में कुछ तत्कालीन सामयिक महत्त्व के विषयों पर लिखा गया है, जो शायद आज उतना महत्त्व नहीं रखते। लेकिन इससे तत्कालीन भारत की और विशेष रूप से स्वाधीनता संघर्ष में जूझ रहे लोगों की मानसिक संरचना को समझने में

१. सोवियतलैंड, १९५५, सं० १२।

मदद जरूर मिलती है।

"उस समय से अब तक बहुत-सी घटनाएँ घट चुकी हैं और इस घटना-प्रवाह मे स्वाभाविक रूप से हम में से बहुत से लोग आगे बढ़ गये हैं या बदल गये हैं।

"मुझे आशा है कि यह पुस्तक भी सोवियत तथा भारतीय जनता के बीच गहरी सूझ-बूझ और आत्मीयता स्थापित करने में सहायक होगी।"

## इंडियाज़ फ़ारेन पॉलिसी

सोवियत संघ में 'भारत की कहानी' तथा 'आत्म कथा' के प्रकाशन के दस वर्ष बाद मास्को के प्रोग्रेस पब्लिशर्स ने नेहरू के भाषणों का एक संकलन प्रकाशित किया। उनके ये भाषण १९४६ तथा १९६४ के बीच अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में, संयुक्त राष्ट्र संघ की जनरल असेम्बली के अधिवेशनों में, भारतीय संसद में और उनकी सोवियत संघ तथा अन्य देशों की यात्राओं के दौरान दिये गये थे।

## विश्व इतिहास की झलक

मास्को के नौका पब्लिशर्स ने नेहरू की प्रसिद्ध पुस्तक 'ग्लिपसिज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री' का रूसी अनुवाद तैयार करा लिया है और यह शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है। निःसन्देह यह महत्त्वपूर्ण प्रकाशन न केवल भारत के विषय में अध्ययन करने वाले सोवियत छात्रों में बल्कि सोवियत जनता के सामान्य पाठकों मे भी दिलचस्पी के साथ पढ़ा जाएगा।

# जनता की स्मृति में नेहरू का नाम अमर है

भारत के स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद सोवियत संघ के विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्ति निरंतर भारत आते रहे हैं। सोवियत संघ के बुद्धिजीवी एक के बाद एक यहाँ आते रहे हैं। यहाँ से लौटने के बाद वे अपनी रचनाओं में नये भारत के विभिन्न पक्षों—उसकी सांस्कृतिक विरासत और वहाँ के लोगों की स्वतंत्रता तथा खुशहाली का जीवन बिताने की आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करते रहे हैं। सोवियत संघ में ये रचनाएँ सुपरिचित हैं।

## नेहरू और सोवियत चित्रकार

सोवियत चित्रकार जो कि समय-समय पर नेहरू से मिले, उन्होंने भारत की महान जनता की भावनाओं, उसकी सूझ-बूझ और मानवीयता के साकार रूप में नेहरू को देखा। यही कारण है कि नेहरू ने बहुत बार सोवियत चित्रकारों को प्रेरित किया।

जिन सोवियत चित्रकारों ने नेहरू के चित्र बनाये, उनमें अलेक्जेंडर जेरासिमोव और कोंसटेशियन फिनोजेनोव जैसे प्रसिद्ध पोर्ट्रेट-चित्रकार भी सम्मिलित है। उपरोक्त दोनों चित्रकारों ने भारत में ही नेहरू के चित्र बनाये।

बाद में अपनी पुस्तक 'एक चित्रकार का जीवन', जो कि १९६३ में प्रकाशित हुई, में अलेक्जेंडर जेरासिमोव (१८८१-१९६३) ने लिखा कि भारत में एक चित्रकार के लिए विषयों का एक अपरिमित स्रोत है, इसलिए मुझे अपने को भारतीय जनता के विशिष्ट प्रतिनिधियों के पोर्ट्रेटों की एक शृंखला तक ही सीमित रखना पड़ा। जेरासिमोव आगे लिखते हैं कि शासकीय कार्यों

में व्यस्त रहने के कारण नेहरू को दो बार पोर्ट्रेट के लिए बैठने के कार्यक्रम को रद्द कर देना पड़ा। अपनी भारत यात्रा की समाप्ति से पहले किसी तरह जेरासिमोव ने नेहरू का पोर्ट्रेट पूरा कर ही लिया और बाद में उसे उन्हें भेंट कर दिया। सोवियत संघ वापस आने पर जेरासिमोव तथा फिनोजेनोव ने नेहरू के उस व्यवहार की बहुत प्रशंसा की जो कि उन्होंने चित्रकारों के काम के दौरान उन्हें दिया।

अन्य सोवियत चित्रकारो ने नेहरू के पोर्ट्रेट उनकी सोवियत संघ की यात्रा के दौरान बनाये। उनमे से कुछ स्मृति से और कुछ फोटोग्राफ की सहायता से विभिन्न शैलियों में बनाये गये थे। सेरवो तथा खनिन के पोर्ट्रेट तैल चित्रों के रूप में है तो कुछ दूसरे चित्रकारों ने जल रंगों तथा अन्य तकनीकों का प्रयोग किया है।

## मित्रता के फूल

१९७४ के बसंत में 'द मास्को हाउस ऑफ फ्रेंडशिप' ने दूसरे देशों के व्यक्तियों के साथ सुविख्यात सोवियत पुष्प विशेषज्ञ लियोनिद कोलेस्निकोव को श्रद्धांजलि अर्पित करने के उद्देश्य से एक सभा का आयोजन किया। इस सभा में उनकी पुत्री को 'इंटरनेशनल सोसायटी ऑफ लिलक ग्रोवर्स' द्वारा संचालित पुरस्कार 'द गोल्डन लिलक ब्रांच' प्रदान किया गया।

लियोनिद कोलेस्निकोव ने अपने जीवन काल में लिलक की ३०० किस्में विकसित की थीं। उनमें से बहुत-सी किस्में अब बल्गेरिया, कनाडा, पोलैंड, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, चेकोस्लोवाकिया, ब्रिटेन, फ्रांस और हालैंड में उगायी जा रही हैं।

कोलेस्निकोव ने सबसे पहले १९१६ में लिलक के दो पौधे लगाये। बाद में जबकि वह अपने लिलक के बगीचे में और कुछ किस्में शामिल कर चुके थे तो उन्होंने इसे राष्ट्र को भेंट में देने का निश्चय किया। आज उनके लिलक दुनिया के हर भाग में खिलते हुए पाये जा सकते हैं। संयोग से इनमे से कुछ के नाम भारतीय हैं।

१९५० के बसन्त में लिलक की एक कली गहरे बैंजनी रंग के फूल के रूप में खिली तो लियोनिद कोलेस्निकोव ने उसे नाम दिया 'इंडिया'। कोलेस्निकोव भारत को हमेशा स्नेह तथा सम्मान के साथ याद करते थे।

१९५५ में नेहरू की सोवियत संघ की यात्रा के दौरान लिलक के पौधों पर हल्के बैंजनी रंग के फूल खिले हुए थे तो कोलेस्निकोव ने उन्हें नाम दिया

'जवाहरलाल नेहरू'।

## अनाज के दानों से बना नेहरू का चित्र

काकेशस प्रान्त के ओर्दझोनिकिद्ज नामक स्थान के इगनेति अल्दातोव ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने कि अनाज के दानों से नेहरू का चित्र बनाया। अल्दातोव ने इस अनोखी शैली में चित्र बनाकर उसे अच्छी तरह पैक किया और मास्को स्थित भारतीय दूतावास को भेज दिया। यह घटना १९५८ की है। चित्र भेजने के कुछ ही दिन बाद अल्दातोव को नेहरू का एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था :

"प्रिय मित्र,

मास्को में हमारे राजदूत ने आपका पत्र और आपके द्वारा बनाया गया चित्र मुझे भेजा है। मेरे विचार में यह अच्छा चित्र है और इसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ।

मैं आपकी इस भेंट के लिए आभारी हूँ और उससे भी ज्यादा आभारी हूँ आपके उन भावों के लिए, जो कि आपने अपने पत्र में शान्ति के बारे में प्रकट किये हैं।

शुभकामनाओं सहित,

आपका

जवाहरलाल नेहरू"

## राजपथ

इस नाम का चित्र एक शौकिया चित्रकार और भारतीय अध्ययन-विशेषज्ञ एस० आई० पोटेबैन्को ने बनाया है। पोटेबैन्को का कहना है, "यह चित्र मेरे लिए विशेष महत्त्व रखता है। मेरे खयाल में हर कलाकार को अपनी रचनाओं में से कुछ विशेष प्रिय होती हैं। मैंने भारत में जितने भी चित्र बनाये, उन सबमें यह मेरे लिए विशेष महत्त्व का है। १९६३ के भारतीय गणतन्त्र दिवस की वह सुनहरी सुबह मुझे सदा याद रहेगी और याद रहेंगे राजपथ पर भारत के राष्ट्रपति के आगमन की प्रतीक्षा करते हुए, सफेद शेरवानी पहने नेहरू, उनका युवकोचित फुर्तीला व्यक्तित्व, उनकी गौरवपूर्ण मुख-मुद्रा और उल्लास-भरे उत्सव की कार्यवाही।

कुछ व्यक्तियों के जीवन की तुलना चमकदार सितारों से की जा सकती है। खगोलशास्त्री बताते हैं कि कुछ चमकदार सितारे जब समाप्त हो जाते

हैं, उसके बाद काफी समय तक उनका प्रकाश पृथ्वी पर आता रहता है । नेरूह का जीवन भी एक ऐसे सितारे का जीवन ही था ।

## नेहरू शिखर

तियान शान पर्वत शृंखला में एक ऊँचे शिखर का नाम जवाहरलाल नेहरू शिखर है । मास्को के बौमान हायर टैक्निकल स्कूल के एक पर्वतारोही दल ने समुद्री सतह से ६,७४२ मीटर ऊँचे इस शिखर को महान भारतीय नेता का नाम दिया था । इस दल मे वी. इवानोव, ए. ओवचिन्निकोव, ओ. गालकिन, एल. डोबरोवोलस्की, वी. मैक्सिनोव, वाई-कुसोव, इ. मायस्लोवस्की तथा वी. पुतरिन नामक आठ सदस्य थे । इस पर्वतारोही दल ने १५ अगस्त १९७० को नेहरू शिखर पर चढ़ने में सफलता प्राप्त की । मार्ग बहुत कठिन था । उन्हें लम्बे समय तक केवल बर्फ पर ही चलना पड़ा । अक्सर रस्सों के सहारे चढ़ना पड़ा । रस्से पर चढ़ते समय वे किसी भी क्षण गिर सकते थे । भयंकर तूफानों का मुकाबला करते हुए और जीवन तथा मृत्यु के बीच संघर्ष करते हुए वे एक के बाद एक दुर्गम चट्टानो पर विजय प्राप्त करते चले गये ।

१९७२ में नेहरू शिखर पर चढने का एक और प्रयत्न हुआ । इस बार वी. ग्लुवोव और वी. बाबरोव, बी. सौस्टिन, वी. जैस्तस्की और वी. पैट्रक नामक पाँच पर्वतारोहियों के दल ने नेहरू शिखर पर चढ़ते समय पूरे आठ दिन वहाँ के तूफानी मौसम में व्यतीत किये । उन आठ दिनों में बर्फ निरन्तर ढलानों पर से फिसलती रही और ३०° सी तापमान में पर्वतारोहियो की हड्डियाँ तक जम गयी, लेकिन उन्होने हिम्मत नहीं हारी और बराबर आगे बढ़ते गये । आखिर १५ अगस्त १९७२ को उन्होंने नेहरू शिखर पर पहुँचने मे सफलता प्राप्त कर ही ली ।

## नेहरू की स्मृति में डाक-टिकट

मई १९६४ के अन्त में जबकि पूरे सोवियत संघ में नेहरू की मृत्यु का शोक मनाने के लिए सभाएँ हो रही थीं तो वहाँ के संचार मन्त्रालय ने नेहरू की स्मृति में एक डाक टिकट जारी किया । उसकी लाखों प्रतियाँ तुरन्त ही बिक गयीं ।

डाक टिकट पर छपे चित्र के चित्रकार सरजेई सोकोलोव का कहना है, "मैंने नेहरू को सबसे पहले १९६१ में उनकी मास्को यात्रा के दौरान देखा । मैंने उनका एक पूरा बड़ा चित्र बनाने के उद्देश्य से बहुत-से स्केच बनाये ।

मुझे प्रसन्नता है कि भारतीय जनता और उसके प्रिय नेता के प्रति सोवियत लोगों के मन में जो प्रेम की भावना है, उसे मेरे डाक टिकट के माध्यम से अभिव्यक्ति लेने का अवसर मिला है।

## तुर्कमान के कालीन बुनने वालों की एक कलाकृति

एक पुरानी तुर्कमानी कहावत है, "तुम अपना कालीन खोलो, मै तुम्हारी आत्मा को पहचान लूँगा।" अश्खाबादा के कालीन बनाने के कारखाने के डिजाइनर द्जुयार रदनिलोव ने कालीन बुनने वाले कर्मचारी नबात मुखमेदोवा तथा अविनूर कोचुमोवा के साथ मिलकर कालीन में जवाहरलाल नेहरू का एक चित्र बुना है, जो कि कालीन-कला का एक अच्छा उदाहरण है। यह कालीन तुर्कमान सरकार द्वारा भारत सरकार को भेंटस्वरूप देने के लिए एक जल्दी के आर्डर पर तैयार किया गया।

नबात का कथन है, 'नेहरू सोवियत संघ के बहुत अच्छे मित्र थे। अपनी सोवियत यात्रा के दौरान वह देश-दर्शन के लिए निकले तो हमारे नगर में भी आये थे। यहाँ वे जिस मकान में ठहराये गये अब उसका नाम 'नेहरू हाउस' ही है। नेहरू सदा हमारी याद में बसे रहेंगे।

नेहरू की मृत्यु से सोवियत जनता को गहरा धक्का लगा। शहरों में और गाँवों मे, कारखानों में और स्कूलो मे—हर जगह शोक-सभाएँ हुई। भारत के उस महान सपूत और सोवियत संघ के महान मित्र नेहरू की मधुर याद सोवियत लोगों के दिलो मे हमेशा ताजा रहेगी।